चमत्कारी मंत्र साधना



तांत्रिक बहल

साधकों के लिए उत्कृष्ट और उपयोगी जानकारी

10-3

चमत्कारी मन्त्र साधना

मन्त्रों का अपना एक अलग विज्ञान है, जिसके सम्पूर्ण रहस्यों को समझ पाना सरल नहीं है। तान्त्रिक बहल नें अपने एक विशेष अनुभव कि मन्त्र न केवल ध्वनि विज्ञान है वरन् उच्चारण के समय होनें वाली शारीरिक क्रियाओं से जो लघ व्यायाम होता है, वह भी एक अलौकिक क्रिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की रचना की है। इसके अतिरिक्त अन्य कई चमत्कारी साधनायें भी इस पुस्तक में दी गई हैं। कौआ तन्त्र, मन्त्र तथा उलूक तन्त्र-मन्त्र इस संस्करण की एक विशेष उपलब्धि है।

तांत्रिक बहल की अन्य चर्चित पुस्तकें

१. वेदों में तन्त्र
२. वनस्पति तन्त्र
३. सुगम तान्त्रिक क्रियायें
४. चाणक्य विरचित—तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र
५. रत्न और रुद्राक्ष
६. पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ
७. लाटरी ज्योतिष
८. सचित्र शरीर लक्षण विज्ञान
९. सुखी जीवन के लिए टोटके और मन्त्र
१०. सौन्दर्य लहरी
११. तन्त्र द्वारा रोग निवारण
१२. पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें
१३. गोरख तन्त्र
१४. मुस्लिम तन्त्र
१५. मृत आत्माओं से सम्पर्क
१६. मन्त्र साधना कैसे करें
१७. तन्त्र साधना कैसे करें
१८. आपका राशिफल और लाटरी गाइड
१९. नाग और नागमणि
२०. तन्त्र के अचूक प्रयोग
२१. हस्तरेखायें देखना कैसे सीखें
२२. हस्त रेखाओं के गूढ़ रहस्य

।प्रकाशक ।
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

चमत्कारी
मंत्र-साधना

शब्द ही ब्रह्म है अर्थात् नाद सर्वोपरि शक्ति है। इसी 'नाद' और मन्त्रों की शक्ति से सुख-शान्ति और सभी प्रकार का लाभ, स्वास्थ्य और निरोग पाने के उपायों सहित। क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा का वास होता है।

लेखक—
तांत्रिक बहल

मूल्य : २५.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (२४९४०१)

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे,

हरिद्वार-२४९४०१

दूरभाष : (०१३३) ४२६२९७

वितरक :

१. रणधीर बुक सेल्स (शोरूम)
रेलवे रोड (डाकखाने के समीप) हरिद्वार उ० प्र०

२. पुस्तक संसार, बड़ा बाजार, हरिद्वार

३. पुस्तक संसार, १६८-१६९, नुमायश का मैदान,
जम्मू-१८०००१

४. गगनदीप पुस्तक भण्डार, एस० एन० नगर, हरिद्वार

लेखक : तांत्रिक बहल

संस्करण : प्रथम १९९१
द्वितीय १९९३
तृतीय १९९५

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक :

सुरेन्द्र प्रिंटर्स

४/१२३, बगीची गली, विश्वास नगर,

शाहदरा, दिल्ली-३२

लेखकीय

मन्त्र विद्या पर और मन्त्र संग्रहों पर अनगिनत पुस्तकें प्रकाशित हैं। उसका क्या महत्व है, यह मैं नहीं जानता, पर इस प्रकार की पुस्तकों का नितान्त अभाव है, जो ध्वनि विज्ञान और स्वर विज्ञान पर आधारित हो। शब्द ही 'ब्रह्म' कहा गया है अर्थात् शब्द और नाद सर्वोपरि शक्ति है। सर्वोपरि शक्ति होने के कारण इसके द्वारा सब कुछ पाया जा सकता है। ओं की शक्ति से भला कौन साधक अपरिचित है ? कभी सोचा है, क्या कारण है कि मन्त्रों के द्वारा सुख शान्ति और सभी प्रकार का लाभ, स्वास्थ्य और निरोग शरीर प्राप्त होता है। यह कथन अकारण नहीं हो सकता—स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। ध्वनि के द्वारा इस प्रकार की क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं और उच्चारण के समय जो शारीरिक व्यायाम (स्वर व्यायाम) होता है, उसके ही कारण ऐसा होता है।

इस सिद्धान्त पर कौन मन्त्र, किस कसौटी पर खरा उतरता है, उसको अच्छी प्रकार जाने बिना मन्त्रों का संग्रह, संकलन करना अनर्थ है। ऐसे ही अनर्थकारी संग्रह बहुतायत से देखने में आ रहे हैं। इनकी विडम्बना यह है कि एक यन्त्र का विज्ञान तथा स्वर व्यायाम दूसरे मन्त्र का विज्ञान, स्वर व्यायाम निष्क्रिय कर डालता है। अनुसरण करने वाले इसी कारण मनोवांछित फल प्राप्त नहीं कर पाते हैं और जन साधारण में ढकोसला ही प्रमाणित हो रहे हैं।

इसी व्यवस्था को सुमार्ग पर लाने के लिए अपने वर्षों के अनुभव और प्रयोगों के उपरान्त इस तथ्य हीनता की स्थिति को समाप्त करने के लिए यह संकलन प्रस्तुत है। आशा है पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

—तांत्रिक बहल

—:०:—

अनुक्रमणिका

—:०:—

पहले इसे पढ़िए......

बतलाइए कि आपमें लगन, श्रद्धा, आत्मविश्वास और एकाग्रता है या नहीं। यदि है तो आप इसका पठन करें। यदि केवल मनोरंजन के लिए पढ़ रहे हों तो कृपया बन्द कर दें यह पुस्तक। तन्त्र कार्य लगन, श्रद्धा, विश्वास और एकाग्रता के अभाव में असफल हो जाते हैं। निरन्तर परिश्रम कर मन की एकाग्रता द्वारा सब कुछ पाया जा सकता है।

इस ओर जब तक आपका झुकाव न हो, व्यर्थ अपना समय बरबाद न करें।

मन्त्र शक्ति प्राप्त करना, मन्त्र विज्ञान के अनजाने अनछुए रहस्यों तक पहुँचना सरल कार्य नहीं है। अतएव इस ओर पूरी साधना से बढ़ें। निश्चय ही चमत्कारी परिणाम और सफलता मिलेगी।

प्रिय पाठको ! अन्य लोगों की तरह मैं यह नहीं कहता कि मैंने यह शोध किया है, मैंने वह कार्य किया है, यह उनकी आदत है। लिखने से कुछ नहीं होता है। अनुभव की कसौटी पर जो कथन खरा उतरता है वही सत्य है।

तन्त्र-मन्त्र विज्ञान की सफलता देखकर रोज नये तांत्रिक पैदा हो रहे हैं स्मरण रखें जो खरा है वह कभी नहीं बदलता। आप ऐसे लेखकों से भी सावधान रहें, अन्यथा आपका धन और समय के साथ-साथ श्रम भी नष्ट होगा।

इसका प्रकाशन समाज कल्याण और मन्त्र प्रेमियों के लिए है। अगर इसमें वर्णित साधनायें कर सकें तो अच्छा है। इस प्राचीन विद्या के गोपनीय रहस्य सबके सामनें इसलिए खोले जा रहे हैं कि सर्व साधारण भी लाभ उठा सकें।

आपकी साधना सफल हो। यही कामना है। कोई असुविधा हो तो सूचना दें। आपकी सन्तुष्टि मेरा धर्म है।

डी० ४ राधापुरी, कृष्णानगर
(जमुनापार) देहली-५१

तांत्रिक बहल
(तन्त्र सबके लिए मिशन)



आध्यात्मिक रहस्य

मत्यु और जीवन का विस्तृत विवेचन करनें वाली गीता विश्व का सबसे प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक ग्रन्थ माना गया है। यह महाभारत का एक अंश है। कब महाभारत हुई ? कब महाभारत के अन्तर्गत गीता का लेखन हुआ, यह सब विवादास्पद है। पर हजारों वर्ष पूर्व की बात अवश्य प्रमाणित होती है। गीता की मूल रचना संस्कृत में हुई। संस्कृत कैसी समृद्ध उन्नत भाषा थी। कब उसका विकास हुआ और कितनें समय तक उनका एक छत्र प्रचलन रहा ? इसका इतिहास तो महाभारत से भी पीछे जाता है।

आशय यह है कि हजारों साल पहले ही देश के तपस्वियों ने "आत्मा" का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसके मतानुसार आत्मा अजर अमर, अदृश्य अकाट्य है। मृत्यु केवल परिवेश (चोला) परिवर्तन है अर्थात् मत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व हजारों साल पहले ही यहाँ के तपस्वीगण स्वीकार कर चुके थे। आज भी इस पर बहस है कि क्या मृत्यु के बाद भी जीवन है। इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है। कारण कि यह जिज्ञासा हर एक में एकदम स्वाभाविक है कि मरने के बाद आखिर होता क्या है ? मृत्यु अनिवार्य है। प्रत्येक जीव जन्तु सजीव या निर्जीव (अचल-स्थिर) की मृत्यु अनिवार्य है। कछुआ सैंकड़ों साल जीता है। सर्प हजारों साल, पेड़ पौधे अपनी-२

किस्म के अनुसार पहाड़, घाटियाँ, नदियाँ लाखों वर्ष के बाद समाप्त हो दूसरा रूप धारण करती हैं। कुछ जीवों का जीवन दो-चार महीनों का होता है। सबका अपना एक निश्चित समय है। आशय यह है कि मृत्यु सबकी अनिवार्य है। कुछ अपवाद अवश्य हैं। हिमालय करोड़ों वर्षों से खड़ा है और प्रयागराज का अक्षयवट पृथ्वी के उद्गम समय से है। इनकी आयु का ही पता नहीं। जो हो मृत्यु तय है, पर उसके बाद क्या होता है?

आत्मा अजर, अमर, अकाट्य है। शरीर छोड़कर (मृत्यु होने पर) वह कहाँ चली जाती है? क्या होता है? काफी गहन छानबीन के बाद भी वैज्ञानिक इन प्रश्नों का उत्तर नहीं पा सके हैं। आत्मा क्या है? कैसी है? कुछ पता नहीं चल पा रहा है गीता में जिस प्रकार का वर्णन किया गया है, शायद वैसी ही है।

उसके रूप-रंग, आकार-प्रकार, वजन, गति, क्रिया-कलाप आदि का कोई भी प्रमाण न होने के बावजूद इस "आत्मा" का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। आत्मा का अस्तित्व सभी दृष्टिकोण से प्रमाणित है। आत्माओं के अस्तित्व का सबसे सबल प्रमाण पुनर्जन्म है। पुनर्जन्म के प्रमाण सैकड़ों हैं। यह प्रमाण आत्मा का अस्तित्व प्रमाणित करते हैं। पुनर्जन्म की घटनाओं पर काफी अनुसंधान किया जा चुका है और जब भी कोई ऐसी रोमांचक घटना होती है, तो विश्व के जाने-माने परामनोवैज्ञानिक अनुसंधान पुनर्जन्म को प्रमाणित करते आये हैं। जब भी उनका गुरु (दलाई लामा) मत्यु को प्राप्त होता है। वह उसकी खोज प्रारम्भ कर देते हैं कि कहाँ उसने जन्म लिया है। इसका पता लामा गण बड़ी ही विचित्र विधि

से करते हैं। पहले तो वह दलाई लामा के मरने पर दिशा का ज्ञान करते हैं। यह कार्य वह अपने हस्तलिखित धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर करते हैं। दिशा ज्ञान होने पर वह उस दिशा की ओर निकलते हैं। इसके लिए भी वह एक निश्चित दिन और समय चुनते हैं। इसके बाद वह उस समय में जन्मे शिशुओं की तलाश करते हैं, जिस समय लामा गुरु ने प्राण त्यागे होते हैं। इस मुहूर्त में शिशुओं का वह सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं। मुखाकृति और हाव-भाव देखते हैं। इस प्रकार केवल कुछ ही शिशु रह जाते हैं, जिनमें से वह अपने गुरु को खोजते हैं। इस प्रकार चुने गये शिशुओं के आगे (एक-एक शिशु करके) वह मृत लामा गुरु की पवित्र वस्तुयें रख देते हैं और देखते हैं कि शिशु पहले किस वस्तु को उठाता है ? माला सबसे पहले उठाने वाला शिशु ही उनके गुरु का पुनर्जन्म का होता है। माला को उठाकर श्रद्धा से देखने वाले बालक को ले आते हैं। इस प्रकार लामाओं का अपना सिद्धान्त है और वह प्राचीन काल से ही इस सिद्धांत पर अमल करते आये हैं।

जब पुनर्जन्म है तो अवश्य ही मृत्यु के बाद जीवन है। जीवन है तभी तो वह आत्मा फिर नया शरीर धारण करती है। बिना जीवन के यह सम्भव नहीं है। अब प्रश्न यह है कि मृत्यु के बाद और पुनः जन्म लेने के बीच का जो समय है, जीवन है, यह क्या है ? कैसा है ? इस पर अभी भी रहस्य का पर्दा पड़ा है।

पुनर्जन्म की सुप्रसिद्ध घटना सुख संचारक क. (प्रा.) लि. मथुरा उ. प्र की है। यह औषधि निर्माण करने वाली एक प्रमुख कम्पनी है। इसके संचालक की छुरी मारकर हत्या कर

दी गई। चार साल बाद एक बालक ने स्वयं को इस कम्पनी का मालिक बतलाना शुरू कर दिया। उसने पूर्व जन्म की सारी कथा सुना दी। मथुरा आकर सब कुछ पहचान लिया। उसके शरीर पर जन्मजात छुरे के घाव के चिन्ह थे। चिन्ह ठीक वहीं थे, जहाँ उसको छुरा मारा गया था। पुनर्जन्म का यह अत्यन्त प्रामाणिक मामला था। वह बालक यह न बतला सका कि मरने के बाद कहाँ रहा और कैसे आया? इसी प्रकार कानपुर के एक डाक्टर ने अपनी पत्नी की हत्या कर उसको सन्दूक में बन्द करके रेल से फेंक दिया। दुर्भाग्य से सन्दूक पुल के रेलिंग पर अटक गयी। नदी में जाकर न गिरी। लाश पुलिस के हाथों पड़ गयी। डाक्टर पकड़ा गया। मुकदमा चला। सर्वोच्च न्यायालय तक मुकदमा गया। काफी समय लग गया। इसी मध्य एक लड़की ने जन्म लेकर अपनी राम कहानी सुनानी शुरू कर दी कि किस प्रकार उसे मारकर सन्दूक में बन्द कर फेंका गया। उसने अपने शरीर के चिन्ह भी दिखलाये। इसी आधार पर डाक्टर को सजा हो गयी।

यह घटना पुनर्जन्म का सबसे प्रबल प्रमाण है। आशय यह कि पुनर्जन्म प्रमाणित है। सभी प्राणी मरने के बाद जन्म लेते हैं, पर पता करोड़ों, लाखों में एक-दो का लग पाता है। इसका अपना कारण और सिद्धांत है। इसकी व्याख्या हिन्दू धर्म में भली-भाँति की गई है। संसार में कुल ८४ लाख जीव योनियाँ चींटी से लेकर हाथी तक बतलायी गई हैं और प्रत्येक जीव अपने-अपने कर्मानुसार और अपने जीवन की अन्तिम क्रिया स्वरूप (वासना) पुनर्जन्म ग्रहण करता है। अतएव यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य योनि में ही उसका जन्म हो। मनुष्य जीवों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस कारण हिन्दू धर्म

में कहा गया है कि मनुष्य जन्म बड़े पुण्य और तपस्या से मिलता है। इस कारण प्रत्येक मरने वाला मनुष्य पुनः मनुष्य योनि में ही जन्म ले, यह नियम बनता नहीं है। लामा गुरु अपने कर्मों के कारण पुनः मनुष्य रूप लेते हैं। अतएव उनको खोज लिया जाता है। दूसरे किस योनि में पड़ते हैं, क्या···? पर यह निश्चित है कि पुनर्जन्म होता है। यही पुनर्जन्म इस बात को प्रमाणित करता है कि मत्यु के वाद जीवन है। मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच का समय विवादास्पद है, पर कुछ न कुछ जीवन तो है।

मृत्यु और जीवन के मध्य जो अवकाश है वह अन्य कुछ भी हो सकता है, पर अवकाश के वह क्षण भूत-प्रेत योनि में भी व्यतीत होते हैं। यह सत्य है। इस बात के अनेक प्रमाण समय-समय पर प्राप्त हुए हैं, हमारे परावैज्ञानिकों ने इस पर काफी शोध किया है।

पुनर्जन्म के सम्बन्ध में एक तथ्य यह है कि जातक जब तक अबोध रहता है, तब तक उसे अपना पूर्व जन्म का लगभग सारा ज्ञान हो जाता है पर संसार के सम्पर्क में आते ही चेतना ज्ञान बढ़ते ही वह सब कुछ भूल जाता है। नवजात शिशु की मुद्राएँ भी बड़ी आश्चर्यजनक होती हैं। किसी भी निद्रामग्न नवजात शिशु (जब तक वह केवल माँ का दूध पीता है, केवल तब तक) का चेहरा देखो। रोता, हँसता, मुस्कुराता दिखलाई पड़ेगा। उसके मासूम चेहरे पर एक के बाद एक नाना प्रकार के भाव आते-जाते स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ेंगे। वह चौंकता, घबराता भी दीखेगा, पर जैसे ही वह सांसारिक अन्नजल ग्रहण करने लगता है उसके सारे हाव-भाव लुप्त हो जाया करते हैं। वह स्वप्न अवश्य देखता है। पर चेहरे पर भाव नहीं आते हैं।

लगता है वह पूर्वजन्म के दुख-सुख का स्मरण कर हँसता रोता है। सांसारिक सम्पर्क (अन्नप्राशन) होते ही अपने पूर्व जन्म की स्मृतियों से वह मुक्त हो जाता है। करोड़ों, लाखों में से कोई दो-एक याद रख पाते हैं।

आत्मा का अपना अस्तित्व है। वह अपना शरीर बदलती रहती है।

शरीर बदलने का यह क्रम भारतीय संस्कृति में कर्मानुसार माना गया है। आश्चर्य की बात यह है कि हजारों-लाखों साल पहले ही भारतीय चितकों ने "आत्मा" का अस्तित्व स्वीकार कर लिया था और पुनर्जन्म की रहस्यमयी प्रक्रिया को भी जान लिया था। अवतारवाद भी हो तो पुनर्जन्म का एक रूप धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए विष्णु ने अनेक प्रकार के अवतार एक प्रकार से पुनर्जन्म की ही पुष्टि करते हैं।

प्रत्येक दृष्टिकोण से यह प्रमाणित है कि आत्मा अमर है। प्रत्येक जीव की आत्मा शरीर के जर्जर होने पर उससे निकल कर दूसरे (शरीर) में प्रवेश कर जाती है। इसी प्रक्रिया को पुनर्जन्म कहा गया है। सृष्टि में यह सनातन प्रक्रिया अहर्निश चल रही है। प्रतिक्षण जन्म-मरण शरीर परिवार का चक्र गतिशील है। सबसे रहस्यमय बात यह है कि जब आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाती है, तो दूसरा शरीर धारण करने से पूर्व अर्थात मृत्यु के तत्काल बाद का जीवन या प्रक्रिया क्या है? मरने के बाद और जन्म से पहले की दुनिया कैसी है? कितनी (समय) है? क्या आत्मा शरीर त्याग करते ही दूसरे शरीर में चली जाती है या फिर उसमें कुछ समय

लगता है ? समय लगता है तो कितना और उस समय उसका दौर-दौरा कैसा रहता है ? मृत्यु के बाद जीव के यही रहस्यमय प्रश्न हैं।

भारतीय अध्यात्म के अनुसार प्रत्येक "आत्मा" को एक निश्चित दौर से गुजरना है। इसीलिए स्वर्ग और नर्क का वर्णन सर्वत्र भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। भारतीय अध्यात्म में सात प्रकार के नर्क बतलाये गए हैं। "गरुड़ पुराण" में इनका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। कुछ चित्रों में भी कर्म का फल दिखलाया गया है। मरने के बाद सजा भोगनी ही पड़ती है। लगभग यही कारण संसार के सभी धर्मग्रन्थों में ही कोई भी धर्म या जाति हो उसमें स्वर्ग-नर्क, जन्नत दोजख, हेल और हेवन का उल्लेख अवश्य है।

क्या वास्तव में स्वर्ग-नर्क है ? क्या वास्तव में आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगने के बाद कर्मानुसार योनि में जाना पड़ता है ? यह एक रहस्यमय गूढ़ प्रश्न है और स्थिति यह मृत्यु के बाद की। यह यमराज की है। प्रत्येक व्यक्ति (जीव) को लेनें यमराज के दूत आते हैं। यमराज का यह अस्तित्व संसार के सभी धार्मिक ग्रन्थों में किसी-न-किसी रूप में मिलता है। यमदूत मनुष्य के "प्राण" हरण करते हैं। यह एक ऐसा विश्वास है, जो संसार की सभी जातियों में पाया जाता है।

क्या सचमुच ऐसा कुछ है ? यह ऐसा प्रश्न है, जो आज तक प्रमाणित नहीं हो सका है। इस प्रश्न का उत्तर सोचने से पहले परमावश्यक है कि कुछ बातों का स्पष्टीकरण कर लिया जाये।

आज विज्ञान इतना आगे बढ़ गया है कि मानव शरीर के रोम-रोम का उसे ज्ञान है कि क्या कहाँ है। इसी आधार पर शल्य चिकित्सा (सर्जरी) के एक से एक चमत्कार सामने आ रहे हैं। इतना सब ज्ञान प्राप्त कर लेने के बावजूद यह विज्ञान "आत्मा" के अस्तित्व को प्रमाणित रूप से नहीं पकड़ पाया है कि यह कहाँ है? विज्ञान यह नहीं कह सकता—देखो, यह आत्मा है। उसका रूप, रंग, आकार-प्रकार, वजन, नाप-तोल आदि बतला सकें। विज्ञान इतना अवश्य स्वीकार करता है कि मनुष्य में कुछ है और वह "कुछ" उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद निकल जाता है।

यह (कुछ) क्या है? विज्ञान आज तक नहीं पकड़ पाया है। जबकि यह "कुछ" मानव शरीर के लिए सब कुछ है। शरीर रचना में वर्णन मिलता है कि अमुक-अमुक है, पर जीव, आत्मा, प्राण का कोई वर्णन नहीं है। जीव, प्राण आत्मा शरीर में कहाँ हैं? न उनका आकार है, न प्रकार।

एक उलझन और भी है।

जीव, आत्मा, प्राण! यह तीन शब्द बार-बार संसार के सभी आध्यात्मिक ग्रन्थों, धर्मों में मिलते हैं। यह तीनों क्या एक हैं?

"आत्मा" की परिभाषा धार्मिक ग्रन्थों में है। उसके अनुसार वह निर्मल, निष्कलंक, शुद्ध मानी गयी है। आत्मा को ही परमात्मा माना गया है। परमात्मा को पिता स्वरूप माना गया है। अतएव मनुष्य के समस्त कर्मों का फल "आत्मा" भोगती है। यह गलत है। कर्मों का फल आत्मा नहीं भोगती। तब कौन भोगता है? जीव। इस व्याख्या से स्पष्ट है कि आत्मा

अलग है, जीव अलग है। प्राण, जीव को हम एक नहीं समझ सकते हैं। यह तीनों तत्व अलग-अलग हैं। यह तीनों तत्व मनुष्य के शरीर में हैं।

प्राण का अर्थ है, मनुष्य का वायु क्रिया और शरीर का संचालन। प्राण शरीर को गतिशील रखता है, इसी कारण प्राण निकल जाते हैं, तो शरीर निश्चेष्ट निश्चल हो जाता है और उसका अन्तिम संस्कार कर दिया जाता है और अगर न किया जायेगा तो पार्थिव शरीर बदबू मारने लगता है। आम बोलचाल की भाषा में कहा भी जाता है—प्राण छूट गये।

"जीव" कुछ अलग ही तत्व है। इसी तत्व को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इसी के लिए स्वर्ग-नर्क बनाया गया है। प्राण एक क्रिया है, जो शरीर जर्जर होते ही मिट जाता है। जीव प्राणी का अपना है, इसे ही स्वर्ग-नर्क देखना पड़ता है।

आत्मा उनके साथ सम्बद्ध है, पर निष्प्रभावित रहती है। जिस प्रकार सूक्ष्म कण में—और न्यूट्रान प्रोट्रोन रहते हैं उसी प्रकार जीव और आत्मा संयुक्त हैं। अब इसमें कौन न्यूट्रान और कौन प्रोट्रान अर्थात कौन—और है, कहना कठिन है। जीव आत्मा संयुक्त है। जीव फल भोगता है और आत्मा निर्विकार अप्रभावित रूप से संयुक्त रहती है। आत्मा को हवा में ठंडक, धूप में गर्मी की तरह केवल अनुभव किया जा सकता है, देख पाना सम्भव नहीं है।

मृत्यु के बाद का जीवन कैसा है ? इसको जानने के लिए वैज्ञानिकों, परामनोवैज्ञानिकों ने कोई कसर बाकी नहीं रखी है। प्रत्येक सम्भव उपाय अपनाये हैं। हमारे परावैज्ञानिक

(मांत्रिक) भूत-प्रेत, चुड़ैल राक्षस जैसी वायवी हलचलों के पीछे आत्मा को मानते हैं। वह इसे आत्मा का छोटा-सा करिश्मा कहते हैं।

इस संसार में चमत्कार भी कम नहीं होते हैं। कुछ चमत्कार तो वैज्ञानिकों को भी आश्चर्य में डाल देते हैं। इस संसार में "असंभव" जैसा कुछ नहीं है। अनेक घटनाएं इस प्रकार की घट जाया करती हैं कि अमुक व्यक्ति मर गया। डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उसकी अर्थी उठायी गयी। उसे श्मशान ले गये। चिता पर रखते ही उठकर वैठ गया। प्राण वापस आ गए। ऐसे लोगों से गहरी पूछताछ की गयी। सवके अलग-अलग कथन थे। कुछ ने कहा—कुछ पता नहीं शायद मैं सो गया था। मैं गहरी नींद में था। कुछ नहीं जानता। उठकर वैठ गया। आशय यह है कि निष्कर्ष पूर्णतः प्रामाणिक नहीं है। यमराज, यमदूत, अदालत, स्वर्ग-नर्क भावना या हमारे अन्य संस्कारों का फल हो सकते हैं। मन में संस्कारों के कारण जग गया, इसी भावना के कारण जीव वेहोशी में यह सव देखता है। इस प्रकार की घटनाएं प्रति हजार का ००.७ है। सवके अनुभव एक से एक विचित्र हैं। कोई समानता नहीं और कोई वैज्ञानिक आधार नहीं।

जो भी हो, पर कुछ न कुछ हलचल कुछ-न-कुछ क्रिया-कलाप अवश्य ही है। मत्यु के वाद कुछ न कुछ अवश्य होता है। इसी "हलचल" का नाम "जीवन" है। अतएव यह सत्य प्रमाणित है कि मृत्यु के वाद जीवन है। यह क्या है ? कैसा है ? कहाँ है ? इस पर विवाद है, पर जीवन का अस्तित्व अवश्य ही है। इस पर सव्र एक मत हैं।

हमारे प्राचीन शास्त्रों ने भूत-प्रेत जैसी वायवी हलचलों को

शांत करने के लिये, उन्हें गति देने के लिए अनेक प्रकार के विधि विधान बतलाये हैं। पुस्तक भूत-प्रेत सिद्धि का मूल उद्देश्य है वायवी हलचलों को शांत करने या उनको सिद्ध करने की प्रामाणिक विधियाँ बतलाना। हम अपने प्रयास में कितने सफल हैं, इसका निर्णय तो आप करेंगे।

भूत-प्रेत सिद्धि करने के लिए साधक को निडर, साहसी तो होना आवश्यक है ही, साथ ही उसे गुरु भक्त, निष्ठावान एवं श्रद्धायुक्त होना भी परम आवश्यक है।

लगभग दो-तीन दशक पूर्व तक पश्चिम कट्टर पंथी वैज्ञानिक भूत-प्रेत का अस्तित्व न मानते थे और न ही आत्मा का अस्तित्व स्वीकारते थे, क्योंकि कल्पना और तर्क से वह प्रभावित नहीं है और जब तक ठोस प्रमाण न मिलें तब तक स्वीकार करना उनका स्वभाव नहीं है। वैसे भूत-प्रेत का अस्तित्व मानव के जन्म के साथ-साथ चला आ रहा है। संसार का ऐसा कोई धर्म नहीं है, जिसमें भूत-प्रेतों का अस्तित्व न स्वीकारा गया हो और समय-समय पर इनके चमत्कारिक कारनामे सामने आते रहे हैं। विशेष रूप से भारतीय (सनातन) धर्म तो इनका अस्तित्व बड़े व्यापक रूप में स्वीकार करता आ रहा है। मृत्यु के बाद भी जीवन है। यह उद्घोष बार-बार हुआ है। गरुड़ पुराण में तो मृत्यु के बाद की सम्पूर्ण गतियों का विशद विवेचन है। अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ "गीता" में तो भगवान श्री कृष्ण ने "आत्मा" का रूप रंग और उसका जो विवरण दिया है, वह किसी भी भारतीय से छिपा नहीं है। तब भी कट्टर पंथी पश्चिम के वैज्ञानिक मानते न थे, पर अन्तरिक्ष यात्राओं के मध्य हुए अनेक वैज्ञानिक उपकरणों के कारण और व्यापक शोध जाँच पड़ताल के उपरान्त आत्मा का अस्तित्व,

भूत-प्रेतों का अस्तित्व अब इन कट्टर पंथी वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। इन वैज्ञानिकों को सबसे अधिक पुनर्जन्म की घटनाओं ने बाध्य किया है। वह मान रहे हैं कि मृत्यु के बाद भी जीवन है। पूर्वजन्म की स्मृतियाँ मनुष्य बटोरे रहता है। अतएव इन वैज्ञानिकों ने इस सम्बन्ध की अनुसंधान प्रणाली को "पराविज्ञान" का रूप दिया है। पश्चिम के अनेक देशों में "पराविज्ञान" की संस्थाएँ गठित हैं और वह इसी विषय पर लगातार अनुसंधान कर रही हैं।

पूर्व जन्म की घटनाएँ प्रत्येक प्राणी के साथ रहती हैं। इसका प्रमाण नवजात शिशु स्वयं होता है। वाणी यन्त्र अविकसित होने के कारण वह अपने (अच्छे या बुरे) स्मरण को कह नहीं पाता है। (शायद मन ही मन कहता हो) केवल उसके चेहरे से यह स्पष्ट होता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आप स्वयं देख सकते हैं। सुप्त शिशु के मुख का अवलोकन करें आप। कभी मुस्कुराना, कभी मौन खिलखिलाहट, कभी रोने लगना, कभी डर जाना। निद्रामग्न प्रत्येक शिशु इस प्रकार की विचित्र क्रियाएँ करता है। आखिर क्यों ? भारतीय स्त्रियाँ बच्चे को बड़ा पवित्र मानती हैं। वह भगवान का रूप है। उनका कथन है कि शिशु का सीधा सम्पर्क भगवान से है। वह ईश्वर से बातें कर रहा है। उनकी यह कल्पना कहाँ तक सत्य है, यह तो ईश्वर ही जाने, पर परामनोवैज्ञानिक तथा परा-वैज्ञानिक इसका सीधा सम्बन्ध पूर्वजन्म की स्मृतियों से जोड़ते हैं। प्रत्येक शिशु में अपने पूर्वजन्म की स्मृतियाँ रहती हैं। वाणी के अभाव में वह बोल नहीं पाता और जब तक बोलने लायक होता है, तो उस अवस्था तक वह सब मिट गयी होती हैं। उसके मस्तिष्क के टेप पर तब परिवार, माता-पिता द्वारा

सिखायी कही बातें अंकित हो जाती हैं। पूर्व जन्म की स्मृतियों वाला 'टेप' तब तक 'वाश' हो जाता है और उस टेप पर नयी (वर्तमान) रिकार्डिंग हो जाती है। उसके तुतलाने बोलने की सारी क्रियाएं बड़ी धीमी गति से होती हैं फिर जब वह 'माँ' के दूध को बन्द कर भोजन करने लगता है। (अन्न प्राशन के उपरान्त) भोजन के सम्पूर्ण तत्व उसकी पूर्व जन्म की स्मृतियाँ को 'वाश' (समाप्त) कर देते हैं। यही कारण है कि पूर्वजन्म के सब हाल ठीक-ठीक बतलाने वाला/वाली कुछ समय उपरांत सब भूल जाता/जाती है। केवल बिरले ही शिशु में पूर्वजन्म की स्मृतियाँ वाणी मुखर होने तक रहती हैं। कारण कि वह अत्यन्त तीव्र उत्तेजनात्मक रहती हैं। मिटाये नहीं मिटती तब तक। इस कारण वह सब बतला जाता है, जो अक्षरक्षः सही होता है। इस निष्कर्ष के कारण पराविज्ञान पूर्वजन्म स्वीकारती है और इसी आधार पर 'आत्मा' कुछ है उसका अस्तित्व है, यह भी स्वीकारती है।

आत्मा का यह अस्तित्व ही भूत-प्रेत के अस्तित्व का प्रमाण है।

गीता में बिल्कुल स्पष्ट कहा गया है कि आत्मा रस रंग गंधहीन, अदृश्य, निराकार है। जिस प्रकार प्राण वायु (आक्सीजन का अस्तित्व हम मानते हैं और रात दिन, हर पल, हर घड़ी श्वांस द्वारा ग्रहण करते हैं, जिनके कारण हमारे स्वस्थ्य शरीर के अंग बराबर क्रियारत रहते हैं उसे हम भला देख पाते हैं। महसूस तक नहीं कर पाते। वायु में उसका मिश्रण इस प्रकार है कि हम उसका स्पर्श तक नहीं अनुभव करते, हालांकि वह बराबर श्वांस द्वारा हमारे शरीर में जा रही है। कुछ ऐसा ही 'वायु' रूप आत्मा का है। उसका कोई

आकार नहीं है। आकाश में जब सफेद बादल छाये हों तो क्या आपने कभी कुछ समय तक मौन भाव से उनको निहारा है? निहारकर देखें तो कोई बादल का एक टुकड़ा देखें। पल-पल में रूप रखता है। कभी हाथी, कभी घोड़ा, कभी पेड़, नदी घाटी, पहाड़ कभी विशाल राक्षस का रूप। हवा के बहाव दबाव के कारण यह रूप परिवर्तन होता रहता है। ऐसे ही कुछ आकार आत्मा के हैं। असंख्य आकार। कब क्या रूप धर के आ जाये, क्या ठिकाना। यदा कदा जब वह प्रत्यक्ष हो जाते हैं, कोई व्यक्ति हठात् इनको देख लेता है, तो अत्यन्त घबरा जाता है, बस! यही भूतप्रेत के अस्तित्व का वैज्ञानिक प्रमाण है। अब प्रश्न यह उठता है कि प्रत्येक व्यक्ति को भूत-प्रेत या चुड़ैल क्यों नहीं दिखलायी पड़ते?

प्रश्न निःसन्देह अच्छा है। इस प्रश्न का पृथक रूप से वैज्ञानिक उत्तर है। विशद् रूप से व्याख्या न कर, केवल मृत्यु तर्क प्रस्तुत है। विज्ञान इस बात को प्रमाणित कर चुका है कि त्रिआयामी (तीन डायमेन्शन) वाली वस्तु ही आँखों को दीख पड़ती है। इसी सिद्धांत पर जब थ्री डायमेन्शन वाली फिल्म बनी तो तहलका मच गया और उसी का एक रूप है पैनोरामा जिससे आप सारे दृश्य सजीव देख सकते हैं और उनके बीचों-बीच अपने आपको अनुभव कर सकते हैं। यह त्रिआयामी स्थिति का ही परिणाम है। अब यदि कोई जीव या वस्तु एक या दो आयाम में हुई, तो क्या आप उसे देख सकेंगे? कदापि नहीं। यह विद्यमान रहकर भी आपके लिए अदृश्य रहेगी।

उल्लू नेत्र विहीन नहीं होता। उसकी आँख होती हैं। फिर दिन में क्यों नहीं देख पाता? कारण उसकी आँखें बनी ही इस

प्रकार की हैं। पलक विहीन और बड़ी-बड़ी कि प्रकाश रश्मियाँ सीधे उसके रेटीना (गोलक) पर पड़ती हैं। प्रतिबिम्ब बन ही नहीं पाते। रात में प्रकाश रश्मियाँ शीतल हो जाती हैं। फलतः देख सकता है। बिल्ली के विषय में आप क्या कहेंगे? घोर अन्धकार में भी वह अपने शिकार चूहे या वस्तुएँ देख सकती है, आपके बेतरह श्वेत व्यक्ति अवश्य देखे होंगे, जिन्हें 'सूर्य-मुखी' कहा जाता है। सूर्य के प्रकाश में वह पलकें लगातार झपकाते रहते हैं, उन्हें देखने में असुविधा होती है, पर रात आते ही वह सरलता पूर्वक देख पाते हैं। यह सब आँखों-आँखों (नजर-नजर) का फर्क है। मनुष्य की आंखें केवल प्रकाश में त्रिआयामी वस्तुएँ देख सकती हैं।

शरीर के बारे में अति प्राचीन काल से हमारे पूर्वज कहते आये हैं कि यह पाँच तत्वों का बना है। (अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश) दाह संस्कार के द्वारा ये पाँचों तत्व अपने-अपने सजातीय से जा मिलते हैं। शरीर तो गया, पर आत्मा···? कहाँ गयी? रह गयी। उसका आकार त्रिआयामी तो है नहीं। रहते हुए भी कैसे दीखे? आकाश के बादलों के समान उसका रूप पल-पल बदलता रहता है। बिना शरीर वाली आत्मा एकल आयाम की हो गयी। हठात् कोई देख ले तो···? हाँ, वही भूत-प्रेत हैं। प्रश्न यह है कि हठात् क्यों? हर समय क्यों नहीं? इसका सटीक उत्तर है कि एकल आयाम की वस्तु देखने के लिए स्थिति विशेष चाहिए। मान लीजिए यह 'स्थिति' जाग्रतावस्था (चेतन रहने पर) में आ गयी तो··· तब तो निश्चय स्वप्न दीखेगा। मनुष्य का मन जाग्रत या निद्रावस्था में हो, कभी भी एक पल के सौवें भाग के लिए भी निष्क्रिय नहीं रहता है। इसी कारण शरीर मर जाने पर भी

मस्तिष्क जीवित रहता है। डाक्टर मस्तिष्क की 'मृत्यु' को ही वास्तविक मृत्यु मानते हैं। शरीर मरने के बहुत देर बाद मस्तिष्क मरता है। तब तक वह अत्यन्त छटपटाता रहता है। इसी कारण फाँसी लटकाए व्यक्ति की लाश तत्काल नहीं उतारी जाती। इसी कारण सनातन धर्म में 'कपाल क्रिया' का विधान है। मोटे बाँस से मृतक का निकट सम्बन्धी उसका कपाल फोड़ता है। यह विज्ञान सम्मत क्रिया है। मस्तिष्क मारने के लिए, वह भी खत्म हो जाय, शायद वहीं रहस्यमयी आत्मा रहती हो। इसी कारण कपाल क्रिया होती है। यहीं पर मस्तिष्क है, जहाँ कुछ न कुछ अवश्य चलता रहता है। यही स्वप्न की सृष्टि करता है। एकल आयाम मनुष्य दशा स्वप्नावस्था में हो जाती है। इसी प्रकार की दशा आने पर मनुष्य इन आत्माओं के रूप में देख पाता है और यह 'समाधि' जैसी दशा अधिक देर नहीं केवल कुछ ही क्षण ही रहती है। इसी कारण 'भूत-प्रेत' दीखा और गायब। इसी कारण उस व्यक्ति के अलावा दूसरा देख नहीं पाता है। एक व्यक्ति भूत-प्रेत चिल्लाता है। 'देखो वह आ रहा है···वो रहा···' पर दूसरे एकल आयाम स्थिति में न होने के कारण उसे देख नहीं पाते तन्त्र की अनेक विद्याएँ, क्रियाएँ, मनुष्य की मन: दशा एकल आयाम में ले आने वाली हैं। इस कारण सिद्ध तांत्रिक उनको देख सकते हैं। दूसरे नहीं। इसी का अनुचित लाभ ओझा, सयाने या नौसिखिए, व्यावसायिक तांत्रिक ढोंग रचाकर लाभ उठाते हैं अत: भूत-प्रेतों का अस्तित्व है, इस बात से अब इन्कार नहीं किया जा सकता है।

अगला महत्वपूर्ण प्रश्न है, भूत-प्रेत क्या हैं? कैसे बनते हैं? इनका उद्भव कैसे होता है?

इसका अपना तर्क सम्मत सिद्धांत है। संसार के सभी धर्मों में स्वर्ग और नरक है। और हैल हैवन की कल्पना है। हिन्दुओं में तीन लोक माने गये हैं, मुसलमानों में सात आसमान बतलाये गये हैं। कहा जाता है कि कर्मानुसार आत्माएँ, रूहें इन लोकों से अपने कर्मों का फल भोगकर नाना जीवों में जाती हैं। इसे ही भारतीय अध्यात्म में "आवागमन" कहा गया है। इससे मुक्ति पाने के लिये अनेक प्रकार की उपासनाओं और क्रिया-कलापों को बतलाया गया है। भारतीय अध्यात्म में चौरासी लाख योनियाँ बतलायी गयी हैं। यह आत्मा एक योनि से दूसरी योनि में भटकती रहती हैं। मनुष्य रूप छोड़कर किस योनि में मनुष्य जाता है, क्या पता। एक उदाहरण अपने अनुभव का दूं। एक अधेड़ स्त्री थी। बड़ी पतिव्रता पति भी खूब प्यार करता था। दुर्भाग्यवश पति चल बसा। वह विधवा हो गयी पर नित्य पति का स्मरण करती थी। तसवीर से बातें करती थी। डेढ़ वर्ष बाद एक कुत्ता उसके पीछे लग गया। जहाँ तक जाती, पीछा करता। घर में जबर्दस्ती घुसता। बड़ा मारा-पीटा, डाँटा-फटकारा। बाहर निकाल दिये जाने पर दरवाजे के बाहर पड़ा रहता। सदैव पीछा करता रहता था। तंग आ गयी, मुझसे कहा, मैंने सम्पर्क किया। मुस्कराकर बोला, 'यह तुम्हारे पतिदेव हैं। कुक्कुट योनि में गये हैं। वह रो पड़ी। लौटकर आयी और कुत्ते को प्यार से रखना चाहा पर पता चला कि कारपोरेशन वाले उसे गोली देकर मार गये हैं। उसने उसका अन्तिम संस्कार कराया। तो यह रही "आवागमन" और आत्माओं की यात्रा। इस प्रकार आत्मा अपना चोला बदलती रहती हैं। केवल रह जाती है भटकती, अशांत आत्माएँ भूत-प्रेत के रूप में यदा-कदा दीख पड़ती है और नाना प्रकार के उपद्रव करती रहती हैं।

आखिर यह अशान्त भटकती आत्माएँ क्या हैं ?

यह अन्य "चोला" क्यों नहीं धारण कर पातीं ?

इसका स्पष्ट उत्तर है। अकाल मृत्यु के कारण शरीर से बिछड़ गयी आत्माएँ भटकती रहती हैं। जाये तो जाये कहाँ ? काल चक्र के अनुसार उनका समय ही पूरा नहीं हुआ है। अकाल मृत्यु···एक बीस वर्षीय युवक/युवती दुर्घटना का शिकार घटना स्थल पर मर गया, आत्महत्या कर ली, जल मरा, करंट मार गया, ट्रेन हवाई जहाज, डूब मरा या नाना प्रकार की असामयिक दुर्घटनाओं में असमय मरण। निश्चित रूप से ऐसी आत्माएँ भटकती रहती हैं और वही जब किसी को कुछ क्षण के लिए एक "आयामीय स्थिति" प्राप्त हो जाती है तो वह भूत-भूत चीखने लगता है, उसे ही भूत-प्रेत दीखते हैं और कुछ क्षण बाद एक आयामीय स्थित भंग होते ही गायब।

यह भटकती अशांत आत्माएँ जायें तो किस लोक में ? माया मोह के बन्धन में भी कुछ आत्माएँ नाना प्रकार की प्यास के कारण, अतृप्ति के कारण, वासनाओं के कारण भटकती है, इसलिये, हमारे यहाँ, गति, श्राद्ध-तर्पण तक आत्माओं की शांति का विधान है। इसमें अवैज्ञानिक है ही क्या ? यह सब समय और विज्ञान की कसौटी पर एक बार नहीं अनेक बार परखा हुआ है।

भूत-प्रेत जैसी वायवी हलचलों का अस्तित्व इसी कारण है। विज्ञान इसे स्वीकार कर चुका है। धर्म इसे मानता है। शायद दो-चार सौ साल विज्ञान इन आत्माओं से चाहे जब सम्पर्क करने की स्थिति में आ जाये, तब और भी रहस्य खुल सकते हैं। परीक्षण बराबर चल रहे हैं। यह शुभ लक्षण हैं।

मन्त्रों का चमत्कारी प्रभाव

अब ध्वनि विज्ञान का प्रभाव एक पाश्चात्य वैज्ञानिक ने भी सिद्ध किया है। उसने ओंकार के उच्चारण से निकलने वाली तरंगों से उत्पन्न शक्ति का वर्णन करते हुए लिखा कि यदि 'ओं' का उच्चारण विधिपूर्वक किया जाये तो उससे एक दीवार तक ध्वस्त हो सकती है। फ्रांस की एक महिला ने ध्वनि विज्ञान पर अनेक परीक्षण किये। उसने सिद्ध किया कि ध्वनि के साथ हृदय का सीधा सम्बन्ध रहता है। महिला वैज्ञानिक फिलनांग ने एक वीणा तैयार की उसमें भीतर नीचे की ओर तारों के साथ एक चाक का टुकड़ा बाँध दिया इसके बाद चाक एक बोर्ड पर लगा दिया गया। वीणा को बजाने से चाक हिलने लगा और बोर्ड पर कुछ रेखायें खिंच गईं उसने अनुभव किया कि जिस तरह का साज बजाया जाता है, उसी तरह की आकृतियाँ बोर्ड पर बन जाती हैं। इससे वह इस निर्णय पर पहुँची कि ध्वनि का भावों से गहरा सम्बन्ध होता है। और उन पर शब्दों का प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि जप और पाठ से मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास होता है।

इसी संदर्भ में मियामी (अमेरिका) के एक उत्साही डॉ० जे० डी० रिचर्डसन ने समुद्री मछलियों को पकड़ने के लिए एक विशिष्ट संगीत ध्वनि का प्रयोग किया। वे जब समुद्र के किनारे बंसियों की सहायता से ध्वनि निकालते थे तो उससे आकर्षित होकर काफी संख्या में मछलियाँ स्वयं आ जाती थीं। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में विद्युत चालित एक ऐसे यन्त्र का

आविष्कार हुआ है जिसकी ध्वनि सुनकर दीपक पर प्राण न्योछावर करने वाले कीट पतंगे इस यन्त्र से टकराकर बलिदान हो जाते हैं।

प्रसव के उपरान्त 'सोहर' गाने की प्रथा उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान में आज भी है इसका उद्देश्य बुरे संस्कारों को दूर करना ही है।

जर्मनी के डॉ० जोहोम ने संगीत की सहायता से पशुओं को रोग मुक्त करने में सफलता प्राप्त की है। इस दिशा में प्रिट्सवर्ग के राल्फ लारेन्स ने बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है।

ध्वनि संयोजन एक प्रकार की साधना है, उसमें ध्वनि कम्पन नाभिप्रदेश से निकालकर ब्रह्म-रन्ध्र में लाये जाते हैं यहाँ तालु से उन्हें पकड़कर मनोमय विद्युत का संयोग दिया जाता है, तब वह मुख द्वारा बाहर निकलता है। यह संयोजित स्वर पानी में भंवर अथवा गोलाकार चक्र के रूप में निकलता है, फिर उसका प्रयोग इच्छानुसार किसी भी कार्य में हो सकता है। यह मंत्र की तरह कार्य करते हैं। आज विदेशों में ध्वनि के द्वारा जो आश्चर्यजनक कार्य हो रहे हैं, वह सब ध्वनि विज्ञान पर ही आधारित हैं।

मंत्र साधना से भावना का बहुत गहरा सम्बन्ध है। मन्त्र साधक जैसी भावना करता है, वैसी ही सफलता उसे प्राप्त होती है। भावना से साधना में गति आती है। मंत्र सिद्धि के लिये भावना शक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है।

मन्त्र, तीर्थ द्विजे देवे दैवज्ञे भैषजे गुरौ।
यादृशो भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृसी ॥

'मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, दवा तथा गुरु में

जिस तरह की भावना होती है, उसके अनुसार ही उसे सिद्धि प्राप्त होती है।

आधुनिक विज्ञान ने भी भावना की आवश्यकता को स्वीकार किया है और इसे प्रयोग में लाकर सफलता प्राप्त की है और आशाजनक लाभ उठाये हैं।

भावना से लाभ उठाने के लिये हमें परमात्मा से यह कामना नहीं करनी चाहिए कि वह हमें स्वास्थ्य प्रदान करें। इस भावना से शक्ति का प्रवाह हमारी ओर परिवर्तित होगा यह निश्चित है। आत्म-कल्याण के लिए भावना करते समय इसी क्रिया का अनुकरण करना चाहिए कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, शक्तिशाली हूँ, स्वस्थ और प्रसन्न हूँ, मुझे कोई चिन्ता नहीं है, मेरा जीवन आनन्दमय है, साँसारिक विपत्तियों और कठिनाइयों का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होता। क्रोध, लोभ, आसुरी शक्तियाँ मुझ पर आक्रमण नहीं करती हैं, मैं प्रगति पथ पर बराबर बढ़ता चला जा रहा हूँ, मुझ रोकने की शक्ति किसी में नहीं है। मेरी देह असीम है। सारी सृष्टि मुझमें ही समाई हुई है और हर शरीर में मेरा निवास है, मैं सब में हूँ और सब मुझमें हैं। इस प्रकार की कल्पनाओं से साधक शक्ति का केन्द्र बन जाता है। इस प्रकार की भावना एक प्रकार का संकेत है। भावना में संकेतों द्वारा लाभ में कुछ भी सन्देह नहीं है। इन संकेतों का सीधा प्रभाव हमारे मन मस्तिष्क पर पड़ता है। अवचेतन मन ईश्वर प्रदत्त शक्ति का भण्डार है, देवी शक्तियों का वह केन्द्र है हमारी सारी शक्तियाँ वहीं सोई पड़ी हैं। उन्हें प्राप्त करने के लिए उन्हें जगाना होगा। इसका उपाय केवल संकेत ही है।

अतः भावना से ही इच्छानुसार लौकिक व पारलौकिक सुख प्राप्त होते हैं। जो साधक मंत्र जप में भावना शक्ति का उपयोग नहीं करते, वह अपनी सुप्त शक्तियों को जागृत करने की प्रक्रिया को नहीं अपनाते हैं। उन्हें यही कामना करनी चाहिए कि वह उद्देश्य पूरा हो गया है। भावना में असीम शक्ति है। अतः इष्ट कामना की पूर्ति की भावना से साधना से सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र साधना में संकल्प और इच्छा शक्ति का महत्व है।

संसार में जितनें भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने इच्छा शक्ति का सहारा लेकर ही दुष्कर कार्य किये हैं। भावना गुप्त शक्तियों को जगाने का माध्यम है। साधक के पास अनेक शक्तियाँ हैं, परन्तु वह उनका समुचित उपयोग करना नहीं जानता। संकल्प एक विद्युत है जो भावना के भीतर छिपी रहती है।

मन के संकल्प में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष दिलाने वाली सभी शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। ऋषियों ने इसे ब्रह्मा की संज्ञा दी है और संकल्प की उपासना के लिए प्रेरित किया है।

संकल्प का इच्छा शक्ति से गहरा सम्बन्ध है। दृढ़ इच्छा शक्ति मानसिक क्षेत्र का किला है। ऐसा साधक सदैव प्रसन्न और शान्त रहता है। जीवन का सुख, स्वास्थ्य, प्रसन्नता सिद्धि सदैव उसके साथ रहते हैं।

निर्बल इच्छा शक्ति वाले साधक अपने या दूसरों के लिए कोई उपयोगी काम नहीं कर सकते। क्योंकि उनके निश्चय डावाँडोल रहते हैं। एक साधना को अधूरा छोड़कर, दूसरी को छोड़कर तीसरी को करने लगते हैं। निर्बल इच्छा शक्ति से बाधाएँ आने-जाने लगती हैं। इच्छा शक्ति की कमी असफलता

का दूसरा नाम है। सफलता के लिए इच्छा शक्ति का विकास आवश्यक है। संकल्प शक्ति के विकास के लिए साधना करनी ही चाहिए।

प्रिय साधकों ! आप में सब कुछ है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि आप अपनी शक्तियों को पहचानें और उन्हें जगाने का प्रयत्न करें। प्रबल इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प इन गुप्त शक्तियों को जाग्रत करते हैं। मंत्र सिद्धि के लिए इनका सहयोग अनिवार्य है। पाठकों को अधिक जानकारी के लिए एक दृष्टांत प्रस्तुत है।

हिमालय में स्थित कैलाश शिखर पर एक विचित्र स्थान है जो साधकों के मन को सदैव प्रसन्न करता है। यहाँ शीतल मन्द वायु चलती है। अप्सराओं के मधुर गानों से वह स्थान गूँजता रहता है। वहाँ हर समय वसन्त बना रहता है सिद्ध चरण, गंधर्व, नन्दी और गणपति आदि शिवगणों से वह स्थान सर्वदा घिरा रहता है जहाँ महादेव विराजमान हैं। एक समय भगवान शिव बोले—हे पार्वती ! संसार में ऐसा आदमी नहीं है जिसको किसी कार्य की आवश्यकता न होती हो। तथा ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसमें मन्त्र की आवश्यकता न पड़ती हो। हाँ अनेक व्यक्ति बिना मन्त्र के ही कार्य करते हैं। सो हे पार्वती उनके सब कार्य इस प्रकार निष्फल हो जाते हैं जैसे बिना पानी के खेती सूख जाती है संसार में जितने कार्य हैं सब में मन्त्रों की आवश्यकता होती है। हे सुमुखी कलयुगी लोग हर बात में अविश्वास करके तंत्र के विरुद्ध आचरण करेंगे और मेरे कहे उपायों में बाधा डालेंगे। इसलिए पूर्वोक्त युक्तियों को मैंने कील दिया है अथवा उनको वह ही सिद्ध कर सकता है जो संसार में

अपने प्राण की चिन्ता न करे और जिसके मन में भय निवास न कर सके।

हे पार्वती ! इस विद्या का सच्चा अधिकारी वही है जो गुरु का भक्त हो और जिसका मन चंचल न हो वह ही इन मंत्रों का अधिकारी हो सकता है जिसके हृदय में विश्वास नहीं उसे ये मंत्र कभी सिद्ध नहीं हो सकते। यह बात आज भी उतनी ही महत्व-पूर्ण है जितनी उस युग में थी। साधक को चाहिए वह निष्ठा-पूर्वक श्रद्धा के साथ मंत्र जाप करे और यह विश्वास बराबर बनाए रखे एक दिन सिद्धि उसके अवश्य चरण छूयेगी।

मन्त्र साधना कैसे करें

मंत्र ध्वनि विज्ञान पर आधारित है। यह बात वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा बार-बार प्रमाणित हो गयी है। उच्चारण में जो ध्वनि आघात होता है, जिसके कारण उत्पन्न वायुकम्पन अपना यथेष्ठ प्रभाव दिखलाता है। मन्त्र का केवल जाप मात्र करने से ही अभीष्ट लाभ नहीं मिलता है, आवश्यकता यह है कि उनकी भावना अर्थ और उच्चारण क्रम को समझकर उनका विधिवत् उच्चारण किया जाये, तभी उनसे अभीष्ट फल प्राप्त होता है। ग्यारह, इक्कीस, इक्यावन, एक सौ आठ, पन्द्रह सौ हजार जाप करने से भी कुछ नहीं होगा, जब तक कि उनको ठीक तरह से समझ न लिया जाये।

मूल मंत्र वास्तविक स्वरूप मंत्रों का क्या है मंत्रों का आकार, प्रकार संयोजित एवं नियोजित होने वाले तत्व क्या हैं। मंत्र क्या स्थूल रूप है, सशरीर है अथवा निराकार भावना स्वरूप इत्यादि मंत्र से सम्बन्धित समस्त जिज्ञासाओं का एक-मात्र उत्तर यह है कि मंत्र का रूप न तो स्थूल है और न इनका भौतिक तत्वों द्वारा निर्मित कोई शरीर है। मंत्रों की स्थिति संयोजन यदि शरीर धारियों की ही तरह होता तो इनमें क्षण-भंगुरता सीमितता नाशवान जुड़ जाती तथा गुण दोष सम्बन्धी स्थितियां भी। इस दशा में एक निश्चित अवधि के बाद मनुष्य के समान इनका अवसान हो जाता। लेकिन ऐसा न होने के कारण ही इनकी स्थिति अमर है और काल के परे भी इनकी गति है। मंत्र ईश्वर स्वरूप हैं निराकार हैं इसलिए इनकी

सामर्थ्य क्षमता असीम है। एक ही समय में एक ही मंत्र असंख्य साधकों को सिद्धि दे सकता है। निराकार होने के कारण क्षमता, प्रभावशक्ति तथा विस्तार भावना इनकी असीम है। किसी भी प्रकार के पाप से परे होकर शक्ति सम्पन्न असाधारण रूप से सामर्थ्यवान् और वेगवान है, और इनमें असीम ऊर्जा की तीव्र विस्फोटक तथा तुरन्त प्रभावकारी शक्ति है। अपने असीम सामर्थ्य, तथा अपरिमित वेग तथा प्रभाव शक्ति के ही मन्त्र, साधक और मंत्र शक्ति के बीच सफल सूत्र बनाती है।

उदाहरणार्थ एक साधक साधना करते समय किसी देवी देवता का मत्र पढ़कर समर्पित कर नाम की मंत्राहुति देता है, तो वह मंत्राहुति अभीष्ट देवता के व्यक्तित्व को जाग्रत करती है और लौटकर प्रेषक को ही संप्रेषित होती है। संप्रेषित दशा में उस देवता की शक्ति भी लौटकर आने पर साधक को उस देवता की कृपा प्राप्त होती है। इसी कारण मंत्रों की भावना शरीर साधक की साधना शक्ति को स्वीकार कर बदले में अपनी शक्ति का प्रसाद देकर उसकी उदात्तता जाग्रत करता है। मंत्रोच्चारण का यही विधान है। मंत्र साधक और ईश्वर के बीच संप्रेषण की स्थिति है यह दोनों को मिलाने में पुल का कार्य करती है मंत्रों के मूल स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत मंत्रों के आत्मिक तत्व की भी जानकारी साधक को अब हो जानी चाहिए। मंत्र को पूर्ण रूप से समझाने के लिए यह ज्ञान भी आवश्यक है।

मंत्र की आत्मा क्या है? क्या यह विखंडन और संयोजन क्रम में है? इया इसका शिव स्वरूप है अथवा यह अणु परमाणुगत है।

ब्रह्मांड का नश्वर और अनश्वर तत्व तीन यौगिक धारण करता है शक्ति शिव तथा परमाणु। यह निर्गुण यौगिक सक्षम और स्थूल सबकी प्राण-शक्ति है। इससे मुक्त न तो स्थूल है और न सूक्ष्म मंत्र में भी इन तीनों तत्वों का सन्तुलित संयोजन है। मंत्र में शिव और शक्ति दोनों ही विद्यमान हैं। शिव निरापद निर्भय, अजर-अमर है, शक्ति में आनन्द और आकर्षण शक्ति है। अतएव इसके टुकड़े सम्भव नहीं हैं। इन दोनों का ग्रहण कर्त्ता आत्मतत्व सूक्ष्माति सूक्ष्म परमाणु रूप है। अतः इनका संयोजन ही ब्रह्मांड की स्थिति व्यवस्था है। परिवर्तन, नाश और सृजन है।

मंत्र इन तीनों का यौगिक स्वरूप है आत्मतत्व दैवी स्थिति है शक्तिशाली अपवर्तनीय व्यक्तित्व शिवत्व की पूर्ण अभि-व्यक्ति में समर्थ है। शिव और शक्ति को पूर्ण सन्तुलित एकत्व के कारण ही मंत्र भोग और मोक्ष दोनों ही को गतियाँ प्रदत्त करने में समर्थ तथा प्रभावी है।

मंत्र की आत्मा मंत्र में प्रतिष्ठित देवता को भी स्वीकार कर सकती हैं। इससे कोई अन्तर नहीं होता है। पर शिवत्व और शक्ति अन्ततः ईश्वरत्व ही है। अतएव मन्त्र के देवता इनका अपवाद नहीं हो सकते हैं। सच्चिदानन्द मंत्र रूप है वेदों की ऋचाएं ईश्वरोक्त कही गयी हैं। मंत्रों की शक्ति, प्रभाव का चमत्कार अथवा जो भी उपलब्धि प्राप्त होती है वह चाहे मन्त्र के देवता की कृपा के रूप में प्राप्त हो या कोई अन्य रूप से हो पर व्याख्या के उच्च स्तर पर आदि शक्ति के एक अंश के रूप में जानी जायेगी पर अनेक विचारक, योगी, महायोगी, हठयोगी ताँत्रिक सभी मन्त्रों के अधिष्ठाता सिद्धिदाता और

'र' मन्त्र वर्ग नियंत्रक के रूप में शिव मानते हैं। शिव मन्त्र के सिद्धिदाता हैं। मन्त्रों की आत्मा स्वयं शिव ही माने गये हैं। मन्त्र के सिद्धि धारक को भी मन्त्र की आत्मा माना जा सकता है।

मन्त्र और स्तोत्र में बड़ा अन्तर है। मन्त्र को न तो स्तोत्र की श्रेणी में रखा जा सकता है और न स्तोत्र की तरह उच्चारण ही किया जा सकता है। एक ही देवता का मन्त्र और स्तोत्र अलग-अलग होता है। फिर स्तोत्र मन्त्र की पूरक और सहायक स्थिति है। किसी देवता का मन्त्र सिद्ध करने के पूर्व यदि स्तोत्र को पूरक और सहायक स्थिति के रूप में अपनाया जाय नियमतः तव मन्त्र की सिद्धि प्राप्त होती है। स्तोत्र की रचना कोई भी कर सकता है। मन्त्रों के साथ ऐसी स्थिति नहीं है मन्त्र में स्थापित शव्दों को वदलना असंभव है। शव्दों की वात क्या मंत्रों के विसर्ग और अनुस्वार तक नहीं वदले जा सकते हैं। वदलने पर अन्तर पड़ सकता है। मन्त्र के मूल स्वरूप में रचनामात्र भी परिवर्तन संभव नहीं है। यदि मन्त्र के स्वरूप में हेर-फेर किया जाए तो मन्त्र अपनी प्रभावशाली शक्ति को खो वैठता है। इस प्रकार अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

मन्त्र की सिद्धि में उच्चारण दोष भी वाधक है। मन्त्र की सिद्धि के लिए साधक को मन्त्र का अर्थज्ञान भी आवश्यक है। स्तोत्र, स्तुति और प्रार्थना इनका एक ही स्तर है। मन्त्र का स्तर इन सबसे ऊँचा है। मन्त्र का शव्द रूप अपरिवर्तनीय है। मन्त्र और स्तोत्र में यही मूलभूत अन्तर है।

वैसे मानव मन दो दशाओं में विभाजित है। वाहरी मन, आंतरिक मन। जीवन के कार्यों में मनुष्य का वाहरी मन आगे

रहता है सिद्धि के कार्यों में मनुष्य का आंतरिक मन आगे रहता है वाहरी मन सव आंतरिक मन का सहायक और पूरक बन जाता है। वाहरी मन चंचल होता है अन्तर्मन विवेकशील, नैतिक अनुशासित होता है। पर सवका अन्तर्मन एक सा नहीं होता और न सबके अन्तर्मन की शक्ति एक जैसी होती है।

साधक साधना, पूजा द्वारा अपने अन्तर्मन की शक्ति वढ़ा सकता है। अन्तर्मन की शक्ति असीम है चरमोत्कर्ष में तो यह ईश्वर ही हो जाता है। साधारण की अपेक्षा ऋषि, मुनियों तथा सन्तों का अन्तर्मन अधिक शक्तिशाली होता है।

मन्त्र की साधना शुद्ध है और वह निर्धारित जप पूरा करनें के उपरान्त सिद्धि प्रदान करेगी ही। मन्त्र साधना में व्यक्तित्व मूल्यांकन की स्थिति सीमित है। मन्त्र के भाव को मन्त्र तक ही सीमित रखना पड़ता है।

जप संख्या की कोई सीमा निर्धारित नहीं है अत: फल प्राप्ति में विलम्व अथवा शीघ्रता हो सकती है वाध्यता का कोई प्रश्न नहीं है जवकि मन्त्र के साथ वाध्यता जुड़ी है। अनिवार्य फल प्राप्ति में जो वाध्यता मन्त्र के साथ है वह स्तुति में नहीं है। इस समानता के होते हुए भी मन्त्रों का व्यक्तित्व सर्वथा अलग है।

किसी मन्त्र को सिद्ध करने के पश्चात सिद्धि के रूप में जो विलक्षण शक्ति प्राप्त होती है, उसे प्राप्त कराने की शक्ति मन्त्र में कहाँ से आती है ? क्या साधक की साधना से उत्पन्न कोई विशिष्ट ऊर्जा मन्त्र को सामर्थ्यवान बनाती है अथवा मन्त्र का देवता इस शक्ति को स्वयं देता है। मन्त्रों में शक्ति और कृपा का यह दुर्लभ चमत्कार है ?

मन्त्रों की शक्ति कितनी असीम है कि साधक एक हो अथवा अनेक वे विश्व के किसी भी भू भाग में साधना करें पर सफल साधना द्वारा सिद्धि सभी को प्राप्त होना सम्भव है।

मन्त्रों की प्रभाव क्षमता शक्ति काल समय, वातावरण ऊँचाई नीचाई दूरी इत्यादि किसी से भी बाधित नहीं है। मन्त्रों की क्षमता और स्वरूप अपरिवर्तनीय है। इनमें संशोधन परिवर्तन या कल्पना असम्भव है। सभी प्रकार के मन्त्रों की शक्ति ऐसा चमत्कार है कि उसकी पूर्ण व्याख्या करना सम्भव नहीं है।

मन्त्रों का वैज्ञानिक रूप इस सृष्टि की स्थापना के पूर्व से ही स्थापना के विकास के घटनाक्रम में भी मन्त्रों को प्रमुख देवी-देवताओं, ऋषि मुनियों योगियों तांत्रिकों द्वारा स्थापित किया गया है। इनके सम्वन्धित देवता ने अपने द्वारा शक्ति रूपी दान दिया है। इस प्रकार मन्त्रों में अपने देवताओं की गुप्त शक्ति सामर्थ्य वनकर सदैव छायी रहती है। मन्त्रों में व्याप्त शक्ति तव तक सुप्तावस्था में रहती है जव तक कि साधक अपनी शक्ति द्वारा उसे जाग्रत नहीं करता है। मन्त्रों में साधक की साधना भी शक्ति जाग्रत करने का कार्य करती है। यह मान्यता सत्य है। जव कोई मन्त्र साधक, साधना आसन पर एकाग्रचित होकर साधना में प्रवृत्त होता है तो उसका अंतर्मुखी व्यक्तित्व स्वयं मुखर हो उठता है। इस दशा में वह साधारण से विशिष्ट हो जाता है। मंत्रों में व्याप्त शक्ति तव जाग्रत होती है। साधक की साधना से मन्त्रों की शक्ति या सामर्थ्य प्राप्त नहीं होती है वरन् जाग्रत होती है। वह साधना से पूर्व सुषुप्तावस्था में रहती है। मन्त्रों की शक्ति का जागरण अन्तश्चेतना के द्वारा होता है। क्योंकि वाहरी चेतना तो इसकी तुलना में

स्थूल है यह जीवन के क्रिया-कलापों तक ही सिकुड़ी रहती है इसका कार्य व्यापार सीमित रहता है। अन्तश्चेतना इन सबसे मुक्त होती है। मन्त्रों में शक्ति और प्रभाव उनके जन्म से ही स्थापित है। साधना और सिद्धि के पूर्व मन्त्रों की प्रभावशक्ति सुषुप्तावस्था में रहती है। साधक की साधना ही इन्हें जाग्रत करती है। साधक की पूर्णता से अन्तश्चेतना धरातल पर मन्त्रों की शक्ति का उदय होता है।

मन्त्र मूल रूप से जिन देवताओं के आधीन हैं उनका वर्ण क्रम इस प्रकार है। देववर्ग—शिव, ब्रह्मा, विष्णु गणेश समस्त देवगण तथा देवियाँ। पिशाच वर्ग—समस्त प्रकार की तमोगुणी सिद्धियाँ, क्षूद्र साधनायें तथा भौतिक सिद्धियाँ पिशाच वर्गीय तथा आसुरी शक्तियों के आधीन हैं। इनके मन्त्र असुरों-राक्षसों, कृत्याओं भूत प्रेतों, पिशाचों वेतालों, डाकिनियों, शंखनियों दैत्यों, भुजंग इत्यादि के आधीन हैं।

यक्ष वर्ग, रुद्र, नंगल, गरुड़. गंधर्व, यक्ष किन्नर, किरात रक्ष, इन्द्र, विद्याधर योगभाषाएँ सिद्ध इत्यादि दूसरे वर्ग के ये समस्त मन्त्र यक्ष वर्ग अर्थात गंधर्व वर्ग के आधीन हैं इन मन्त्रों के द्वारा रजोगुणी तथा तमोगुणी साधनायें पूरी की जाती हैं।

जटिल साधना द्वारा सिद्धि प्रदान करना मन्त्र की जाग्रत स्थिति है। किसी भी मन्त्र का सिद्ध होना एक लम्वी प्रक्रिया को पारकर प्राप्त होने वाली दुर्लभ स्थिति है।

इस कठिन सिद्धि में सवसे प्रवल रूप से जुड़ा मानसिक जप है। समस्त प्रकार की सतोगुणी, रजोगुणी तथा तमोगुणी साधनाओं में मन्त्र का मानसिक जप सर्वोपरि है। साधारण साधक भी मानसिक जप के प्रभाव से पूर्ण परिचित है। लेकिन वास्तव

में उतने तक ही सीमित नहीं है। जिस किसी भी मन्त्र का साधना में जप विधान का उल्लेख है उसका आशय मानसिक जप से ही है। तन्त्र शास्त्रों ने मानसिक जप को वास्तविक जप माना है। शास्त्रों ने मानसिक जप शुद्धता का ध्यान रखने पर बल दिया है। मानसिक जप का प्रभाव और फल साधक को तुरन्त प्राप्त होता है। मन्त्र साधना के मानसिक जप कर्त्ता का मन्त्रोच्चार अपनी समस्त ध्वन्यात्मक विशेषताओं सहित शुद्ध उच्चारण सहित केवल मौन रूप में ही होना चाहिए। साधक की मन्त्र पर श्रद्धा, आस्था तथा विश्वास भी होना चाहिए। मन्त्र जप करते समय साधक निर्विकार भाव से जप में संलग्न होना चाहिए।

साधक जव एकाग्रचित हो मन्त्र का जप करता है तो उसके वाहरी अवयव स्थिर हो जाते हैं लेकिन आंतरिक अवयवों की क्रियाशीलता वढ़ जाती है। मन की इस दशा को नियन्त्रित करने के लिए साधक को एकाग्रता की आवश्यकता पड़ती है जिसे साधक साधना द्वारा प्राप्त कर सकता है। स्मरण रखें शक्ति का आगमन मानसिक स्तर पर ही होता है। मन के स्वतन्त्र कार्य को नियन्त्रित कर उसे शक्तिमय जगत की यात्रा की ओर गतिशील वनाना पड़ता है। जिस प्रकार योग में इन्द्रियों तथा मन को नियन्त्रित करना पड़ता है। उसी प्रकार का प्रयत्न यहाँ भी करना पड़ता है, यहाँ मन्त्र शब्द माध्यम वनता है।

जप के समय इन्द्रियाँ न तो सुप्त होती हैं न तो मृत अवस्था में ही होती हैं वरन् नियन्त्रित होने के कारण ये सुषुप्त अवस्था में होती हैं। अतएव साधक को सतर्कतापूर्वक अर्जित स्थिति

के बराबर बनाए रखने के लिए मन और इन्द्रियों को पूर्ववत नियन्त्रित किए रहना चाहिए। साधक की यह अवस्था निर्मल और सतोगुणी होती है इस दशा में साधक के मन और प्राण एक विचित्र प्रकार के आनन्द से भर जाते हैं। आनन्द तो अदृश्य रहता है लेकिन अनुभूति अपने चर्मोत्कर्ष में रहती है। यह स्थिति साधक को अपने सत्कर्मों वश अर्जित संस्कारों के बल पर प्राप्त होती है।

यदि साधक को यह अवस्था प्राप्त हो जाए तो उसे पीछे नहीं लौटना चाहिए। मन को सांसारिक आकर्षणों से मुक्त इसी दशा में रमा देना चाहिए। इस दुर्लभ स्थिति को स्थायी बनाये रखने के लिए एकाग्र और समर्पित जप का क्रम निरन्तर बनाये रखना चाहिए। यह दशा और भी उन्नत अवस्था को प्राप्त करती है। जिसमें सत्व परम तत्व पूर्ण उद्दीप्त होकर परम शिव के दुर्लभ रूप का दर्शन कराते हैं। साधक स्वयं मंत्र-मय हो जाता है। काम्य कर्मों तथा भौतिक सिद्धियों में आसक्त साधक अपने अनुष्ठान को केवल लक्ष्य तक ही सीमित रखता है। उसे प्राप्त करने के बाद वह पीछे लौट आता है। इसके विपरीत सत्वगुण को प्राप्त करने का इच्छुक साधक आगे ही बढ़ता जाता है। मानसिक जप की यह विशेष बात है कि यह हमें स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाता है आंतरिक साक्षात्कार कराता है। इसमें गुरु कृपा हमारी गतिशीलता को लक्ष्योन्मुखी बनाये रखने में सहायता करती है।

साधक को निर्भीक और दृढ़ विचारों का होकर मानसिक जप में जुटे रहना चाहिए।

स्त्री मन्त्रों और नर मन्त्रों, दोनों ही मन्त्रों, देवी देवताओं के मन्त्रों की भी स्त्रियों को पुरुष साधक की अपेक्षा शीघ्र सिद्धि

प्राप्त हो जाती है। पुरुष साधकों की मन्त्र साधना कठिन होते हुए भी पुरुषों की संख्या सदैव ही अधिक रही है। यह आश्चर्य की वात है कि स्त्रियों की मन्त्र साधना विशेष सुगम होते हुए भी स्त्री साधिकाओं की संख्या सदैव कम रही है।

विवाहित या अविवाहित स्त्री पूर्ण तपस्विनी बनकर किसी योग्य तांत्रिक को अपना गुरु मानकर समर्पित भावना से कोई भी साधना करे तो उसे शीघ्र सफलता प्राप्त होगी। यहाँ स्त्री साधकों के लिए "मानसिक जप" का महत्व सर्वोपरि है। स्त्रियों के लिए मानसिक जप पुरुष साधकों की अपेक्षा महत्वपूर्ण है। वे केवल मानसिक जप के वल पर ही मन्त्र को सिद्ध करने की सामर्थ्य रखती हैं। वरन मन्त्र का जप करके ही उस सिद्धि को प्राप्त कर सकती हैं, जिसे प्राप्त करने में पुरुष साधक को अनेकों उपकरण जुटाने पड़ते हैं।

साधना के क्षेत्र में स्त्री साधकों को पुरुष साधकों की अपेक्षा विशेष सुख-सुविधायें प्राप्त हैं। इन सुविधाओं के कारण स्त्रियों को शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो सकती है। साधिका को समस्त पालनीय नियमों का पालन करना पड़ता है उसे कुछ छूट और विशेष सुविधा यह प्राप्त हो जाती है कि साधना करने वाली स्त्रियों को अन्य कोई वन्धन नहीं है। स्त्री साधक को केवल मानसिक जप के वल पर भी सिद्धि प्राप्त हो सकती है। मन्त्र साधना करने वाली स्त्रियों पर गुरु वनाने का भी कोई विशेष वन्धन नहीं है। इस विषय में विवाहित स्त्री अपने पति को गुरु के रूप में मान सकती है। यदि स्त्री साधक का पति उसके गुरु की पात्रता नहीं रखता है तो उसे देवताओं तथा देवियों में से किसी को अपना गुरु मान लेना चाहिए। इससे शीघ्र मन्त्र सिद्धि प्राप्त होगी। मन्त्र का जप धीमी गति से करें। मन्त्र के संयुक्ता-

क्षरों हलंत विसर्ग एवं चन्द्र बिंदु तथा ह्रस्व-दीर्घ ईकार उकार अकार इत्यादि का यथा रूप सस्वर अथवा मौन जप करना चाहिए। शरीर हिलाना, अंग संकोचन क्रिया तथा लिखकर मन्त्र का जप करना एकदम वर्जित है। मन्त्र का अर्थ जानना भी आवश्यक है। मन्त्र का अर्थ समझे विना मन्त्र का जप करना उचित नहीं है। विशेष वात यह है कि शावर मन्त्रों पर यह नियम लागू नहीं होता है। जप काल में मन्त्र के किसी शब्द को भूल जाना, अनावश्यक पुनरावृत्ति कर वैठना तथा अर्थ भूल जाना भी त्रुटि माना गया है। मन्त्र जप के साथ ही मन्त्रार्थ का भी ध्यान करते रहें।

मन्त्र जप की संख्या भी सन्तुलित होनी चाहिए। संख्या सम हो तो अच्छा है।

मन्त्र जप के पहले दिन मन्त्र का जितनी संख्या में जप किया जाये प्रतिदिन उतनी ही संख्या में मन्त्र का जप करना चाहिए। इस क्रम में मन्त्र जप की संख्या कम करना अथवा किसी दिन वढ़ा देना भी दोष युक्त है। जप काल में स्थान का आसन वदलना भी वर्जित है।

मन्त्र साधना में यह व्यवस्था भी है कि पात्रता रखने वाली कोई भी स्त्री साधना कर सकती है।

आहार ग्रहण करते समय निद्रा त्याग करने के तुरन्त बाद ही जप करना वर्जित है। जव किसी कारण वश चित्त अस्थिर तथा अशांत हो तव मन्त्र का जप स्थगित कर दें। जप काल में पैर फैलाना या पैर फैलाकर जप करना निषिद्ध है।

मन्त्र सिद्धि प्राप्त पुरुष इन नियमों वन्धनों से मुक्त स्थिति में है। वह जव मन्त्र सिद्ध कर मन्त्र शक्ति का अधिकारी हो

चुका है स्वयं मन्त्र निष्ठा स्वरूप को प्राप्त कर चुका है तो वह जाग्रत निद्रित, पवित्र अवस्था तथा अन्य कार्यों को करने के क्रम में जप करने का अधिकारी है। वह सभी अवस्थाओं में जप करते रहने का अधिकारी है। उसके इस विशेषाधिकार का कारण यह है कि मन्त्र सिद्ध अवस्था में मन्त्र निष्ठ स्वरूप में स्वयं मन्त्र उसके पास निवास करने लगता है।

जप का क्रम भी भंग नहीं होना चाहिए।

मन्त्र के दशांश हवन का भी यथा शक्ति एवं नियम से पालन करें। यदि यह सम्भव न हो सके तो कम-से-कम बोले। असत्य सम्भाषण, क्रोध, जलन, निन्दा तथा कटुवचन साधक के लिए त्याज्य हैं।

जप काल में अगर बोलना विवशता बन जाये तब बोल लें पर पुनः प्रभु का ध्यान कर अंगन्यास करें। यदि जप काल में साधक को नित्यकर्म की निवृत्ति की आवश्यकता अनुभव हो तो वह इनके वेग को न रोके। नित्यकर्म से निवृत्त होने के पश्चात पुनः स्नान कर वस्त्र परिवर्तन कर अंगन्यास कर साधना करने में प्रवृत्त हो। मन्त्र का जप करते समय छींकना, क्रोध, तृष्णा तथा जननेन्द्रिय स्पर्श एवं शरीर खुजलाना वर्जित है। आसन को दोष से मुक्त स्थिति में रखना चाहिए। किसी कारण वश आसन दोष से ग्रसित हो जायें तो गंगाजल से प्रक्षालित करें। मन्त्र साधना में एक वस्त्र धारण कर साधना करना वर्जित है। कम से कम दो या तीन वस्त्रों को धारण कर मन्त्र साधना करनी चाहिए। लंगोट का अवश्य ही प्रयोग करें।

मनसा, वाचा, कर्मणा और ब्रह्मचर्य का पालन करें।

साधना काल में साधक अपने इष्ट का ध्यान कर पूजन

हवन और यज्ञ कर्म करते हुए उसकी आराधना करें। त्रिकाल स्नान करें। नित्य पूजा भी करें। नित्य ध्यान धरें। इस शृंखला में उत्पन्न होने वाली वाधाओं से तनिक भी विचलित नहीं होना चाहिए।

भयभीत होने की स्थिति अपरिपक्वता की सूचक है।

मन की एकाग्रता प्राप्त होते ही साधक की अन्तश्चेतना जाग्रत हो जाती है। ध्यान की एकाग्रता को समय-२ पर स्वयं भी परखते रहना चाहिए। मन वड़ा चंचल है। देह धर्म से प्रेरित होकर सांसारिक विषयों के प्रति सहज ही आकर्षित होकर उसमें रम जाता है।

इसलिए साधक को कुछ नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करना चाहिए इन नियमों का पालन न करने से साधना पूर्ण और सिद्धिदात्री नहीं हो पाती है। इन्हीं तथ्यों के प्रति तन्त्र साधक को आकर्षित कर इनमें पालन करने का निर्देश देता है।

मन्त्रों की साधना के अनुष्ठान में स्थान का भी महत्व है। कई वार तो साधना स्थल का विशिष्ट प्रभाव ही साधक को विशिष्ट शक्ति वनकर उसकी मन्त्र साधना को सफल वना देता है। इसी को ध्यान में रखकर वन उपवन, श्मशान का निर्देश दिया गया है। साधना सामान्यतः गुफा, पर्वत, शिखर, नदी, उपवन, पीपल, वृक्ष तथा तुलसी के समीप करना शीघ्र सिद्धिदायक है।

मन्त्र साधक को भोजन की शुद्धता पर भी ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह भी उसकी सफलता का एक अंग है। भोजन के तीन दोष हैं—जाति दूषित, आश्रय दूषित तथा निमित्त दूषित।

जिस घर में अन्याय द्वारा उपार्जित द्रव्य से भोजन का निमित्त बने, तामसिक पदार्थों का सेवन किया जाता हो जिस घर के प्राणी अशांति तथा कलह से ग्रस्त तथा नास्तिक हों उनका आहार कभी ग्रहण न किया जाए। अपवित्र स्थान पर भोजन, तामसी प्रवृत्ति के साधक द्वारा स्पर्श किया आश्रम दोष प्रभावित माना है। ऐसा आहार भी साधक के लिए दोष के कारण त्याज्य है। जुआघर या मदिरालय में रक्खा हुआ दूध हालांकि शराव से अलग है। फिर भी वह आश्रय दूषण के कारण दूपित ही माना जाएगा साधक को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आश्रय दोषों से दूर रखना चाहिए।

विधि से तथा पूर्ण शुद्धता से वनाये हुए भोजन पर यदि किसी अन्य प्राणी की साधक के ग्रहण करने के पूर्व ही लालायित दृष्टि पड़ जाती है तो ऐसा भोजन भी कुदृष्टि से प्रभावित होने के कारण निमित्त दोष ग्रसित हो जाता है। इन दूषणों से प्रभावित अथवा इनमें से किसी भी एक दोष से प्रभावित आहार साधक के लिए त्याज्य है। साधना काल में साधक केवल एक वार भोजन करे। अल्पाहारी रहे अर्थात कम भोजन करे।

साधक को स्त्री चर्चा, सम्पर्क स्मरण तथा वार्तालाप से दूर रहना चाहिए। यदि मन्त्र साधक गृहस्थाश्रम में है तथा पत्नी के साथ रहना विवशता है तब भी वह पत्नी से सीमित वार्तालाप करे। रसिक चर्चा और सहवास तो साधक के लिए किसी भी मन्त्र का जप करने से पूर्व त्याज्य हैं, उस मन्त्र के देवता का ध्यान करें।

कार्तिक, आश्विन, वैशाख, माघ, मार्गशीर्ष, फाल्गुन और श्रावण मास जप के लिए उत्तम कहे गये हैं।

पूर्णिमा, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, दशमी और त्रयोदशी शुभ है लक्ष्मी मन्त्रों के लिए द्वितीया, शक्ति मन्त्रों के लिए तृतीया गणपति मन्त्रों के लिए चतुर्थी, सुर्य मन्त्रों को सप्तमी, सरस्वती मन्त्रों के लिये त्रयोदशी और पूर्णिमा को प्रारम्भ किया गया सभी देवों के मन्त्रों का पूर्ण लाभ मिलता है।

शुक्ल पक्ष में शुभ चन्द्र और शुभ वार देखकर तिथि निर्णय करना होगा।

रविवार, शुक्रवार, बुधवार और बृहस्पतिवार अधिक फलदायक होते हैं। पुनर्वसु, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, रेवती, अनुराधा और रोहिणी नक्षत्र मन्त्र शास्त्र में उत्तम माने गए हैं।

वाघचर्म, कुशासन, मृगचर्म और ऊन से निर्मित आसन उत्तम माने गए हैं।

रुद्राक्ष, तुलसी, स्फटिक, हाथी-दाँत, मूंगा और लाल चन्दन तथा कमल की माला होनी चाहिए। रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ है।

मुक्ति प्रद प्रयोग में २७ और अभिचार मंत्रों में पन्द्रह दाने की माला प्रयोग की जाती है।

साधना के वक्त उबटन तेल सौन्दर्य प्रसाधन त्याग देना चाहिए। अपवित्र शरीर से लोलुपता के वशीभूत होकर, साधना में संशय ग्रस्त होकर, विना स्नान किये विना शुद्ध वस्त्र धारण किये साधक को साधना नहीं करनी चाहिए, नग्न अवस्था में मंत्र पर आस्था न होने पर चित्त खिन्न होने पर तथा एकाग्र न होने पर मंत्र साधना में प्रवृत्त न हों। सुगन्धित द्रव रागानु-

भूति प्रेरक वस्त्र तथा कपड़े की वस्तुओं का भी प्रयोग न करें। मंत्रानुष्ठान काल में यदि मरण अशौच अथवा प्रसव में उत्पन्न अशुद्धता उत्पन्न हो तो अपना अनुष्ठान भंग न करें। स्थल को गंगाजल से पवित्र करें तथा स्वयं भी गंगाजल पीकर तथा प्रक्षालन कर अनुष्ठान प्रारम्भ रखें।

पुरुषों के लिए मंत्रानुष्ठान के सात अंग अनिवार्य हैं। जप होम, तर्पण यज्ञ, अभिषेक ब्रह्म भोज तथा दान वहीं पर स्त्रियाँ केवल एक विधान अर्थात् मंत्र जाप का विधान पूरा कर सिद्धि प्राप्त कर सकती हैं।

स्त्रियों में गोपनीयता और मनन शक्ति पुरुषों से अधिक प्रखर होने के कारण वे मंत्र सिद्धि को अधिक प्रभावशाली रूप में पाने में समर्थ होती हैं। मंत्र साधना इत्यादि कार्यों को पूर्ण रूप से गोपनीय रखना भी परम आवश्यक है।

तन्त्र में साधना की अपनी शक्ति है और इसके द्वारा जो अद्‌भुत शक्ति प्राप्त होती है वह अवर्णनीय है। मन्त्रों के भीतर शक्ति निश्चित है, जब तक हम निष्ठा एवं नियमपूर्वक साधना न करेंगे, तब तक हम कुछ नहीं पा सकते। निष्ठा के साथ इसकी साधना कर हम वह प्राप्त कर सकते हैं, जो इनमें निहित है। मंत्र झूठ या गलत नहीं हैं। सत्य तो यह है कि हम उनकी सही समझ नहीं रखते। पानी में आग तो नहीं लग सकती। उसके लिये मिट्टी का तेल या पैट्रोल अथवा ज्वलनशील द्रव्य आवश्यक है। इसी प्रकार मंत्रों की सिद्धि की अपनी आवश्यकता है, तभी वह सिद्ध होते हैं। यह शक्ति तभी तक रहती है जब तक कि उसका दुरुपयोग न किया जाए।

सिद्धि प्राप्त होने पर उसका प्रदर्शन, दुरुपयोग खिलवाड़

करना वर्जित है। स्वयं के कल्याण अथवा जनकल्याण के कार्य में इसका प्रयोग करना ही हितकर है अन्यथा इसका दुरुपयोग करने वाले का अन्त समय बड़े ही कष्ट और दुःखद दशा में बीतता है।

साधक और विधान

साधकों की इच्छा असीम हैं। अपनी-अपनी शक्ति आवश्यकता, रुचि एवं कार्य के अनुसार साधक विभिन्न वस्तुओं को प्राप्त करने की साधना करते हैं। इनमें से कुछ तो प्राप्त हो जाती हैं और कुछ साधना करने पर भी अप्राप्य ही बनी रहती हैं। स्त्री, धन, पुत्र इत्यादि की कामनायें तो समान रूप से लगभग सब में पाई जाती हैं। इनके पाने के लिए साधक को कुछ न कुछ करना पड़ता है। इस कार्य के लिए तांत्रिक मार्ग को उत्तम माना गया है—

"ब्राह्मणाः शूद्राल्पाश्च भविष्यन्ति कलौयुगे। तेषामागम (तांत्रिक) मार्गेण सिद्धिर्न श्रौतवर्त्मना ॥" इसी मार्ग को यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र और साधारण भाषा में तन्त्रोक्त साधना कहा जाता है। तन्त्र मार्ग ही कलियुग में सरल, सुगम और शीघ्र सिद्धि देने वाला है। इस मार्ग से सिद्धि को प्राप्त किया जा सकता है—विधि का ज्ञान होने पर सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है। सिद्धि के लिए गुरु का होना आवश्यक है। पुस्तकें तो केवल मार्ग दर्शक होती हैं। इसलिए प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह किसी भी साधना को प्रारम्भ करने से पहले इस विषय के विशेषज्ञ या गुरु की शरण अवश्य प्रान्त कर ले। भारत में तांत्रिकों की कमी नहीं है। साधक उनके सामीप्य को सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है।

साधक में साधना के प्रति लगन और विश्वास भी होना चाहिए। अविश्वासी को तो साधना करनी ही नहीं चाहिए अन्यथा इसका विपरीत फल भी हो सकता है। भीरू या पापी साधक भी साधना न करें, क्योंकि मन चंचल रहने के कारण हानि उठानी पड़ती है। संयमित जीवन व्यतीत कर सकने वाले दृढ़ निश्चयी, संयमी व उपकारी लोगों को ही तन्त्र साधना करनी चाहिए क्योंकि भगवान शंकर ने पार्वती को इन रहस्यों को परोपकार की भावना से ही बतलाया है जिससे पृथ्वी लोक में मनुष्य प्रयोग कर अपनी सुरक्षा के साथ जन-कल्याण भी कर सकें। तन्त्रसार में लिखा है –

"जिह्वा दग्धा परान्ने न हस्तोदग्धः प्रतिग्रहात्।
मनोदग्धं परस्त्रीषु मन्त्रसिद्धिः कथं भवेत्॥"

अब साधक को कैसे साधना करनी चाहिए, उसका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है—

सर्वप्रथम साधक स्थान निश्चित करें। फिर स्नान, वन्दनादि कार्यों से निवृत्त होकर गुरु के पास जा प्रणाम कर, अपने अभीष्ट को उनसे कहे और मार्ग-दर्शन मांगे। फिर साधना का श्री गणेश करे।

सर्वप्रथम पवित्र होकर, एकांत स्थान में जायें। जिस मंत्र को जपना हो उसको शांत मन से भोजपत्र पर केसर की स्याही और आठ अंगुल की अनार की कलम से लिखकर कंठस्थ कर लें। जब कंठस्थ हो जाये तो निश्चित स्थान पर जाकर आगे बतलाए गए कर्मानुसार मंत्र जप करने के लिए आसन लगाकर बैठें। अब शरीर रक्षार्थ थोड़े सरसों के दाने पूर्व, पूर्व-दक्षिण (अग्निकोण), दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम (वायव्य कोण), पश्चिम,

पश्चिम-उत्तर, (नैऋत्य कोण), उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) ऊपर और नीचे अर्थात् पृथ्वी पर "ओं त्वं ब्रह्मो सर्वस्व रक्ष, रक्ष, पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा" कहते हुए दशों दिशाओं में छोड़ें। इससे समस्त विघ्न-बाधाओं से रक्षा होती है। इसे हम दशों दिशाओं को बांधना भी कह सकते हैं। फिर कलश स्थापित कर. अपने इष्ट की मूर्ति को सामने रख कर दीप जलायें तथा ज्योति को अपलक देखें। दीप कलश, इष्ट मूर्ति का क्रम से पुष्प, सुगन्धादिक धूप, दीप नैवेद्यादि से पूजन करें फिर भोजपत्र पर लिखे मंत्र की पूजा करें। गुरु पूजा करें और आशीर्वाद मांगें। गुरु के चरणों में शीश नवायें।

अब मंत्र को जपना प्रारम्भ करना चाहिए।

जब तक साधना पूर्ण न हो तब तक इन नियमों का पालन करें—

गुरु के पास जाने से लेकर सिद्धि के दिन तक फल-फूल अथवा चावल और मूंग की दाल जो स्वयं का पकाया हुआ हो का ही आहार करें। पृथ्वी पर मृग चर्म, बाघचर्म, वृक्ष की छाल या पत्ते बिछाकर शयन करें। आचरण पवित्र रखते हुए ब्रह्मचर्य से रहें। अपनी साधना को गुप्त रखें। कम बोलें। कहीं जाना हो तो रात्रि में जायें जिससे किसी से भेंट न हो, इस तरह कोई बाधा न पड़ेगी।

स्त्री साधकों के लिए नियम इस प्रकार है—

स्त्री साधक दिन में भी साधना कर सकती है। इन्हें पूर्ण निर्वस्त्र होने की आवश्यकता नहीं है परन्तु बिना सिला केवल एक वस्त्र धारण करें। खोपड़ी के स्थान पर नारियल तोड़कर आधा भाग काम में लावें। चौराहे के स्थान पर, घर पर ही

गोवर से चौका लीपकर क्रिया करें। श्मशान जाने की भी आवश्यकता स्त्री साधकों को विल्कुल नहीं है, केवल श्मशान की भस्म लाकर जपस्थान में साधना करते समय छिड़क सकती हैं। साधना काल में किसी पुरुष को सहयोगी बनाना आवश्यक है। साधिका को चाहिए कि वह पुरुष साधक से अंतरंगता उत्पन्न करें ! उससे सहयोग प्राप्त करें।

शान्तिक वस्यस्तम्भनादि विद्वेषोच्चाटने तथा।
मारणांतानि शंतति षट्कर्माणि मनीषिणः॥

भावार्थ—शान्ति कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण इन्हें छः षट्कर्म कहते हैं। हालांकि हमारे तांत्रिक ग्रन्थों में मारण, मोहन स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण यक्षिणी आदि का साधन और रसायन क्रिया के प्रयोग भी वतलाये गए हैं, उपरोक्त षट्कर्मों से अनेक प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं। जैसे—जल स्तम्भन, सर्प स्तम्भन, भूताकर्षण, उन्माद, उच्चाटन, परकाया प्रवेश, वैताल आदि की सिद्धि पादुका सिद्धि अंजन सिद्धि अंधीकरण, संकोचन, मूककरण, वधिरीकरण, मेघों का स्तम्भन भूत ज्वर-करण, दध्यदि वस्तुओं का नष्टीकरण, उन्मत्तकरण, मनुष्या-कर्षण, हाथी घोड़ों का प्रकोपन, शत्रु आदि का विनष्टीकरण, गुटिका सिद्धि शून्य मार्ग से जाना, मार्ग अवरोधन, मृत-संजीवनी तथा रौद्र विद्या की सिद्धि इत्यादि। इनका विवरण इस प्रकार है—

जिसके द्वारा रोग और ग्रहादिक की शांति होती है, उसे शांति कर्म कहते हैं।

जिसके द्वारा समस्त प्राणियों को वश में किया जाता है उसे "वशीकरण" कहते हैं।

जिसके द्वारा किसी जीव को रोक दिया जाता है उसे "स्तम्भन" कहते हैं।

जिसके द्वारा मित्रों के बीच में वैर-भाव उत्पन्न कर दिया जाता है, उसे "विद्वेषण" कहते हैं।

जिसके करने से किसी का मन उचट जाये, वह जहाँ है वहाँ से भागने का प्रयत्न करें, उसे "उच्चाटन" कहते हैं।

जिसके द्वारा प्राण हरण कर लिया जाये उसे (मारण) कर्म कहते हैं।

उपरोक्त कर्मों की देवियाँ इस प्रकार हैं---

शान्ति कर्म की रति, वशीकरण की सरस्वती, स्तम्भन की लक्ष्मी, विद्वेषण की ज्येष्ठा, उच्चाटन की दुर्गा, मारण की अधिष्ठात्री भद्रकाली है। जिस कर्म को करना हो तो उस देवी का पूजन कर साधना आरम्भ करें।

दिशाओं का विवरण इस प्रकार है।

शान्ति के लिए ईशान कोण, वशीकरण के लिए उत्तर दिशा, स्तम्भन के लिए पूर्व दिशा, विद्वेषण के लिए नैऋत्य कोण, उच्चाटन के लिए वायव्य कोण और मारण के लिए अग्नि दिशा की ओर मुँह करके आसन पर बैठकर साधना करनी चाहिए।

इन कर्मों के करने का समय इस प्रकार है—

दिन के प्रथम पहर में शान्ति कर्म, दूसरे पहर में वशीकरण और स्तम्भन, तीसरे पहर में उच्चाटन और विद्वेषण तथा चौथे पहर में मारणकर्म ही करना चाहिए। शान्ति कर्म हेमन्त ऋतु में, वशीकरण वसन्त ऋतु में, स्तम्भन कर्म सर्दी में विद्वेषण

ग्रीष्म में, उच्चाटन वर्षा में और मारण कर्म शरद ऋतु में ही करना चाहिए।

अगर समयाभाव हो तो ऋतु विचार त्याग कर इस प्रकार कर्म करना चाहिए—

दोपहर से पहले वसन्त, मध्य में ग्रीष्म, दोपहर के पीछे वर्षा, संध्या के समय शिशिर, आधी रात पर शरद और प्रातः काल हेमन्त ऋतु का भोग काल है, ऐसा समझना चाहिए। शान्ति कर्म में श्वेत, वशीकरण में लाल, स्तम्भन में पीले, विद्वेषण में लाल, उच्चाटन में धूम्र और मारण कर्म में काले रंग का विचार करें तथा वस्त्र उसी रंग का धारण करें। षट्कर्मों में इस प्रकार दिन का ध्यान रखें—

सोम, वुध, गुरु और शुक्रवार को शान्ति कर्म करें।
रवि तथा शुक्रवार को वशीकरण कर्म करें।
सोमवार व वुधवार को स्तम्भन कर्म करें।
शनि व रविवार को विद्वेषण कर्म करें।
उच्चाटन कर्म शनि मंगलवार को करें।

मारण कर्म शनि, मंगलवार व रविवार को करना चाहिए इसके अतिरिक्त शान्ति कर्म द्वितीया, तृतीया, कृष्णपक्ष की प्रतिपदा पंचमी व सप्तमी से शुभ है।

वशीकरण—दशमी, एकादशी, अमावस्या, नवमी और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को करें अच्छा माना गया है।

स्तम्भन—पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, अमावस्या को उत्तम है।

विद्वेषण—शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, नवमी और पूर्णिमा को शुभ समझें।

उच्चाटन कर्म--चतुर्थी षष्टी अष्टमी को उत्तम बतलाया गया है।

मारण--कृष्णपक्ष की चतुर्थी अष्टमी व अमावस्या को उत्तम समझें।

शान्ति कर्म, पुष्टी कर्म तथा शुभ कर्मादि अशुभ ग्रहों के उदय में ही करना उचित है। मारण कार्य मृत्युयोग में करना चाहिए। अति उत्तम शुभ तिथि अच्छा रविवार या सप्तमी तिथि का संयोग हो तो उसमें जो भी कार्य किया जाये, उसमें सफलता प्राप्त होती है ग्रहण का दिन, दीपावली, होली, अक्षय तृतीया तथा अक्षय नवमी और दशहरा, ये सिद्ध मुहूर्त हैं, इनमें कर्म करने से सफलता प्राप्त होती है। रवियोग, सर्वार्थ सिद्धि योग तथा अमृत होती है। रवियोग, सर्वार्थ सिद्ध योग तथा अमृत योग भी शान्ति कर्म में अत्यन्त शुभ होते हैं। अतः साधक को यह आवश्यक है कि अपनी सिद्धि के लिए तिथि, नक्षत्र और शुभाशुभ योगादि का विचार कर लेवें। यहां पर मैं चक्र द्वारा सिद्ध योग तथा मृत्यु योग को समझा रहा हूँ।

—:०:—

चक्र

सिद्धियोग			मृत्युयोग		
नन्दा	१/६/११	शुक्र	नन्दा	१/६/११	रवि मंगल
भद्रा	२/७/१२	बुध	भद्रा	२/७/१२	सो०शु०
जया	३/८/१३	भौम	जया	३/८/१३	बुध
रिक्ता	४/९/१४	शनि	रिक्ता	४/९/१४	गुरु
पूर्णा	५/१०/१५	गुरु	पूर्णा	५/१०/१५	शनि

जिस दिशा की ओर मुंह करके कार्य करना है उस दिन दिशाशूल न होना चाहिए।

सोम शनिश्चर पुरव नहीं चालू। मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।
पीछै दक्खिन करै पयाना। तव नहिं समझों उसको आना।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। असफल होय पंथ सुख नहिं पाय।

योगिनी का वास सामने या दाहिने हो तो अशभ है तथा वायें और पीछे शुभ मानी जाती है। इसी प्रकार—

सन्मुख दाहिने चन्द्र शुभ एवं सिद्धिदाता है और वायें पीछे चन्द्र अशुभ। इसी प्रकार लग्न को समझें।

शान्ति कर्म, मारण, पुष्टि कार्य व वशीकरण मेष, कन्या, धनु तथा मीन में स्तम्भन कार्य सिंह तथा वृश्चिक में विद्वेषण व उच्चाटन कार्य कर्क अथवा तुला, लग्न में सर्वोत्तम है।

जब जल तत्व हो तब शान्ति कर्म, अग्नि तत्व में वशीकरण, पृथ्वी तत्व में स्तम्भन वायु तत्व में मारण कर्म करना चाहिए। विद्वेषण और उच्चाटन कर्म अग्नि और वायु किसी भी तत्व के उदय में करना होता है। परन्तु शत्रु भय होने पर उसके प्रतिकार के लिए किसी भी तरह के कार्य का साधन करना हो तब उस समय काल निर्णय करने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। विपत्ति के आते ही उसी समय कोई भी अनुष्ठान किया जा सकता है।

स्तम्भन, मोहन व वशीकरण कार्य का अनुष्ठान-ज्येष्ठा उत्तराषाढ़, अनुराधा, रोहिणी, उत्तराभाद्रपद, मूल शतभिषा व अश्लेषा नक्षत्र में प्रारम्भ करना चाहिए। विद्वेषण उच्चाटन तथा मारणादि-अश्विनी, भरणी आर्द्रा, धनिष्ठा, श्रवण, मघा, विशाखा, पूर्वा-फाल्गुनी, रेवती, हस्त चित्रा में करना चाहिए। पुष्य नक्षत्र सब नक्षत्रों में बलवान माना जाता है। इस नक्षत्र में सभी कार्य स्वयं ही सिद्ध हो जाते हैं। पुनः धनिष्ठा, शतभिषा पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती—ये नक्षत्र पंचक कहे जाते हैं। इनमें शुभ कार्य करना उचित नहीं है।

प्रयोगों के अनुसार आसन पर अनुष्ठान करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। पुष्टिकार्य में पद्मासन, शान्ति कार्य के लिए स्वस्तिकासन विद्वेषण में कुक्कुटासन, उच्चाटन के प्रयोग में अर्द्धस्वतिस्तकासन, मोहन तथा वशीकरण में भद्रासन और मारण तथा स्तम्भन में विकटासन अच्छा होता है। यह स्मरण

रखें काष्ठ का आसन निष्फल है। शान्ति कर्म के लिए कुशासन श्रेष्ठ है। मारण प्रयोग में भैंसे के चर्म का आसन। विद्वेषण में अश्वचर्मासन। वशीकरण में भैंसे के चर्म का आसन। आकर्षण में बाघ का चर्मासन। उच्चाटन में ऊँट के चर्म का आसन। मारण प्रयोग में हाथी के चर्म का आसन। मृगचर्म वशीकरण में प्रयोग होता है।

कछुए के मस्तक पर बैठने से यंत्र मंत्र तंत्र शीघ्र सिद्ध होते हैं। कूर्म चक्र दिया जा रहा है।

ईशान दक्षिण हस्त	पूर्व मुख	आग्नेय हस्त
क्ष त्र ज्ञ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ
		ट
अं	अ इ	
	आ ई	ठ
श	ओ उ	
	कर्म	ड
ष	चक्र	
		ढ
स	ओ ऊ	
		ण
ह	ए लृ ऋ	
	ऐ लृ ऋ	
य र ल व	प फ व भ म	त थ द ध न

दक्षिण पाद वायव्य पश्चिम वामपाद नैऋत्य

अब मैं कुछ शब्द मन्त्रों के विषय में लिख रहा हूँ—

मन्त्र चार प्रकार के होते हैं—

शत्रु—यह कार्य को बिगाड़ने वाला होता है। साध्य—बने कार्य को बिगाड़ देने वाला। सिद्धि—यह समय से कार्य बनाता

है। सुसिद्ध-कार्य को शीघ्र बनाता है। सभी मन्त्र अपने प्रकृति के अनुसार फल प्रदान करने वाले होते हैं। बंधन, उच्चाटन, विद्वेषण मारण कर्म के मन्त्रों के लिए 'हुँ' का प्रयोग करें। छेदन में "फट्" का जप करे, अनिष्ट और ग्रह निवारण में "हूँ" फट्, अग्नि कर्म अथवा देव कर्म में स्वाहा या नमः शब्द का जप करना चाहिए। इसके अतिरिक्त जो मंत्र स्वाहांत हों वे स्त्रीलिंग हैं--जिन मन्त्रों का अन्त नमः से हो वे नपुंसक हैं और "हुँ" फट् से अन्त होने वाले मंत्र पुल्लिग हैं। शांति व वशीकरण में पुल्लिग क्षुद्र क्रियाओं में स्त्री लिंग और इससे अलग के कर्मों में नपुंसक जाति के मन्त्रों को जपना चाहिए।

मन्त्र उच्चारण के तीन भेद हैं—

वाचिक उपांशु और मानसिक जिस मन्त्र को दूसरा सुन सके वह वाचिक होता है। जिसको कोई सुन न सके उसे उपांशु कहते हैं और जिसके उच्चारण में न ओंठ हिले उसे मानसिक कहते हैं। अभिचार के प्रयोग में वाचिक जप सिद्धि का देने वाला होता है शान्ति तथा पुष्टि कर्म में उपांशु जप सिद्धिप्रद कहा है तथा मोक्ष साधन में मानसिक जप श्रेष्ठ है।

अब मैं साधकों को कुम्भ स्थापन की विधि भी बतला रहा हूँ—

शान्ति में सुवर्ण कलश या ताम्र कलश स्थापित करें। अभिचार कर्म में लोहे का कलश स्थापित करें। मोहन कार्य में रौप्य का कुम्भ स्थापित करें। उच्चाटन में काँच का कुम्भ स्थापन करे। उच्चाटन में मिट्टी का कलश स्थापित करें।

साधना में हवन का अपना विशेष महत्व है। आप हवन सामग्री का चयन इस प्रकार करें—

शांति कर्म में दूध, घी, तिल, गूलर तथा पीपल की लकड़ी लावें। पुष्टि कर्म में घी, वेलपत्र अथवा चमेली के पुष्पों से हवन करे। कन्या की प्राप्ति के लिए खीर का हवन करें। लक्ष्मी प्राप्ति के लिये कमल गट्टा, दही और घृतयुक्त अन्न का हवन करें। समृद्धि के लिये घी, बिल्वपत्र और तिल का हवन करें। आकर्षण की इच्छा वाला चिरौंजी और विल्वपत्र का हवन करें। वशीकरण में राई और नमक का हवन करें। उच्चाटन में कौवे के पंख का हवन करें। मोहन प्रयोग में धतूरे के बीजों का हवन करना चाहिए। मारण में विष को खून में भिगोकर उसका हवन करें।

हवन करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि हाथ को सिकोड़कर जो आहुति डाली जाय उसे शूकरी मुद्रा कहते हैं। कनिष्ठा उंगली को छोड़कर जो हवन में आहुति डाली जाये उसे हंसी मुद्रा कहा जाता है। जो आहुति कनिष्ठा एवं तर्जनी उंगलियों के योग से डाली जाये उसे मृगी मुद्रा कहा जाता है।

तन्त्र साधना के समय माला का चयन इस प्रकार करें।

आकर्षण कार्य में हाथी के दाँत की माला, वशीकरण में और पुष्टि कार्य में मूंगा तथा मणि की माला विद्वेषण तथा उच्चाटन में सूत अथवा मनुष्य के बाल में घोड़े के दाँत पिरोकर बनाई माला उत्तम होती है।

मारण में गदहे के दाँत की माला प्रयोग होती है। मणि, शंख और कमल गट्टे की माला और रुद्राक्ष की माला से फलदायी होता है। स्फटिक, मणि मुक्ता की माला से जप करने पर सरस्वती की प्राप्ति होती है। तुलसी की माला बहुत शुभ होती है। इस माला से मन्त्रों का जाप करना चाहिए। स्तम्भन

का प्रयोग इससे करना चाहिए। मूंगे की माला का प्रयोग मारण करते समय किया जाना चाहिए। मूंगे की माला को पहले लोहबान की धूनी दे देनी चाहिए। धूप की धूनी वर्जित है। मूंगे की माला में ८६ दाने होने चाहिए।

वशीकरण और आकर्षण हेतु रुद्राक्ष की माला चाहिए। मन्त्र जाप करते समय ध्यान रखना चाहिए कि माला का कोई भी भाग पैर से न लगे। रुद्राक्ष की माला को पहले गंगाजल से धोना चाहिए, फिर कपड़े से पोंछकर उनके दानों पर सिंदूर का हाथ फेरना चाहिए और धूप देकर उसकी शुद्धि करना लाभ-दायक है।

आकर्षण में अंगूठे और अनामिका उंगली से, शान्ति, स्तम्भन और वशीकरण में अंगूठे और बीच की उंगली से, विद्वेषण और उच्चाटन में अंगूठा और तर्जनी से और मारण प्रयोग में अंगूठा और कनिष्ठा अंगुली से माला फेरने से सिद्धि प्राप्त होती है।

साधनाकाल में स्नानादि से निवृत्त हो करके मंत्रों को लिखें और विधिपूर्वक पूजन करते रहें। तीन रात तक पृथ्वी पर शयन करें। तीसरे दिन मन्त्र का जाप श्रद्धा और विश्वास के साथ शरू करें। इन सुत्रों का ध्यान रखने, श्रद्धा और विश्वास बराबर बनाये रखने पर सफलता अवश्य ही मिलेगी।

—: ० :—

चमत्कारी साधना और सिद्धि

कहा जाता है कि एक बार प्रयाग में ऋषि मुनियों ने यज्ञ किया। इस यज्ञ में ब्रह्मा जी गणों को साथ लिए, शिव भी सती सहित और भगवान विष्णु भी लक्ष्मी के साथ आए। अन्यान्य देवता भी अपनी-अपनी पत्नियों के साथ उस यज्ञ में आए थे।

प्रजापतियों के स्वामी दक्ष वहाँ आ पहुँचे और वे केवल ब्रह्मा को प्रणाम कर, अपने आसन पर बैठ गये। सभी ऋषियों ने दक्ष की पूजा की, परन्तु शिव अपने आसन पर बैठे रहे। उन्होंने दक्ष को प्रणाम तक नहीं किया। इसे दक्ष ने अपना घोर अपमान समझा और वे तिलमिला उठे। उन्होंने सभा के मध्य शिव को कुवाक्य कहा कि यह पाखण्डी, दुर्जन, पापी, सर्वदा स्त्री में आसक्त रहने वाला है। वैसे तो यह मेरा दामाद है, परन्तु इतना धृष्ट है कि आसन से उठकर इसने मुझे प्रणाम तक नहीं किया अत: मैं इसे अभी बहिष्कृत करता हूँ, यह सुनते ही शिव की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। उसने दक्ष को बहुत फटकारा और कहा—हे दुष्ट ! क्या तू शिव को नहीं जानता ? तूने भृगु आदि ऋषियों के बीच में शंकर का उपहास किया है इससे मैं भी तुझे शाप देता हूँ कि तुम वेद का वास्तविक अर्थ न समझकर केवल अर्थवाद पर ही विश्वास करोगे। जब इस प्रकार शाप दे दिया तब वहाँ हाहाकार मच गया।

कुछ समय बाद कनखल में दक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन किया। उस यज्ञ में भृगु आदि तपस्वियों को ऋत्विज बनाया बनाया। दक्ष ने उस यज्ञ में शिवजी को निमन्त्रण नहीं दिया। उसने कहा कि वे कपालधारी हैं। उसने अपनी पुत्री को भी यही कहकर नहीं बुलाया कि वह आसक्त कपाली की पत्नी है। जब यज्ञ आरम्भ हुआ तब उसमें शिव को न आया देख दधीचि ने पूछा कि इस यज्ञ में शिव क्यों नहीं आये ? दधीचि के ये वाक्य सुनकर दक्ष ने कटाक्ष कर कहा कि देवताओं के मूल विष्णु तो आ ही गये हैं, फिर शिव की इस यज्ञ में क्या आवश्यकता है ? मेरे इस यज्ञ को तो आप सब मिलकर सफल बनावें। अब दधीचि ने कहा शिव के बिना तो यह यज्ञ सदैव अपूर्ण ही रहेगा। ऐसा कह दधीचि क्रोध में यज्ञ भूमि से निकल कर अपने आश्रम को चल दिए। इसके बाद यज्ञ आरम्भ हो गया। नारद जी ने सती को यज्ञ होने का समाचार दिया। वह शिव के लिए आमन्त्रण न आने का विचार कर चिन्ता करने लगीं। वह शिव के पास आईं और बोली मेरे पिता ने एक यज्ञ रचा है, सभी देवता एकत्र हुए हैं। आपको यज्ञ में जाना क्यों नहीं सुहाता है ? आप इसका कारण बतलाइये। सब छोड़कर आप मेरी प्रार्थना से मेरे साथ पिता के यज्ञ में चलिये, सती के वे शब्द शिव के हृदय में बाण से लगे। फिर वे बोले कि हे देवी ! तुम्हारे पिता दक्ष मुझसे विशेष वैमनस्य रखते हैं। इसी कारण उन्होंने मुझे निमन्त्रण नहीं दिया है और जो बिना बुलाये दूसरों के घर जाते हैं वे अपमान पाते हैं। इस कारण हमें और तुम्हें यज्ञ में नहीं जाना चाहिए। यह सुन सती क्रुद्ध हो गई और शिवजी से बोली—आप ही से यज्ञ सफल होता है। परन्तु इस पर भी मेरे पिता ने आपको नहीं बुलाया

देवताओं और ऋषियों का अभिप्राय जानना चाहती हूँ। इसके लिए मैं अपने पिता के यज्ञ में जाती हूँ। आप मुझे इसकी आज्ञा दीजिए। सती का हठ देखकर शंकर बोले यदि तुम्हारी वहाँ जाने की इच्छा है तो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम अपने पिता के यज्ञ में जाओ।

जहाँ दक्ष का यज्ञ हो रहा था, सती वहाँ जा पहुँची। सती को आई देखकर माता ने तो सत्कार किया, पर वहिनों ने वड़ा अपमानजनक व्यवहार कियां। वड़े दुःखी हृदय से वे यज्ञ मण्डप में पहुँची। पिता से वोली, पिताजी! आपने शंकर को क्यों नहीं वुलाया। वे तो स्वयं 'यज्ञ स्वरूप यज्ञांग' और 'यज्ञों के दक्षिणा स्वरूप' हैं विना उनके वुलाए आपने उनका अपमान किया है। अपनी पुत्री के ये वचन सुनकर दक्ष उससे वोले वहुत कहने से क्या लाभ? तू यहाँ चली क्यों आई? चाहे यहाँ रह चाहे चली जा। मुझसे तेरा कोई प्रयोजन नहीं। तेरा पति तो भूतों का राजा है जो वेद वहिष्कृत, अकुलीनऔर अमांगलिक है। इसी कारण तेरे कुवेशधारी पति शिव को मैंने यज्ञ में नहीं बुलाया।

तब देवी अत्यन्त क्रुद्ध हो वोलीं कि जो शिव की निन्दा करता है अथवा सुनता है वे दोनों ही नरक गामी होते हैं। अपने स्वामी का अपमान सुनकर मेरे जीने से ही क्या लाभ होगा। अतएव मैं अग्नि में प्रवेश कर इस शरीर को त्याग कर दूंगी। इतना कहकर सती ने योगाग्नि द्वारा शीघ्र ही अपने शरीर को भस्म कर डाला।

इधर भृगु द्वारा मार भगाये शिवजी के गण शिवजी की शरण में पहुँचे और सती के शरीर त्याग आदि का सारा वृत्तांत

कह सुनाया। उसे सुन संहारकारी, शंकर ने अपनी जटा उखाड़ कर उसे एक पर्वत पर दे मारा जिससे उसके दो खण्ड हो गए और भयंकर शब्द के साथ वीरभद्र उत्पन्न हुए। फिर जटा के दूसरे भाग से महाकाली उत्पन्न हुईं। भगवान शिव वीरभद्र को आशीर्वाद देकर बोले वीरभद्र ! दक्ष एक यज्ञ कर रहा है जो मेरा विरोधी है। तुम जाकर उसके यज्ञ को विध्वंस कर दो इसके बाद भयंकर युद्ध हुआ। भगवान शिव सती का शरीर लेकर सब जगह घूमे। जिन जिन सिद्ध पीठों में देवी के जो जो अंग गिरे उनके नाम के साथ तथा जो भैरव वहाँ प्रगट हुए उनका वर्णन इस प्रकार है—

कामरूप कामाख्या

कामाख्या आसाम प्रदेश में है।

गोहाटी नगर में कामाख्या देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। जिस पहाड़ पर मन्दिर स्थित है उसका नाम कामाक्षा है।

कहते हैं, कामाक्षा देवी का स्थान जंगलों के और अधिक भीतर भाग में स्थित है यहाँ सिद्ध महात्मा दर्शन पाते हैं तांत्रिक भी अंतर्भागीय पहाड़ी-वनीय घाटियों में देवी की उपासना करते हैं देवी कोई मूर्ति नहीं है, केवल एक पिंडी रखी है जो सदैव लाल कपड़े से ढंकी हुई रहती है पिंडी के नीचे पानी सदैव बहता रहता है जिसे सोता कहा जा सकता है। यह जल कहाँ से आता है और कहाँ चला जाता है ? इसका पता नहीं चलता, यह पिंडी देवी के गुप्तांग स्वरूप है अतः ढका ही रक्खा जाता है। यहाँ से ऊपर की ओर बढ़ने पर भैरव का दर्शन कर लौट आना होता

है। इसी रास्ते में भुवनेश्वर जी का भी मन्दिर है। यहाँ पर बकरे की बलि दी जाती है।

कामाख्या पूजन तथा सिद्धि

देवी के पूजन के लिए साधक को दत्त चित्त होना चाहिए। लाल वस्त्र पर कामाक्षा यंत्र बनायें। इसके अतिरिक्त जो यंत्र सिद्ध करना हो उसे भी साथ रखकर पूजन करें।

ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं वं शं षं हं सः कामाक्षायाः प्राणाः इह प्राणाः। ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हं सः कामाक्षायाः जीव इह स्थितः। ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं कामाक्षायाः (अस्यां मूर्तौ व चित्रौ) सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा।

पुष्पांजलि अर्पण करें।

ओं भूः भुवः स्वः ओं कामाक्ष्यै चामुण्डायै विदमहे भगवत्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥

अब देवी का षोडशोपचार विधि से पूजन करें।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्ये स्वाहा यह देवी का द्वादश अक्षर वाला मन्त्र है इसी एक मन्त्र से ही देवी का पूजन करना चाहिए।

साधना का मुहूर्त

साधना करते समय उसके अनुरूप मुहूर्त का ध्यान रखना चाहिए।

सिद्धि निर्विघ्न हो सके। अड़चन न पड़े। आकाश के नक्षत्र भी प्रतिक्षण पर्यावरण को वदलते रहते हैं और उनका प्रभाव जड़ व चेतन सभी पदार्थों पर पड़ता है। अतः समय दिन, तिथि, नक्षत्र सभी का ध्यान रखना आवश्यक है।

साधना करने के लिए लग्न का प्रभाव इस प्रकार रहता है—

वृष, धनु और मीन, सिंह लग्न में किसी भी प्रकार की साधना नहीं करनी चाहिए क्योंकि इन लग्नों का प्रभाव साधक को असफलता देने वाला होता है। मिथुन लग्न भी साधना के लिए प्रतिकूल है। मेष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर और कुम्भ लग्न में की गयी साधना सफल होती है। अतः इन लग्नों में साधना करनी चाहिए।

हवन

जिन साधनाओं को सिद्ध करने के लिए मन्त्रों का सहारा लेना पड़ता है उन्हें जपने के बाद हवन करना अनिवार्य है, जिसमें कम से कम १०८ आहुतियाँ देनी होती हैं। किस प्रकार की साधना में कैसी हवन सामग्री हो इसके सम्वन्ध में विवरण प्रस्तुत है—

शान्ति कर्म के हवन में देशी घी, दूध, तिल, आम व पीपल, गूलर, आम की लकड़ी, वूरा आदि का प्रयोग किया जाता है। वशीकरण के हवन में नमक तथा राई का प्रयोग किया जाता है। वेलपत्र और चिरौंजी को आकर्षण करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

वेलपत्र और चिरौंजी को आकर्षण करने के लिये किया

जाता है। स्तम्भन सम्वन्धी कार्यों की सफलता के लिये हवन में काले तिल, दही, देशी घी, जौ, चमेली के पुष्प, कमल गट्टा, चन्दन आदि की आहुति दी जाती है। उच्चाटन सम्वन्धी कार्यों जैसे आग लगाना, मूठ चलाना, घर कील देना आदि में कौवे के पंखों को हवन सामग्री के रूप में काम में लाते हैं।

मारण कर्म—इस प्रकार की साधना में हवन में विष मिले रक्त का प्रयोग करना चाहिए। साधना के लिये सदैव सिद्धासन या पद्मासन का प्रयोग करना चाहिए।

प्रिय साधकों! अब मैं आपके लाभ और ज्ञान वर्धन के लिये मन्त्र की अनेक सहायक क्रियाओं का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है आप इस विवरण से लाभान्वित होंगे।

माला गुंथन विधि

माला गूंथते समय यह ध्यान रहे कि मुख-मुख से और पुच्छ-पुच्छ से मिला रहे। माला के छेदों से तागा पिरोकर गोपुच्छ की भांति माला वनायें। माला गाय की पूंछ के समान ऊपर से चौड़ी और नीचे की ओर पतली होती जाए। यह तभी होगा जवकि मुख से मुख मिला रहेगा। सुमेरु माला के दोनों छेदों को मिलाने वाले वड़े दाने का मुख ऊपर को रहे और उसके ऊपर फुंदना सा रहे। इस प्रकार विधिवत् गूंथी गयी माला देवी-देवता को प्रिय और मन्त्रों की सिद्धि देने वाली कही गयी है।

माला संस्कार

माला तैयार होने पर उसे गंगाजल से शुद्ध करना चाहिए, इसके वाद पंचगव्य से स्नान कराना और अन्त में शुद्धोदक

द्वारा धोकर गुरु द्वारा अभिमन्त्रित करा लेवें। अन्त में माला को शुद्ध आसन पर रख देवें। पुनः माला को रोली, फूल, गंधादि से पूजा कर अन्त में इस प्रकार कहे—

माले माले महाकाले सर्वंत्रैक स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तन्माले सिद्धिदा भव ॥
पुष्करी सरिव वीजस्त्वं सूक्ष्मं सूक्ष्मान्वितं तथा।
आकाश शशि संयुक्तं सिध्यै हृदय संज्ञकम् ॥

इस प्रकार अभिमन्त्रित माला मनोरथों को देने वाली होती है।

वायें हाथ से माला छू लेने पर पृथ्वी पर गिर जाने पर अन्य व्यक्ति द्वारा स्पर्श किये जाने पर टूट जाने पर फिर उसी प्रकार से माला संस्कार करना चाहिए।

माला-धारण समय

माला को पवित्रावस्था में ही धारण करे। शौचादि काल में इसे उतार देना चाहिए। स्नान, दान, जप, होम, वलि-वैश्वदेव, देवपूजन, प्रायश्चित श्राद्ध तथा दीक्षा के अवसर पर इसे अवश्य धारण कर लेना चाहिए।

टीका

देवी भक्त को लाल चन्दन का प्रयोग करना चाहिए। लाल चन्दन सिन्दूर और रोली देवी को अर्पण करे और मस्तक पर यही धारे। भंस्म को मस्तक पर तीनों अंगुलियों से लगाकर बीच में लाल रोली का तिलक लगा लेने पर देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं। इस प्रकार कण्ठ, हृदय और दोनों भुजाओं पर भी भस्म तथा रोली लगावें।

तिलक लगाने की विधि

स्नान के वाद भस्म लगावें। यदि दोपहर के पहले भस्म लगाना हो तो गंगाजल के साथ लगाना चाहिए या रात में सूखी भस्म लगावें। तर्जनी, मध्यमा और अनामिका तीनों अंगुलियों से भस्म लगावें। सिर ललाट, कान, कण्ठ, हृदय और दोनों भुजाओं में त्रिपुण्ड्र लगाने का विधान है। सिर पर "होम" मन्त्र से पाँचों अंगुलियों द्वारा तिलक लगावें। "स्वाहा" से ललाट पर त्रिपुण्ड्र लगावें। "सद्योजात" मन्त्र से दाहिने कान पर तथा "वामदेव" मन्त्र से वायें कान पर "अघोर" मन्त्र से कण्ठ में वीच वाली अंगुली से त्रिपुण्ड्र लगावें। हृदय में नमः मन्त्र से तीनों अंगुलियों द्वारा तथा शिखामन्त्र से दाहिनी भुजा पर एवं कवचाय हुं मन्त्र से वायीं भुजा पर भस्म त्रिपुण्ड्र लगावें। "ईशान" मन्त्र से नाभि पर मध्यमांगलि से त्रिपुण्ड्र लगावें।

तन्त्र में 'कुमारी पूजन' तांत्रिक को देवी की प्रसन्नता के लिए कुमारी कन्याओं को अवश्य खिलाना चाहिए। ये कुमारियाँ नौ होनी चाहिये। १. कुमार्ये २. त्रिमूर्त्यै ३. कल्याण्यै ४. रोहिण्यै ५. कालिकायै ६. चण्डिकायै ७. शाम्भव्ये ८. दुर्गायै ९. सुभद्रायै। इन कुमारियों में हीनांगी अधिकांशी, कुरूपा नहीं होनी चाहिये। इनको भोजन करायें। इस तरह करने पर देवी प्रसन्न होकर सिद्धि देती है और मनोरथों को पूर्ण कर देती है।

नैवेद्य

प्रतिपदा तिथि को माँ कामाख्या की पूजा गौ घृत से करनी चाहिये अर्थात षोडशोपचार से देवी की पूजा करके नैवेद्य के

रूप में गौ घृत अर्पण करके किसी तांत्रिक को दे देना चाहिए। इस प्रकार द्वितीया तिथि को चीनी का भोग लगाकर तांत्रिक को दे देवें। तृतीया के दिन भगवती की पूजा में दूध का भोग लगाकर किसी को देना चाहिए। चतुर्थी तिथि को मालपुआ का नैवेद्य अर्पण करके ब्राह्मण को देवे। पंचमी तिथि के दिन देवी पूजा में केले का भोग लगाकर तांत्रिक को देवें, षष्ठी तिथि को देवी-पूजन में मधु का महत्व है, सप्तमी के दिन भगवती की आराधना में गुड़ का भोग लगाकर देना चाहिए, अष्टमी तिथि को देवी को नारियल का भोग लगाकर किसी साधु को दे देना चाहिए, नवमी तिथि के दिन देवी को धान का लावा अर्पण करके गुरु को देवें, दशमी के दिन भगवती को काले तिल का लड्डू नैवेद्य में चढ़ाना चाहिए वह लड्डू ब्राह्मण को देवें एकादशी के दिन भगवती को दही का भोग लगाकर ब्राह्मण को दें। द्वादशी के दिन चिउड़े का भोग लगाकर ब्राह्मण को दें।

चतुर्दशी के दिन सत्तू का भोग लगाकर पूर्णिमा के दिन खीर का भोग लगाकर ब्राह्मण को अर्पण करें।

इसी प्रकार देवी सिद्धि के लिए हवन करें। जिस तिथि में जो वस्तु नैवेद्य चढ़ाने का निर्देश हो उसी वस्तु से अनुष्ठान करने का भी विधान है, आप दिनों के गणित से निम्न नैवेद्य का चयन करें।

रविवार को खीर, सोमवार को दूध, मंगलवार को केला, बुधवार को मक्खन, गुरुवार को खांड, शुक्रवार को चीनी तथा शनिवार को गौ घृत का नैवेद्य रखना चाहिए। इसी प्रकार सत्ताइसों नक्षत्रों के नैवेद्य हैं। घृत, तिल, चीनी, दूध, मलाई, लस्सी, लड्डू, ताराफेनी, शक्कर पारा, कसार, पापड़, घेवर,

बरी-पकौड़ी, खजूर, रस गुड़ घृत मिश्रित चने का मोदक, शहद जिमीकन्द गुड़-चिउड़ा, खजूर, चारक, पूआ, मक्खन, मूंग के वेसन का लड्डू तथा अनार ये वस्तुएँ प्रति नक्षत्र में भगवती को नैवेद्य के रूप में देनी चाहिए।

भूत-प्रेत नाशक मन्त्र

ओं नमः भवे भास्कराय अस्माकं 'अमुकं' सर्वं ग्रहणं पीड़ा नाशनं कुरू कुरू स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि अवश्य कर लेनी चाहिए। सिद्धि के लिए १०८ मन्त्र का जप और १०८ आहुति देनी चाहिए। हवन सन्ध्या समय होना चाहिए। जौ, तिल, सफेद सरसों, गेहूँ, चावल, मूंग, चना, कुश, शम्मी, आम्र, डुम्वरक् पत्ता और अशोक धतूरा दूर्वा आक व ओंगा की जड़ लेकर इनमें दूध, घी मिला देना चाहिए। इसकी सिद्धि से भूत-प्रेतोपद्रव नाश होकर शान्ति मिलती है।

ग्रह बाधा

ओं शं शं शिं शीं शु शुं शै शैं शौं शं शः स्वः स्वाहा।

वारह अंगुल परिमाण पलाश की लकड़ी की एक कील वना लें और १००१ मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। जिस घर में यह कील गाड़ी जायेगी। वह प्रेतादि दोषों से मुक्त रहेगा।

भूत प्रेत निवारण मन्त्र

ओं ननो मसाणं वरसिने प्रेतनां कुरू कुरू स्वाहा।

सवसे पहले इसका १००१ जप करना चाहिए। इसके वाद भूतग्रस्त रोगी को ११ वार झाड़ें।

भूत भगाने का मन्त्र

भूत सवका भाई काहे आनन्द अपार।
जिसको गुमान से 'अमुक' को मार॥
हमरे संई को पऊं करो सलाम हजार।
जाते होय भूत आवेश किनार॥
जितनी मेथी छोड़ वड़े और आनि के अन्त।
तस के धूम्र गंध ते मल में भूत भसम॥
'अमुक' अंग भूत नहीं यह मेथी के लाय।
उठि के आगे रत क्षण में जाय पराय॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आशा हाड़ि दासि चण्ड़ी की दोहाई॥

मेथी लेकर रोगी के देह से सात वार पढ़ते हुए स्पर्श कर अग्नि में देवें।

सरसों द्वारा भूत निवारण

"ए सरसों पीला सफेद और काला।
तू चलना फिरना भाई का चला॥
तोहर वाण से गगन फट जाय।
ईश्वर महादेव्र के जटा कटाय॥
डाकिनी योगिनी व भूत पिशाच।
काला पीला श्वेत सुसाँच॥
सब मार काट धरूँ खेत खरिहान।
तेरे नजर से भागे भूत ले जान॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आज्ञा हाँडी दासी चण्डी दोहाई॥"

इस मन्त्र से सरसों को २१ बार पढ़कर रोगी को सरसों मारे और थोड़ा अग्नि में डाल दें। भूत-प्रेत बाधा शान्त होगी।

हल्दी द्वारा भूत निवारण

हल्दी वाण-वाण की लिया हाथ उठाये।
हल्दी वाण से नील गिरी पहाड़ थर्राये॥
यह सब देख बोलत वीर हनुमान।
डाइन योगिनी भूत प्रेत मुंड काटोतान॥
आज्ञा कामरू कामाख्या माई।
आज्ञा हाडि की चंडी की दोहाई॥

हल्दी लेकर उसे १३ वार अभिन्त्रित करे फिर १३ वार रोगी के सिर से पैर तक फिरा कर अग्नि में छोड़ दें इस मन्त्र से भूत-प्रेत वश में होते हैं।

अब हम अपने अगले अध्याय में साधनाओं की ओर बढ़ते हैं।



चमत्कारी साधनायें

साधना ! तीन अक्षरों से वना यह शव्द अपने भीतर अनेक चमत्कारी रहस्य रखता है। साधना के द्वारा क्या नहीं हो सकता ? साधक क्या नहीं पा सकता ? आवश्यकता केवल इस वात की है कि वह साधना का आयोजन उचित प्रकार से करे। खेद का विषय है कि आज का साधक केवल घंटों में ही सिद्धि प्राप्त करना चाहता है। साधना और सिद्धि का चोली दामन का साथ है। साधना के अभाव में सिद्धि केवल कल्पना है और अगर सिद्धि न हो तो साधना से क्या लाभ ?

साधना को समय से वाँधना अनुचित है। साधना काल में साधक केवल इतना ही ध्यान रखे कि समय कितना ही लग जावे, पर सिद्धि अवश्य प्राप्त होनी चाहिए। मुझे अपने एक साथी नरेन्द्र सिंह सांगवान की एक वात याद आती है, जो उन्होंने मुझे साधना के मध्य बतलाई थी।

उत्तराखण्ड में एक महात्मा थे, जिनकी प्रबल इच्छा तन्त्र साधना की थी। वह अप्सरा मेनका के साक्षात दर्शन करना चाहते थे। उन्होंने चालीस दिन तक कठोर साधना सम्पन्न की। तीन लाख से ऊपर मन्त्र जाप भी किया पर उन्हें कोई अनुभूति नहीं हुई, इस कारण उन्होंने साधना को आगे चालू रखने का विचार त्याग दिया। अचानक उनके गुरु भाई आ पहुँचे और पूछा, 'क्यों भाई साधना क्यों छोड़ दी ?"

महात्मा ने वड़े टूटे मन से कहा, भाई ! मन्त्र-तन्त्र सव

ढोंग है बकवास है, निरा पाखण्ड है। तीन लाख जाप करने के बाद भी मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई।

गुरु भाई ने समझाया, सम्भव है आज की साधना से सिद्धि प्राप्त हो जाये। शायद आज की साधना ही सिद्धि दात्री हो। उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने फिर साधना की और एक सप्ताह बाद सिद्धि को प्राप्त किया। वास्तव में कई बार सफलता अगले ही क्षण मिलने वाली होती है और दुर्भाग्य से हम रुक जाते हैं, साधना छोड़ देते हैं। इस कारण जिस सिद्धि के हम अधिकारी होते हैं, उससे अनजाने में ही वंचित हो जाते हैं।

साधना में हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारी हिम्मत परस्त न होने पाये, सम्भव है हमारा अगला प्रयास ही सिद्धि के द्वार खोल दे।

अब मैं आपके लिए कुछ विशिष्ट गोपनीय पर लाभदायक साधना प्रस्तुत करूँगा। आशा है आप मार्ग में नहीं रुकेंगे। सिद्धि प्राप्त करके ही चैन लेंगे।

सरस्वती साधना

साधक को प्रातः जल्दी उठना चाहिए और स्नान कर अपने साधना कक्ष में आ जावे। इसके बाद थाली में केसर से स्वास्तिक का चिन्ह बनाना चाहिए। इसके बाद माँ सरस्वती का वन्दन करे, उस पर केसर लगावे और नैवेद्य चढ़ावे फिर सामने दीपक जलाकर हाथ जोड़कर सरस्वती को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम करे। इसके बाद स्फटिक की माला से सरस्वती मन्त्र का जाप करे। मन्त्र इस प्रकार है—

॥ ओं ऐं सरस्वत्यै नमः ॥

ऐसा करने पर बुद्धि का विकास होता है तथा शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होती है। अगर इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर और उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके विद्यार्थी के गले में डाल दें तो विद्यार्थी अच्छे अंकों से पास होता है और उसकी बुद्धि का विकास होता है। यह साधना मन्द बुद्धि वच्चों के लिए बेहद लाभदायक है।

बटुक भैरव साधना

आज तक तन्त्र मन्त्र केवल उच्चकोटि के तांत्रिकों की ही बपौती रही है और यह आवश्यक भी था। मन्त्र में गहन पूजा पद्धति की आवश्यकता होती थी जिन्हें केवल तांत्रिक ही जानते थे। पर वटुक भैरव साधना ऐसी सरल साधना है, इसे कोई भी सम्पन्न कर सकता है, यह साधना सरल है और शीघ्र फलदायक भी है।

कुछ वर्षों पहले मैं जव उत्तराखण्ड में भटक रहा था तो मुझे एक वावा मिले।

मैं औघड़ वावा के सम्पर्क में लगभग सात माह ही रहा मैंने उनकी सेवा की, मैं साधना सम्पन्न करना चाहता था। कुछ समय वाद मुझे पता चला कि वटुक साधना से सिद्धियाँ स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं। बाद में उन्होंने कृपा कर बटुक भैरव साधना मुझे सिखला दी।

साधना के नियम साधना इस प्रकार है—

मन्त्र जप चालीस दिन करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है। यह कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, लाल आसन बिछा दें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करें, स्वयं लाल धोती

पहिन लें, सामने वटुक भैरव यन्त्र को रख दें और मूंगे की माला से जप करें।

जब प्रयोग सिद्ध हो जाये तब तावीज अपनी बांह पर बाँध लेना चाहिए।

मन्त्र—ओं ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू कुरू वटुकाय ह्रीं ओं।

वास्तव में यह साधना देखने में सरल प्रतीत होती है, पर इसका कर पाना लोहे के चने चवाना है। आप स्वयं अनुभव करेंगे।

मेनका साधना

इन्द्र की महत्वपूर्ण अप्सराओं में मेनका भी एक है, जो सुन्दर है। जिसके शरीर से सुगन्ध प्रवाहित होती है, कहा जाता है किसी भी अप्सरा को सिद्ध किया जा सकता है। महर्षि विश्वामित्र ने भी मेनका को अपने वश में किया था और उसे जीवन भर अपने अनुकूल बनाये रखा था। उनसे एक सन्तान भी थी जिसका नाम शकुन्तला था।

मेनका सिद्ध होने के वाद सदैव आपकी आँखों के सामने रहती है, क्या इस अपूर्व सुन्दरी का साथ अपने आप में एक सौभाग्य नहीं है।

यह साधना सात दिन की है इसमें अभिमन्त्रित स्फटिक माला से मन्त्र जप होना चाहिए इसमें नित्य इक्यावन माला मन्त्र जप हो, किसी भी शुक्रवार की रात्रि १२ वजे से साधना प्रारम्भ करें, सामने पीला आसन बिछा कर पास में सियार सिंगी, हकीक पत्थर व इत्र रख दें।

मन्त्र—चन्दनक्षीर हरिणायुतं जपेत् दिवसानि सप्त दिवसे सप्तमे उदारपूजां कृत्वा शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्ध्नि उत्थाय सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते नियतमागच्छति। ईषद्धसितरागेण पुरस्तिष्ठति आलिंगनं चुम्बनं च तया सह कर्त्तव्यं तूर्ष्णीभावेन कामयेत्। एवं सिद्धाभवति। यमिच्छति कामं तं ददाति। पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति पुनरपि राज्यं ददाति।

साधक को चाहिए कि स्नान कर केसर का तिलक कर फूलों का हार पहनकर कानों में सुगन्ध लगाकर उत्तर की ओर मुंह कर आसन पर वैठ सामने दीपक जलाकर मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें नित्य इक्यावन माला मन्त्र जप होना चाहिए इस प्रकार २१ रात करें। २२वीं रात्रि को मेनका उपस्थित होती है।

मन्त्र—स: मेनके आगच्छागच्छ स्वाहा।

सौभाग्यशाली साधक अवश्य ही इस साधना को सिद्ध कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करेंगे।

तारा साधना

भगवती तारा की साधना नवरात्रि में प्रारम्भ की जाती है, यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती है पर वास्तव में बड़ी कठिन है।

साधक को चाहिए कि वह जिस दिन भी इस साधना को सम्पन्न करना चाहे वह प्रातः काल उठकर स्नान करें।

एक समय भोजन करें भोजन सात्विक रहे ब्रह्मचर्य का पालन करें। इस साधना में चार घण्टे का समय लगता है।

साधक लाल धोती और लाल आसन का प्रयोग करे इसके

बाद थाली में कुंकुम से 'श्री तारायै नमः' लिखें। फिर जल मिश्रित दूध सामने रखें।

फिर पुष्प अर्पण करने के बाद साधक उसी आसन पर बैठे-बैठे तारा मन्त्र की बीस माला जाप करें।

साधक माला की पूजा करें, सुमेरू पर तिलक करें और बाद में प्रयोग करें मनके पर तिलक कर उन पर चावल और पुष्प समर्पित करें, तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर साधक उच्चारण करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक तारा सिद्धि के लिए मन्त्र जप कर रहा हूँ। यह हाथ में लिया हुआ जल छोड़ दें। इसके बाद निम्न मन्त्र की बीस माला जाप करें।

ऐं ओं ह्रीं श्रीं हूँ फट्।

मन्त्र जप पूरा होने के बाद प्रसाद वितरित करें, किसी कन्या को भोजन करावे और उसे दक्षिणा देकर साधना की सम्पूर्णता अनुभव करें। यह साधना करने से साधक की समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं।

प्रातः जल्दी उठें और स्नान कर पूजा स्थान में आ जावें। इसके बाद माँ सरस्वती का चित्र स्थापित करें, तत्पश्चात् सामने थाली में कुंकुम से स्वास्तिक का चिन्ह बनावे फिर उस पर कुंकुम का तिलक करे तथा पुष्प समर्पित करे।

इसके बाद सरस्वती चित्र की पूजा करे उस पर केसर लगावे तथा नैवेद्य चढ़ावे और फिर सामने दीपक जलाकर सरस्वती को प्रणाम करे फिर माला से सरस्वती मन्त्र का जप करे।

ऐं ओं ह्रीं श्रीं फट्।

ऐसा करने पर बुद्धि का विकास होता है, तथा शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होती है।

कमला साधना

कमला साधना में साधक अपने सामने शुद्ध घी का दीपक जलावे उसका पूजन करे तत्पश्चात् सुगन्धित अगरवत्ती जलावे ऐसा करने के वाद साधक कुंकुम समर्पित करे, पुष्प तथा पुष्प माला पहनाये, अक्षत चढ़ावे तथा नैवेद्य का भोग लगावे। सामने ताम्बूल, फल और दक्षिणा समर्पित करे।

इसके वाद साधक निम्न स्तोत्र का पाँच वार पाठ करे। साधक को ओज, तेज, वलं, वुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

वाचं मे दिशतु श्री देवी मनोमे दिशतु वैष्णवी। ओजस्तेजो वल दाक्ष्य वृद्धि वैंभवमस्तु मे। त्वत्प्रसादात भगवति। प्रज्ञानं मे ध्रुवं भवेत्। शन्नो दिशतु श्री देवी महा-माया वैष्णवी शक्तिराधा। यामासाद्य स्वयंमादि-देवो भगवान परावरज्ञत्रिधा सम्भिन्नों लोकांस्त्रीन् सृजत्यवत्यति च। यद् भ्रू विक्षेप वलमा पन्नो हयव्-योनिस्तदितरे चामरा मुख्याः सृष्टि चक्र वेणेतरः सम्वभूवुः। या वै वरदा स्वोपाया सु प्रसन्ना सुखयति सहस्र पुरुषान् ये लोकाः सन्तत मानमन्ति शिरसा हृदयेन चतामेकां लोक-पूज्यां न ते दुर्गति यान्ति भूताः॥

वास्तव में यदि कमला साधना के नित्य ग्यारह पाठ करता है तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश सम्मान प्राप्त होता है।

माला विशेष मन्त्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद से सुगन्धित

होता है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, इस माला को पहले से ही प्राप्त करके रख देनी चाहिए।

प्रयोग के समय साधक शुद्ध घी के सोलह दीपक जला ले और कमला मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जाप करें।

ओं ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौ जगत्प्रसुत्यै नमः ॥

जब सोलह माला मन्त्र जाप हो जाए तब यह तांत्रिक प्रयोग है जो स्वयं महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें।

श्मशान जागरण साधना

तांत्रिक को तामसिक साधना के लिए कई बार श्मशान जागृत करना पड़ता है जागृत करने पर श्मशान जाग उठता है।

निश्चय ही यह गोपनीय प्रयोग है पर फिर भी जो इस साधना को करना चाहते हैं उन्हें श्मशान साधना करनी ही पड़ती है।

अब मैं अपने गुरु के बतलाये हुए विशिष्ट प्रयोग को बता रहा हूँ जिससे श्मशान जागृत हो उठता है।

कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अमावस्या तक आधी रात को श्मशान के मध्य में पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय अपने चारों ओर लोहे के चिमटे से भगवान शिव का नाम लेकर सुरक्षा चक्र बना दें और फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें कुछ ही समय में श्मशान जागृत हो जाता है।

क्रीं क्रीं कालिके भूतनाथाय रौद्र रूपायै भूत प्रेत पिशाच जाग्रय श्मशान उत्थापय क्रीं क्रीं कालिके फट्।

वास्तव में यह भयानक साधना अगर हिम्मत है तव प्रयोग करनी चाहिए।

किसी भी शुक्रवार के दिन अर्ध रात्रि को स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर वैठ जाये, सफेद वस्त्र धारण कर ले और चारों तरफ दीपक जला लें, चौक के बीच आसन लगा लें इसके वाद कार्तवीयार्जुन का ध्यान करें।

ध्यान—नमः श्रीकार्त्तवीर्याय कीर्त्तितोयं शिखामनु हैयाधिपतिर्ड़न्तः कवचस्य मनुमंतः सहस्त्रबाहवे तु स्वादेवं पंचागमीरितम् उदग्रबाणांश्चापानि दधतं सूर्यसन्निभम् प्रपूरयन्तं वसुधां धनुर्ज्यानिः स्वनैतथा कार्त्तवीर्यनृपं ध्यायेण्द्दडशोभितकुण्डलम्।

मन्त्र—प्रों क्लीं ओं ऐं ईं स्व भूं ह्रीं त्रि फट्॥

उपरोक्त मन्त्र मन्त्रराज कहलाता है जप में किसी भी माला से इस मन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है। जव तीन दिन की साधना पूरी हो जाय तो पीछे जो दीपक विधान है, उसमें मिट्टी के दिये या अन्य प्रकार के दिये प्रयोग किये जा सकते हैं और उनमें किसी भी प्रकार का तेल भरा जा सकता है।

जप समाप्त होने पर दूसरे दिन फिर इन्हीं दीपकों का प्रयोग किया जा सकता है। वास्तव में यह साधना असाधारण है।

कृत्या साधना

किसी भी मंगलवार की अर्ध रात्रि को काले आसन पर वैठ जाये और पूजा कर सवसे पहले दाहिने हाथ में जल लेकर कहें कि मैं यह २१ दिन की साधना कृत्या सिद्धि हेतु कर रहा हूँ। इसके वाद बांये हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र से अपने शरीर को सुरक्षित कर लो।

ओं व्रह्म सूत्र समस्त मम देह आवद्ध-आवद्ध वज्र देह फट्।

इस प्रकार ११ वार वोलकर अपने शरीर पर जल छिड़के। फिर वांये हाथ में चावल लेकर दसों दिशाओं की ओर फेंके जिससे कि दिशा वन्धन हो सके।

मन्त्र—ओं शिवकृत्या प्रयोगायै दस दिशा वन्धायै क्रीं-क्रों फट्।

इसके वाद शिव का पूजन करें और फिर मन्त्र जप आरम्भ करें।

ओं क्लीं-क्लीं शत्रुणां मोहयै उच्चाटयै मारयै वचनसिद्धि मम आज्ञा पालय-पालय कृत्यां सिद्धि फट्।

इस प्रकार २१ दिन तक प्रयोग करें और उसके वाद कृत्या सिद्ध हो जाती है।

दीपावली एक विशेष पर्व है, इन दिनों तांत्रिक कुछ ऐसी साधनाएं सिद्ध करना चाहते हैं, जो कि आर्थिक दृष्टि से अनुकूल होती हैं। कुछ विशिष्ट साधनाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

—:०:—

स्वर्णवती साधना

यह प्रयोग तीन दिन का है। किसी भी शुक्ल पक्ष के बुधवार से शुरू किया जा सकता है। बुधवार की रात्रि को लगभग १२ बजे उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, पीले रंग का आसन बिछा लें और स्वयं भी पीली धोती पहिन लें। सामने लक्ष्मी का चित्र रख दें।

लक्ष्मी के चित्र पर कुंकुम का तिलक करें और फिर अगर-वत्ती व दीपक जला लें।

ऐसा करने के बाद साधक स्फटिक की माला से निम्न-लिखित मन्त्र की ३१ मालाएँ फेरे।

मन्त्र—ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वर्णावती ममगृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ओं नमः।

कनकावती साधना

जो भी व्यक्ति व्यापार करता हो उसे अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रयोग से व्यापार से सम्बन्धित बाधाएँ दूर होती हैं।

यह प्रयोग भी तीन दिन का है और किसी भी शुक्लपक्ष के बुधवार से शुरू किया जा सकता है।

प्रातः उठकर स्नान कर पीले वस्त्र पहनकर लक्ष्मी के चित्र पर केसर से तिलक करे, सामने अगरवत्ती दीपक जलावे और स्फटिक की माला से २१ मालाएँ निम्न मन्त्र की फेरे।

मन्त्र—ओं दारिद्रय विनाशिनी अष्टलक्ष्मी कनकावती सिद्धिः देहि देहि नमः।

लक्ष्मी प्रयोग

दीपावली के दिन से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है, यह केवल तीन दिन का प्रयोग है और साधक पीले वस्त्र पहनकर प्रातःकाल साधना के लिए बैठ जाय और केसर का तिलक कर दीपक अगरवत्ती जलाकर स्फटिक की माला से निम्न मन्त्र का जप प्रारम्भ करे, इसमें नित्य दो मालाएँ फेरने का विधान है।

मन्त्र—ओं नमः भाग्य लक्ष्मी च विद्महे अष्ट लक्ष्मी चः धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

अखण्ड लक्ष्मी साधना

मेरे विचार में प्रत्येक साधक को यह प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि इसको सम्पन्न करने से जीवन में सभी प्रकार से उन्नति तथा भौतिक सुख प्राप्त होता है। दीपावली को यह प्रयोग किया जा सकता है, यह प्रयोग तीन दिन का है।

किसी भी शुक्ल पक्ष के बुधवार से इसको शुरू किया जा सकता है, प्रातः उठकर साधक स्नान आदि कर केसर से तिलक करे, इसके बाद स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप करें।

मन्त्र—ओं ह्रीं अष्ट लक्ष्म्यै नमः।

नित्य २१ मालाएँ फेरनी आवश्यक हैं, इस प्रकार तीनः दिन तक इस मन्त्र का जप करें।

पाठको ! यह साधनाएँ आपके हितार्थ प्रस्तुत की हैं, जो मेरे जीवन का अनुभव रहा है और मैंने यह महसूस किया है कि ये साधनाएँ व्यक्ति के जीवन को उन्नति की ओर ले जाने में पूर्ण रूप से सहायक हैं।

साधकों को चाहिए कि वे नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक के समय का पूरा-पूरा उपयोग करें, इतने महत्वपूर्ण समय को हाथ से न जाने दें और इसमें से कोई भी साधना सम्पन्न कर जीवन को सुखदायक, यशस्वी वैभव पूर्ण एवं सफलतायुक्त बनावें।



चमत्कारी तन्त्र-मन्त्र टोटके

भूत ज्वर

सामान्य ज्वर दूर करने के लिए सौंठ को धागे में पिरोकर इसकी माला पहननी चाहिए। इससे सामान्य ज्वर उतर जाता है। भूत-प्रेत के भय से ज्वर आ जाने पर पीले सूत के धागे में लहसुन की कुछ कलियाँ छीलकर पिरो दें और गले में धारण करा देवें। भूत ज्वर समाप्त हो जाएगा।

कन्या के हाथों से रोगी के दाहिने हाथ में सफेद सूत में सह-देवी की जड़ वंधवा देने से भी भूत का ज्वर उतर जाता है।

अपामार्ग की जड़ को काले धागे से भुजा में वाँध देवें या चिड़चिड़े की जड़ को धारण करायें तो भूत ज्वर का प्रकोप शान्त हो जाता है।

शनिवार की सन्ध्या को भिलावे के एक फल को काले सूत से काले रंग के कपड़े में वाँधें। भूत-भय से उत्पन्न ज्वर से ग्रसित रोगी के दाहिने हाथ में वाँध देने से ज्वर ठीक हो जाता है। एक सप्ताह वाद इस धागे को खोलकर किसी चौराहे पर रख आवें भोजपत्र लेकर उस पर सोमवार की प्रातः में अनार की कलम वनाकर लाल चन्दन से ग्यारह स्थानों पर "ओं नमः शिवाय:" लिखकर दाहिने हाथ में वांध देने से वुखार की दशा समाप्त हो जाती है। रोगमुक्त होते ही धागे को खोलकर प्रवाहित कर देना चाहिए।

पारी का ज्वर

जहाँ मछली पक रही हों वहाँ रोगी जाकर मछली की भाप लेगा तो ज्वर का नाश हो जायेगा। यह एक अचूक टोटका है।

रोगी के शरीर से पोठी मछली को स्पर्श कराकर किसी चौराहे पर फेंक देने से पारी से आने वाला ज्वर शान्त हो जाता है। यदि ज्वर तीव्र हो तो एक कटोरी में थोड़ा-सा गंगाजल लेकर अपने सामने रखकर यह मन्त्र २१ वार पढ़कर जल रोगी को पिला देवें।

मन्त्र—'ओं सुं मुकुटेश्वरीभ्याम् नमः।'

भूत-प्रेत बाधा

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के अगले पैरों के खुर लाकर निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करें—'ओं नमः श्मशान वासिने भूतादिनां कुरू कुरू स्वाहा।' फिर इन खुरों को जलाते हुए बाधा ग्रस्त व्यक्ति को धूनी दें। वह व्यक्ति शीघ्र सामान्य हो जायेगा।

काली मिर्च, सहदेवी की जड़ और तुलसीदल इनको लेकर उक्त मन्त्र से सिद्ध करके प्रेत-बाधा पीड़ित व्यक्ति को धारण करा देने से प्रेत-बाधा शान्त हो जाएगी।

अमावस्या की अर्द्ध रात्रि को सफेद वस्त्र धारण करके अपनी अंजुली में एक साबुत सुपारी रखकर उसमें भूत-प्रेत के आगमन की कल्पना करके श्रद्धापूर्वक यह प्रार्थना करें, हे अज्ञात आत्मा आपका स्मरण मैं श्रद्धा भाव से कर रहा हूँ। मेरी रक्षा के लिए आप प्रसन्न हो जाइये। ऐसा कहते हुए सुपारी को पीपल के वृक्ष की जड़ में रखकर अगरबत्ती जलाकर प्रणाम

करके अपने निवास स्थान पर आ जायें और इसकी चर्चा किसी से न करें। इस प्रकार से भूत से सानिध्य स्थापित करने से वह प्रसन्न हो जायेगा और आपको कष्ट देना छोड़कर आपको धन-धान्य पूर्ण बना देगा। यदि भूत-प्रेत अतृप्ति के कारण परेशान कर रहा हो तब अमावस्या की रात में एक केले का पत्ता लाकर उस पर मीठा, दही, चावल तला हुआ पापड़ और दो लौंग रखकर किसी पीपल के पेड़ की जड़ में रखकर कहें। हे प्रेतराज! आपको अर्पित कर रहा हूँ कृपया स्वीकार करें। मेरे कष्टों का निवारण करें, इस क्रिया से सब ठीक हो जायेगा।

पुष्य नक्षत्र में वालछड़ की जड़ लाकर उसे कुछ समय मुख में रखें। फिर उसे निकालकर जिस युवती को खिलाया जायेगा, वह वश में हो जायेगी।

पुष्य नक्षत्र वाले दिन कृष्ण पक्ष में श्मशान भूमि में तेल का दीपक जलाकर वहाँ से दायें हाथ की मुट्ठी से चिता की भस्म ले आवें। फिर उसमें सुहागा, मोर की वीट और हरताल मिलाकर जिस नारी के सिर पर डाल देंगे, वह वशीभूत हो जायेगी।

हिरण की बाँई आँख को तावीज में मढ़वाकर काले धागे के द्वारा अपनी दाँई भुजा में धारण करके जिस महिला के सामने जायेंगे वह मोहित हो जायेगी।

शनिवार को जब किसी की मृत्यु हो, तब मिट्टी के पात्र में खिचड़ी बनाकर श्मशान-भूमि में ले जावें और जिस स्थान पर मुर्दे को जलाया गया, हो वहाँ उस खिचड़ी को बिखेर देवे। जब मुर्दा जलाकर व्यक्ति लौट जायें और उस फैली हुई खिचड़ी

को पक्षी खाने लगें, तव वर्तन में जो खिचड़ी शेष रह गई हो, उसे उठाकर चल दें, रास्ते में जो भी नीम का पेड़ पड़े उस पर मिट्टी के पात्र को मारें। हाँडी के फूट जाने पर उसकी खिचड़ी के जो चावल नीम के पेड़ से चिपक जायें उन्हें अलग रख लें और जो नीचे जमीन पर गिर पड़ें उन्हें अलग रख लेवें। फिर दोनों स्थान के चावलों को धूनी देकर किसी चौराहे पर गाढ़ दें तथा प्रत्येक शनिवार को उसी स्थान पर एक वताशा गुग्गल व थोड़ी-सी शराव का भोग चढ़ाते रहें।

यह क्रिया सात शनिवार करें। गाढ़े गए दोनों स्थानों के चावलों को वाहर निकालकर घर ले आवें।

जव किसी नारी को मोहित करना हो, उस समय उसके शरीर पर नीम से चिपके हुए चावल के दानों को डाल दें तो वह नारी वशीभूत रहेगी।

प्रेत निवारण मन्त्र

ओ३म् ह्रीं क्लीं कंकाल कपालिनी कूटम्वरी आडम्वरी भकार धः धः।

रोगी को रविवार के दिन नीम की पत्तियों की धूनी देवें फिर उपरोक्त मन्त्र से झाड़ा देवे तो बाधा की शान्ति होती है।

भूत झाड़े का मन्त्र

ओ३म् नमो आदेश गुरु का मन्त्र साँचा कंठ काँचा दुहाई हनुमान वीर को जामे लफ्जारी। पलंका मज़ारी आन लक्ष्मणा वीर की आन माने जाके तीर की दुहाई मेमना पीर की वाद-

शाह जावा काम में रहे आमदा दुहाई कालिकामाई की धौला गिरि वारो चंडै सिंह की सवारी जाके लाँगुर है अगारी प्याला पिये रक्त को चंडिका भवानी वेदवानी में वखानी भूत नाँचे बेताल लज्जा रखे अपने भक्त की काली महर काली आरी कलकत्ता वाली हाथ कंचन की थारी लिये हाठ भक्त वालिका दुष्टन ग्रहारी सदा सन्तन हितकारी उतर मूल राज जल्दी नहीं भखै तोय कालिकामाई की दुहाई करे भक्त की सहाई आत असने में माई तेरी ज्योति रही जाग के। पकड़ के पछड़ भात-कर मत अवार तेरे हाथ में कपाल भक्षण करले ज़ल्दी आइके जाय नाहीं भूत पकड़ मारे जाँय भूत उतर उतर उतर तो राम कीं दुहाई गुरु गोरख का फंदा करेगा तोये अंधा फुरो फुरो मन्त्र स्वाहा।

जव भूत मनुष्य के ऊपर आवे तव उसे झाड़ा लगाकर उतारें उपरोक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ रोगी को सिर से पाँव तक नीम की टहनी से ११ वार झाड़ा देवें। इस झाड़े को केवल शनिवार को देना चाहिये।

प्रेत वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—ओ३म् साल सलीला मोसल वाई काग पढ़ंता धाई-धाई ओ३म् लं लं ठः ठः।

अमावस्या के शनिवार अर्द्धरात्रि में निःवस्त्र हो ववूल के वृक्ष के नीचे आक की लकड़ी जलाकर काले तिल और उड़द की आहुति दें तो प्रेत सिद्ध होता है। उस समय अपना हाथ काटकर रक्त को पृथ्वी पर टपकावें, तो प्रेत सदा वश में रहेगा।

भूत प्रेत बाधा

ओ३म् चण्डी मसान वीर भूत प्रेत के औसान भस्मी भूत स्वाहा।

कांसे वनी थाली में आटा गूँदकर उल्टे पैर के आदमी का पुतला वनावें, घी और सिन्दूर से पोतकर उसके ऊपर उपरोक्त मन्त्र को ५१ वार पढ़कर फूँक मारे। उस पुतले को चाकू से एक झटके से काटकर दो टुकड़े कर देवें। फिर उसी समय थाली को किसी चौराहे पर रखवा देवें। इस प्रयोग को रात के समय ही करना चाहिये।

भूत का मन्त्र

ओ३म् नमो भगवते उड्डा मरेश्वराय कुहुनी कुर्वती स्वाहा।

यदि किसी को भूत ने पकड़ लिया हो तो उपरोक्त मन्त्र को १०१ वार पढ़ता हुआ झाड़ा देवें तो भूत चला जाता है।

भूत-प्रेत की धूनी

घुग्घू का चाम और मांस यह दोनों चीज अलग-अलग पोसकर रविवार के दिन मिला लेवें। पश्चात् जिस स्थान पर या जिस आदमी पर भूत प्रेत हो इसकी धूनी देवें तो भूत भाग जाये।

भूत-प्रेत भगाने का मन्त्र

शनिवार के दिन काले धतूरे की जड़ लाकर रोगी की दाहिनी भुजा में बाँधे तो भूत कभी न सतायेगा।

ब्रह्म राक्षस उतारने के लिये

गोरख मुंडी गोखरू विनौला इन तीनों को गाय के मूत्र में पीसकर मरीज को इसका धुआं देवें तो ब्रह्म राक्षस भाग जाये।

भूत नाशक लेप

खस, चन्दन, काँगनी, नागर तथा लाल चन्दन कूट इन सबको मिलाकर लेप बनावें। यह लेप भुत बाधा को दूर करता है।

ओ३म् नमो भगवते उड़ डामरे श्वराय कुहनी कुर्वती स्वाहा।

इस मन्त्र से लेप को अभिमन्त्रित करके लेप करें तो लाभ होगा।

भूत बाधा विदारण धूनी

काली सरसों सर्प की कैंचुली, सींग और नीम के पत्ते और बच ओंगा के पत्ते तथा गूगल इन सबको कूट पीसकर धूनी बनाएँ, समय पड़ने पर आग पर डालकर ग्रसित रोगी को देवें तो भुत भाग जायेगा।

काली मिर्च, छोटी पीपल व धतूरा सभी के बारीक चूर्ण को शुद्ध शहद में मिलाकर लिंग पर लेप करके जिस स्त्री के साथ भी सम्भोग किया जायेगा, वह वश में हो जायेगी।

रात्रि काल में अपने वीर्य को दांये हाथ की अंगुली में लेकर बाँये हाथ की तर्जनी अंगुली से जिस महिला के अंगूठे से लगा दिया जायेगा वह रति कर्म में सहयोग देगी।

कौवे के व उल्लू के पंखों से जिनके नामों का उच्चारण करते हुए हवन किया जायेगा, उनका प्रेम भाव समाप्त हो जायेगा। यह विद्वेषण सफल है।

ढाक की लकड़ी जड़ सहित लाकर उसका वारीक चूर्ण करके जिन दो व्यक्तियों के वीच में डाला जायेगा, उनमें झगड़ा हो जायेगा।

उल्लू की जीभ लाकर पेठे के रस में डुवाकर सुखा लें और फिर इसे लोहवान की धूनी दें, ऐसा करते समय जिन व्यक्तियों का नाम स्मरण किया जायेगा, उनमें मन-मुटाव हो जायेगा।

हस्त नक्षत्र में एक अंगुल के नाप की कनेर की लकड़ी लाकर चिता की राख से किसी पत्ते पर उस व्यक्ति का नाम लिख जमीन में गाड़ देने से उच्चाटन हो जायेगा।

किसी पुरुष को नपुंसक करने के लिए मन्त्र सिद्ध करें—

"ओ३म् नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कामप्रचण्डाय हन हन चैनजेर मुखेन क्षत्रय खण्डाय स्वाहा।"

गाय जव गोवर करे तव वह गोवर जमीन पर गिरने के पूर्व ही हाथों में लेकर उस व्यक्ति की मूर्ति वनावें जिसे नपुंसक वनाना हो, इसके वाद इस मूर्ति को क्लीव कर दें। वह व्यक्ति जिसकी गोवर से मूर्ति वनाई जायेगी, नपुंसक हो जायेगा।

जहाँ पर मनुष्य पेशाव करे, उस स्थान में विच्छू का डंक दवा देने से वह मनुष्य नपुंसक हो जायेगा।

चिता के अंगारों पर शत्रु का नाम लेते हुए नमक की आहुति देने से स्तम्भन होता है।

सौंठ, क़ाली मिर्च और नमक का बारीक चूर्ण आँखों में दो सप्ताह तक लगाने से निद्रा का नाश हो जाता है।

एक सुपाड़ी खाकर जो शेष बचे उसे जमीन में दवायें, फिर उसके ऊपर पेशाव करें। जहाँ ऐसा होगा वहाँ सभी निद्रा मग्न हो जायेंगे।

चूहा, विल्ली, संन्यासी व ब्राह्मण—इन चारों प्राणियों के रोम इकट्ठा करके धूनी देने से कलह प्रारम्भ हो जाती है।

भांगरा के रस में सफेद सरसों पीसकर उसका तिलक लगाकर जिसके सामने जायेंगे वह स्तम्भित हो जायेगा इसका मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—"ओ३म् नमो भगवते शत्रुणां वुद्धिस्तम्भन कुरु-कुरु स्वाहा।"

जिस स्थान पर घोड़े, हाथी, गाय, भेड़ वंधते हैं वहाँ चारों ओर की जमीन में ऊँट की हड्डी दवाकर रख देने से इन पशुओं की गति रुक जायेगी।

केतकी की जड़ सिर व नेत्रों पर लगाने से शत्रु पक्ष की गति रुक जाती है।

पुष्य नक्षत्र में आकन्द की जड़ उखाड़कर उसे पीली कौड़ी में भरकर किसी फल के वीच रख लेवें। लड़ाई के समय उस फल को मुख में रख लेने से शत्रु से बचाव हो जायेगा।

किसी भी व्यक्ति की वाणी अवरुद्ध करने हेतु भोजपत्र पर कच्ची हल्दी से उस व्यक्ति का चित्र वनायें पीले धागे से उसे लपेटकर इसे पत्थरों से जमीन के नीचे दवा दें।

हरताल अथवा कच्ची हल्दी से भोजपत्र पर अभिलाषित व्यक्ति का चित्र खींचकर पीले रंग के धागे से लपेटकर इस भोजपत्र को पत्थर से बाँध दें व्यक्ति कहीं नहीं जा पायेगा।

किसी पर किसी ने टोटका या जादू कर दिया हो, या डरावने स्वप्न दिखलाई पड़ते हों—नीम के पत्ते, काली मिर्च, छोटी इलायची और काकड़ासिंगी सभी समभाग लेकर पीस लें। संध्याकाल में सात बार रोगी के ऊपर से उतारकर मिट्टी के सकोरे में अग्नि लेकर उस पर इस चूर्ण की धूनी करें। रोगी व्यक्ति को धूनी सुंघावें। ऐसा करने से सभी दुष्प्रभाव समाप्त हो जाते हैं।

शनिवार की संध्या को गूलर की लकड़ी लाकर चार अंगुल की नोकदार कील-सी बनाकर "श्री हनुमते नमः" का जाप करते हुए गाढ़ दें। इस प्रयोग से या तो शत्रु घर छोड़कर चला जायेगा या उसका उच्चाटन हो जायेगा।

सहदेवी की जड़ और अपामार्ग की जड़, दोनों को किसी लोहे के पात्र में घिसकर लेप बनायें। इस लेप का तिलक लगाकर जिसके सामने जायेंगे, उनकी बुद्धि स्तम्भित हो जायेगी।

ऊँट की हड्डी से बनी अंगूठी में हाथ की लीद से उत्पन्न होने वाले छत्रक को रखकर उस अंगूठी को बिच्छू द्वारा काटे व्यक्ति को पहनावे, इसके प्रभाव से जहर का प्रकोप शान्त हो जायेगा।

चूहे द्वारा काटे गये स्थान पर घरबेल की जड़ का टुकड़ा घिसें। इस प्रकार आठ टुकड़ों को घिसकर प्रत्येक बार टुकड़े

को मूषक द्वारा काटे व्यक्ति की पीठ के पीछे की ओर फेंकता जाये तो विष समाप्त होता है।

सिरस की जड़ बकरी के मूत्र में पीसकर काटे गए स्थान पर लेप कर दें।

चूहे द्वारा काटे गये स्थान पर कैथ के बीजों का तेल लगा देने से भी जहर उतर जाता है।

यदि किसी को चूहे ने काट लिया हो तो काटी गई जगह पर गर्म देशी घी चुपड़ दें और रोगी को कुछ समय पड़ा रहने दें इसके बाद बिल्ली से उस जगह को चटवादें। इस टोटके से चूहे का विष नष्ट हो जायेगा।

अष्ट धातु की अंगूठी को थोड़ा-सा गर्म करके बिच्छू द्वारा डंक मारे गए स्थान पर लगा देने से जहर समाप्त हो जाता है।

चिड़चिड़ा की जड़ को बिच्छू द्वारा काटे गये व्यक्ति को ६ बार दिखा देने से बिच्छू का जहर उतार जाता है।

तांत्रिक को चाहिये कि वह नीम के पत्ते को चबाकर बिच्छू द्वारा काटे गये व्यक्ति के कान में फूंक मार दे तो विष उतर जायेगा।

बकरी की मैंगनी पानी में पीसकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगा दें। विष समाप्त होगा।

बिच्छू द्वारा काटे स्थान पर मक्खी मलनी चाहिये।

बिच्छू द्वारा काटे गये व्यक्ति से २० से एक तक उल्टी गिनती गिनवाने से विष का प्रकोप कम हो जाता है।

सेंधा नमक का एक बड़ा-सा टुकड़ा लेकर पत्थर पर उसे

चारों तरफ से घिसकर सुपाड़ी के आकार का कर लें। इसके वाद उसे मल मार्ग पर रखकर लंगोट वाँध लें। इस प्रयोग के द्वारा मूत्र निकल जायेगा और वेदना कम हो जायेगी।

कुशा की वनी चटाई पर सोने से मूत्राशय सम्वन्धी व्याधियाँ दूर हो जाती हैं।

पिसी हुई हल्दी में आमले का रस व शहद मिलाकर चटायें। प्रमेह ठीक हो जायेगा।

ववूल की कोपलें १० ग्राम को वारीक पीसकर सम्भाग मिश्री मिलाकर खायें और ताजा जल पी लें, प्रमेह रोग से मुक्ति मिल जायेगी।

केवड़े की जड़ को उवालकर २५ ग्राम के लगभग उसका रस निकाल व उतनी ही मात्रा में मिश्री मिलाकर पी लेना प्रमेह में हितकारी है।

यह रोग अण्डकोष या पैरों को सुजाकर उन्हें मोटा कर देता है इस फील पांव रोग के लिए सोलह दाँत वाली पीली कौड़ी में छिद्र करें और काले रंग के धागे में गूँथकर फील पांव पर धारण करा देने से वढ़ती हुई वीमारी रुक जाती है।

हाथी के पाँव रोगी के पैर में जीमापोते के ११ वीजों में छिद्र करके काले रंग के सूत में पिरोने के उपराँत सूजन वाले स्थान पर वाँध देना चाहिये। इससे रोग रुक जाता है।

रविवार को उत्तर दिशा में पैदा हुए आक के पौधे की जड़ उखाड़कर लाल धागे में लपेटकर फील पाँव रोग के स्थान पर धारण कराने में रोग नष्ट हो जाता है।

पथरी के रोगी को लोहे की अंगूठी वनाकर दाहिने हाथ

की बीच वाली अंगुली में धारण करनी चाहिये। इस अंगूठी को शनिवार की सायं धारण करें। सम्भव हो तो शनि मंत्र का जाप भी कर लें।

शनिवार की प्रातः थोड़े चावल के दाने और पिसी हुई हल्दी लेकर शंखाहूली के पौधे के पास जायें और दूसरे दिन लेने का निमन्त्रण देकर लौट आयें। हल्दी चावल से उसका पूजन कर आयें। दूसरे दिन सर्वप्रथम सूर्य देवता को दूध का अर्घ्य दें और जड़ लावें। इस जड़ को लाकर रोगी व्यक्ति की कमर में बाँध देने से आँत का कष्ट मिट जाता है।

वहेड़े की गुठली को धागे में बाँधकर भुजा में धारण करने से शीतलता का भय समाप्त हो जाता है।

विजयसार के पेड़ की हरी जड़ को कुचलकर आठ गुने पानी में उबालें। जब पानी उबलने लगे तब उसमें रोगी के पहनने वाला शरीर का एक वस्त्र डाल दें। थोड़ा-सा पानी शेष रहने पर उस पानी के वर्तन को अग्नि से नीचे उतार लें। पानी में उबाले गये कपड़े को बिना निचोड़े ही सुखाकर रोगी व्यक्ति को उस वस्त्र को चार दिन तक पहिनावें। इस प्रकार से विसर्प रोग समाप्त हो जायेगा।

शरीर के घाव होकर विगड़ जायें और जल्दी ठीक भी न हों तो यह (नजर) दृष्टि-दोष समझना चाहिये। इसके लिये वर्तन में कुंआ का पानी भर लें और उसमें थोड़ी देर के लिये सोने की अंगूठी डाल दें, कुछ देर बाद आप उसे निकाल लें। उस जल से घाव को धो दें। घाव ठीक हो जायेगा।

शरीर पर मस्सों को गिनकर उतनी ही सावुत काली मिर्च के दाने लेकर उन्हें शनिवार की संन्ध्या को कहीं पर रख आवें

फिर रविवार के दिन प्रातःकाल एक नये सफेद सूती कपड़े की पोटली में बाँध, कुछ देर तक गले में पहने रहें, तत्पश्चात् गले से निकालकर किसी चौराहे पर चुपचाप रख आयें। मस्से सूखने लग जायेंगे।

वद की गाँठ में काले कौए का कलेजा बाँध लेना चाहिये, इससे वद की गाँठ बैठ जायेगी।

भिण्डी के पौधे की जड़ को धागे के द्वारा आंत के स्थान पर बाँध दें। लाजवंती पौधे की जड़ शनिवार के दिन लायें। फिर छल्ले जैसा मोड़ देकर लाल धागे से उसे कमर में बंधवा दें तुरन्त लाभ होगा।

किसी भी कारण से आँख में दर्द हो रहा हो तो जिस स्त्री की गोद में लड़का हो, उसका दूध आँख में टपकवा लें।

किसी छोटे बच्चे का दूध वाला दाँत गिरे तो उसे ताबीज में भरकर अपने पास रख लें, इससे दाँतों में होने वाला दर्द दूर हो जाता है। अथवा ब्रह्म मुहूर्त में लाई गई सेंहुड़ की जड़ को दर्द वाले दाँत के नीचे दवा लेवें।

दाढ़ में दर्द हो या कीड़ा पड़ गया हो तो उपरोक्त से झाड़ देने से दर्द समाप्त हो जाता है।

ओ३म् नमो आदेश गुरु की। बन में जाई अंजनी जिन जाया हनुमंत। बीसा मकड़ा मसकड़ा यह तीनों भस्मंत। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रातःकाल होने पर सूर्य की ओर मुख करके खड़े हो जायें और मुख खोलकर जिह्वा को तालु से लगायें तीन बार ऐसा करने से गुहेरी बैठ जायेगी।

प्रातः उठते ही, वासी मुंह दाहिने हाथ की अंगुली से जिह्वा पर से थोड़ा सा थूक बाँये हाथ की हथेली पर लेकर और अंगुली रगड़कर गुहेरी से लगा देने से वह जल जाती है।

शौच से निवृत होने के वाद गुदा को धो देने के बाद, दाहिने हाथ को तर्जनी अंगुली को गुहेरी की ओर करके १३ वार स्पर्श करें गुहेरी समाप्त हो जायेगी।

शुभ नक्षत्र में सहदेवी की जड़ लाकर पहन लेवें। आँखों की बीमारियों से मुक्ति मिल जायेगी।

हिचकी के रोगी के मुंह पर यकायक ठण्डे पानी के छींटे दे दें। इस प्रकार हिचकी रुक जायेगी।

लोवान व पौधे की जड़ को गले में धारण करने से खाँसी दूर हो जाती है।

सफेद सरसों की जड़ चिलम में रखकर तम्बाकू की भाँति पीने से खाँसी मिट जाती है।

हाथ में यदि अपरस की व्याधि हो जाए तो अण्डकील के वृक्ष को टहनी से तैयार की गई छड़ी सदैव उस हाथ में रखनी चाहिए। रोग समाप्त हो जाएगा।

जिस व्यक्ति का हृदय तेजी से धड़कता हो उन्हें प्रतिदिन ताजे दौने की पत्तियों की माला गले में पहननी चाहिये। इस प्रकार करने से हृदय की फड़कन नियमित हो जायेगी। पत्तियों के मुर्झा जाने पर उन्हें किसी चौराहे पर रख देना चाहिये।

खच्चर के खुरों को जलाकर इसकी राख को अलसी के तेल में मिलाकर सिर पर लगाना चाहिये, गंजापन मिट जायेगा।

घोड़े की लीद की भस्म को तिल के तेल में मिलाकर लगा देने से केश लम्बे हो जाते हैं।

गोरखुमुखी के चूर्ण को रात भर पानी में भिगोकर प्रातः उससे सिर धोने से सिर में कोई रोग नहीं हो पाता और केश काले व घने हो जाते हैं।

नींद लाने के लिए कंकाच की जड़ को पीसकर माथे पर लेप करने से गहरी नींद आ जाती है।

लाल अपामार्ग की पत्तियों की माला प्रतिदिन पहनने से कण्ठ माला रोग समाप्त हो जाता है यह एक कष्टदाई रोग है।

जिसे अधिक हिचकियाँ आ रही हों उसे अचानक डरा देने से हिचकियाँ रुकती हैं। यह एक टोटका मेरा अनेक वार परिक्षित है। सुदर्शन की जड़ को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके धारण करने से शस्त्रघात से रक्षा हो जाती है।

मन्त्र—"ओ३म् अहो-कुम्भकर्ण महाराक्षस नैकषागर्भ संभूत परसैन्य स्तम्भनं महावलवान रुद्र आज्ञापयति स्वाहा।"

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में वहेड़े का पत्ता लाकर घर में रखने से घातक टोटके का प्रभाव नहीं पड़ पाता।

लंगूर की आँख को ताबीज में भरकर धारण करने वाले व्यक्ति का वल बढ़ जाता है।

अमावस्या के तीसरे दिन से प्रातः स्नान करके निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें। नियमित जाप से रोगी रोग मुक्त हो जाता है।

ओ३म् नमो परमात्म पारब्रह्म मम शरीरे पाहि पाहि कुरू-कुरू स्वाहा।

श्वेत लक्ष्मणा की जड़ को घिसकर तिलक लगाने से आत्म-विश्वास बढ़ता है।

सियार के पंजे का नाखून धारण करने से थकावट नहीं होती है। मुर्गे की बीट को कमर में बाँधकर यात्रा की जाए तो भी थकान नहीं होती है।

ओ३म् नमो अग्नि रूपाय ह्रीं नमः। मंत्र के द्वारा अभि-मंत्रित मदार की जड़ को अपने समीप रखने से दुर्घटना की आशंका नहीं रहती है। शुक्ल पक्ष में सफेद घुंघची की जड़ को ऊपर लिखे मंत्र से सिद्ध करके चारपाई पर सिर की ओर रख लेने से चोरी का भय नहीं रहता है।

सर्प भय से मुक्त होने के लिए रवि पुष्य योग में गिलोय की जड़ लाकर उक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में माला की भाँति पहने। इस प्रकार सर्प भय समाप्त होता है।

अद्भुत कामना सिद्धि प्रयोग

सम्पूर्ण इच्छा पूर्ति मन्त्र—"ओ३म् ह्रीं नमः"

ग्रहण काल में इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर एवं मंत्र की पूजा कर १००८ बार जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर इस मन्त्र का जप करने से कामनायें पूर्ण होती-हैं। किसी अनुष्ठान के प्रारम्भ में १५ वार जप कर लेने से वह अनुष्ठान भी निर्विघ्न समाप्त होता है तथा सफलता प्राप्त होती है।

अपने अनुकूल बनाने का मन्त्र

"लं ह्लां, लां ह्लीं लीं लः 'अमुक' ठः ठः"

उपरोक्त मन्त्र को सवा लाख की संख्या में जपकर सरसों का दशांश हवन करें। हवन की भस्म को जिस व्यक्ति के घर में फेंका जायेगा वह व्यक्ति अनुकूल हो जायेगा। अमुक के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लेना चाहिये।

कार्य साधन का मन्त्र

"ओ३म् हुँ ह्लीं प्रचोदय फट् स्वाहा।"

इस मत्र का १००८ की संख्या में जपकर २१६ वार मधु से होम करने पर कार्य की सिद्धि होती है इसका जाप और हवन अमावस्या को करना चाहिए।

मनोकामना मन्त्र

"ओ३म् अंतरिक्षाय स्वाहा।

स्वाति नक्षत्र में बेर की जड़ ले आवें और इस मंत्र से २१६ बार अभिमंत्रित कर भुजा में बाँध लें तो इच्छा पूर्ण होगी।

शत्रु नाश का मन्त्र

"रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।"

प्रतिदिन यथा शक्ति इसका जप करना चाहिए।

मनोकामना प्राप्ति मन्त्र

ओ३म् ह्लीं मानसे मनसे ओ३म् हूँ।

इस मन्त्र का २१ वार जप करे और १००८ आहुति घी, दूब और चावल की करें तो इच्छित फल प्राप्ति होती है।

स्त्री प्राप्ति मन्त्र

'ओ३म् ह्रीं नमः'

लाल वस्त्र तथा मूँगे की माला धारण करके आठ दिन तक प्रतिदिन ६ हज़ार जप करने से अभिलाषित स्त्री की प्राप्ति हो सकती है।

धनधान्य वर्धक गणपति मन्त्र

'ओ३म् मं गणपतये नमः।'

यहाँ प्रथम कुम्हार के यहाँ से मिट्टी लावें, फिर गणेशजी की मूर्ति बनाकर पूजन करके २१ हजार उपरोक्त मंत्र जपने से समस्त विघ्नों की शान्ति होती है।

शत्रु विक्षिप्त करण प्रयोग

रविवार के दिन श्मशान की भस्म मदार के दूध में मिलाकर कागज पर इस मंत्र को लिखें और यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिखकर अग्नि में जला दें और ओ३म् हरिः श्री हरस्तया' मन्त्र को १०८ वार जपें तो शत्रु विक्षिप्त हो जाता है।

ओ३म् नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नि तेज से अमुक में शत्रु मारय पोथय पोथय हुँ फट् स्वाहा।

रात के समय जप करें तों ४१ दिन में यह मारण प्रयोग सिद्ध होता है।

मारण प्रयोग

साँप का दाँत भिलावे का तेल, धतूरे का चूर्ण तथा केशर इन सबको एकत्र कर ओ३म् नमः कालरूपाय अयम् भस्मी

कुरू-कुरू स्वाहा। इस मन्त्र से ११ बार अभिमंत्रित करके जिसके ऊपर फेंका जायेगा, उसकी मृत्यु हो जायेगी। मंगलवार को भरणी नक्षत्र में चिता की लकड़ी को 'ओ३म् नमः काल रूपाय अयम् मारय मारय स्वाहा। इस मंत्र को २१ बार पढ़-कर जिसके द्वार पर गाड़ दिया जाये उसकी मृत्यु हो जाती है। मनुष्य की हड्डी के चूर्ण को 'ओ३म् नमः काल रूपाय अयम् मारय मारय स्वाहा।' इस मंत्र से २१ बार पढ़कर अभि-मंत्रित करें। फिर जिस व्यक्ति को खिला दिया जाये तो उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

शत्रु के द्वारा प्रयोग की गई कोई वस्तु, के साथ बकरे का सींग, बीछी इन तीनों को मंगलवार को आधी रात श्मशान में भूमि में गाड़कर लीपें फिर उसी स्थान पर बैठकर 'ओ३म् मारय-मारय हुँ फट्' का जप करें। यह जप हड्डी की माला से होना चाहिए। इस प्रयोग शत्रु समाप्त हो जायेगा।

शत्रु नाश

'स्वाहा मारय हुँ अमुकं ह्रीं फट्'

जहाँ अमुक शब्द आया है, उस स्थान पर शत्रु के नाम का प्रयोग करते हुए शनिवार को ११ हजार बार जपें। इससे शत्रु की मृत्यु हो जाती है। केशर, चिता की भस्म और धतूरे का चूर्ण इन तीनों को मिला को मिलाकर 'ओ३म् नमः कालरूपाय अयम् भस्मी कुरू-कुरू स्वाहा' ११ बार पढ़कर अभिमंत्रित कर लें। शनिवार के दिन जिसके ऊपर डाल दिया जायेगा, वह मृत्यु को प्राप्त होगा।

कुटुम्ब नाशक मंत्र

'हुँ हुँ फट् अमुक कुल कुटुम्बाय नाशनाय स्वाहा।'

अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लेकर श्मशान पर उपरोक्त मन्त्र की कील अश्विनी नक्षत्र के दिन लेकर शत्रु के घर में दावकर रख दें तो शीघ्र ही कुटुम्व का नाश हो। कील को अभिमंत्रित भी करा लेना चाहिए।

चमगादड़ की खाल पर निम्न मन्त्र से श्मशान की लकड़ी से शत्रु का नाम लेते हुए प्रतिदिन ८ लकड़ी मारे। आठवें दिन साध्य व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होवे।

मन्त्र—भूताधिपतये अमुकं हन हन द ह पच पच फट् ठः ठः

कुल नाश का प्रयोग—

पुष्य नक्षत्र जिस दिन हो, उस दिन मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल कील लेकर शत्रु के घर में गाड़ देवें और निम्न मन्त्र को जपता रहे—

मन्त्र—ओ३म् ह्रीं अमुक कुलं नाशय फट् स्वाहा शत्रु पक्ष नाश को प्राप्त होगा।

संतति विनाश मन्त्र

'ओ३म् सुरेश्वराय अमुकशत्रु संततिः विनाशाय स्वाहा।'

इस मन्त्र को जपता हुआ मनुष्य साँप की हड्डी की चार अंगुल की कील लेकर भरणी नक्षत्र के दिन मृत्यु योग में ११०८ बार मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिस शत्रु के घर में रख देवें तो संतति का नाश हो जाता है अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लेना चाहिए।

मन्त्र द्वारा मारना

ओ३म् नमः काल स्वाहा शत्रु (अमुक) भस्मी कुरु-कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र ग्रहण में सवा लाख जपने से सिद्ध होता है सिद्ध होने के वाद प्रयोग के समय इसका जप. करे। जहाँ अमुक लिखा है वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

ओ३म् नमः सर्वकाल संहाराय अमुकं हन हन ह्रीं फट् स्वाहा।

नीम के पेड़ की कील वनाकर उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेटकर सात रात तक साध्य व्यक्ति का नाम कील पर चिता के कोयले से लिखकर उसे धूप देवे और कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्ण चतुर्दशी तक यह प्रयोग प्रतिदिन मंत्र जपे तो साध्य व्यक्ति को प्रेत पकड़ लेता है।

धन प्राप्ति

ओ३म् ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

सवा लाख जपकर दशाँश हवन करे, ऐसा करने से घर में धन स्थाई तौर पर स्थित होता है।

नौकरी प्राप्त करने का मन्त्र

काली कंकाली महाकाली मुख संदूर जिए काली चार वीर भैरूँ चौरासी बता तो पूंजू पान मिठाई अब बोलो काली की दुहाई। इस मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार पढ़ने से ३१ दिन में रोजी प्राप्त होती है।

गरीबी दूर करने के लिए विस्मिल्लाहिरहमानिरहीम

अलमोती हो वल्लाह शुक्रवार के दिन से इस दुआ को नित्य १६० वार पढ़े तो थोड़े ही समय में लक्ष्मी प्राप्त होगी।

सर्वकार्य सिद्धकर्ता पन्द्रह का मन्त्र

इस यन्त्र को सिद्ध कर लेने पर साधक को हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यदि प्रातः पवित्र होकर पंद्रह का यंत्र लिखा करे तो साधक की यश और गौरव की वृद्धि होती है। इसके सिद्ध करने की विधि यह है कि सोमवार के दिन शुद्ध होकर हवन करे और अपने कार्य की ओर लक्ष्य रखकर भोज-पत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से यह मन्त्र लिखे। पूजन कर धूप दिखावे फिर उसको सन्दूक में रख दे। इसी प्रकार ३१ दिन तक करे तो साधक के हर कार्य में अच्छी सफलता हो।

पन्द्रह का यन्त्र

२	६	४
७	५	३
३	१	८

इस यंत्र को कलह कराने में भी प्रयोग किया जाता है।

विधि :—

उपरोक्त यंत्र को हल्दी में गंगाजल डालकर अमरबेल की

कलम से पत्थर के ऊपर लिखकर १०८ बार नीचे लिखे मंत्र से अभिमंत्रित करके शत्रु के चौखट पर रख आवे तो उस घर में झगड़ा होने लगेगा।

ओ३म् ह्लीं क्लीं (अमुक-साध्य व्यक्ति का नाम) शत्रु गृह स्वाहा।

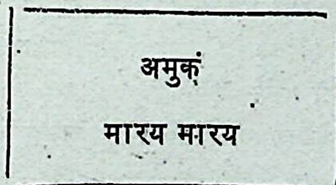
पुत्र अथवा कन्या के विवाह में अगर विघ्न हो तो ओ३म् ह्लीं क्लीं कात्यायन्ये नमः मंत्र का सवा लाख जप करे और दशांश हवन करे तो मनोकामना पूरी होती है।

शत्रु नाशक मन्त्र

ओ३म् ऐं ह्लीं महा विकराल भैरव ज्वलत्काय मम शत्रु दह-दह ह-हन-हन-पच-पच उन्मूल्य-उन्मूल्य ओ३म् हीं हूँ ही फट्।

श्मशान में जाकर भैंस के चर्म पर बैठकर रुद्राक्ष माला लेकर उपरोक्त मंत्र को जपे जाप के बाद सवा सेर सरों का हवन करे। सात रात ऐसा करने से शत्रु का नाश होगा।

शत्रु नाशक यन्त्र



लोहे की कलम लेकर चिता की राख से ११०० बार अर्क के पत्र पर लिखकर अग्नि में जलावे तो शत्रु का नाश हो।

मारण प्रयोग

ओ३म् नमः काल संहाय अमुकं हन-हन क्री हूँ फट् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र का प्रयोग करते समय जहाँ अमुक शब्द आया है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिए। इसमें दशाँश का हवन भी अवश्य करें।

सभा मोहन मन्त्र

ओ३म् नमो आदेश नरसिंह गुरु का ओ३म् शंखहूँली बन में फूली ईश्वर देख गर्व से जाय भूल आव-भाव से राजा प्रजा कदम गिराव जंगल मोहन वशीकरण मोहन मेरो नाम वे मोहन अमुक के हृदय वसी संग महसुर गाँव चल मोहिनी रावल चल जलती अंग झुझावत चल तीन गाँव आगे मोह तीन गाँव पीछे मोह तीन गाँव उत्तर मोह दर मोह गाँव दक्षिण मोह आते का नजर मोल तख्त बैठा राजा मोह पलंग बैठी रानी मोह दर मोह दिवाकर मोहू काजी की अकल मोह तू नरसिंह वीर हमारा कार्य ना ठः ठः ठः ठः स्वाहा।

शनिवार को संखहूली को न्यौता देकर रविवार को २१ बार मंत्र पढ़ विधि पूर्वक नरसिंह देव का पूजन कर चावल शुद्ध घी शक्कर से ११२ बार हवन का शंख हूली का गोला बनाकर रख ले। फिर इस मंत्र को २१ बार पढ़कर मिठाई स्त्री को खिलाये तो स्त्री वशीभूत हो जाती है।

गुड़ मोहनी मन्त्र

ओ३म् नमो आदेश गुरु को यह गुड़ राती यह गुड़ भाती यह गुड़ पड़ती जो माँगूं वही पाऊँ सोबत तिरिया को जगाय लाऊँ

भाल अगिया वेताल 'अमुक' हृदय पैठ चलावे चाल निशि को चैन न दिन को सुख घूम फिर ताके मेरा मुख जब मकड़ा मकड़ में टले तो माथ फार दो टूक हो पड्डे माला कलवा काली ९क कलवा सोई धाई चाटे मोरा तलवा। आँख के पान कवारी इसे धन और यौवन सो खरा पियारी रेन रग गुड़ में लसे शीघ्र 'अमुक' आवे फलाना पास हनुमंत जी के शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

सात शनिवार २२० बार मंत्र पढ़कर पूजन कर सिद्ध करे फिर थोड़े से गुड़ में अनामिका का रक्त मिला ३१ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को खिलावे वही मोहित हो जाये।

मिष्ठान द्वारा वशीकरण

ओ३म् नमो कामाख्या देवी को आदेश जल मोहूँ थल मोहू जंगल की हिरणी मोहू वाट चलन्ता वटोही मोहू दरबार बैठा राजा मोहूं पलंग बैठे रानी मोहु मोहनी मेरा नाम मोहु तारा तरीला तोतला तीनों वसे कपाल सिर चढ़े मातु के दरशन करूँ गात के मोहनी देवी की दुहाई फिरै।

शनिवार से प्रारम्भ करे। ३१ दिन तक लगातार १४४१ मन्त्र पढ़कर गुग्गुल से हवन करें फिर मिठाई पर ३१ बार मंत्र पढ़कर जिसे खिलावे वह मोहित हो जाये।

तेल द्वारा वशीकरण

ओ३म् नमो मन मोहिनी रानी सिंहासन बैठी मोह रही दरबार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई गौरा पार्वती बजरंग वली की आन नहीं तो लोना चमारी की आन लगे।

ग्रहण की रात्रि को २०१ वार जप कर सिद्ध करे फिर चमेली का तेल जिसे वशी करना हो उसके शरीर पर तेल का छींटा दे तो वश में होता है।

लौंग द्वारा वशीकरण

ओ३म् नमः आदेश गुरु का लौंग २ तू मेरा भाई तुम्हारी शक्ति चलाई पहली लौंग राती वाती दूजा लौंग जावत माती तीजी लौंग अंग में राखें।

चौथी लौंग दूहु कर जोड़े चारों लौंग जो खाय अमुक झट मेरे पास चली आए आदेश देवी कामरू कामाख्या की दुहाई फिरै।

इतवार से लगातार इक्कीस दिन तक २१ मन्त्र पढ़कर दीपक पूजन करे फिर चार लौंग ७ बार मंत्र पढ़कर जिसे खिलावे वह तन मन से मोहित हो जाता है।

सुपारी द्वारा वशीकरण

ओ३म् नमो देव देवेश्वर महारथे ठां ठं स्वाहा एक सौ आठ वार मंत्र पढ़ चित्ती सुपारी खिलावे तो मोहित होय।

ओ३म् नमः गुरु का आदेश पीर में नाथ प्रीत में माथ जिसे खिलाऊँ तिसे मोहित करूं फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

ग्रहण के अवसर पर नाभि तक गंगाजल में खड़े होकर ७ बार मंत्र पढ़कर १ सुपारी निगल जाय फिर जव पेट में से निकले तो गंगाजल से धोकर ११ मंत्र पढ़ जिसे खिलावे वही तुरन्त मोहित हो जायेगा।

फूल द्वारा वशीकरण

ओ३म् नमो कामरू कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल योगी, योगी ने लगाई फुलवारी फूल लोढे लोना चमारी एक फूल हँसे दूजे फूल मुसुक्यात जी फूल में छोटे बड़े नारसिंह आए तो सूंघ इस फूल की वास वह चल आवे हमारे पास दुश्मन की जाई हिया फटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार से २१ दिन तक धूप दीपक नैवेद्य लौंग फूल धरके घृत मिलाकर नित्य प्रति ११०८ वार हवन करे फिर सुगन्ध पुष्प को ७ मन्त्र पढ़ सूँघे तो मोहित हो चला आवे।

चम्पा फूल मोहिनी

ओ३म् नमो आदेश कामरू देश कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल योगी, योगी ने लगाई फुलवारी फूल लोढे लोना चमारी एक फूल रायी एक फूलमती एक फूल हंसी का फूल मुस्काय तहां लगचम्पा का गाछ चम्पा के गाछ में काला भंवरा रहाय जो भूत प्रेत मरे समान में आवे यह किसके काम आवे टोना टामन के काम पठाऊं काल भैरों जो लावे मुश्के वांध बैठी हो तो भगाय लावे सोवती होय तो जगाय लावे यह सोवता राजा के महलां प्रजा के पलंग तो मुझसे लेनी रानी यह फूल दूँ जिसके हाथ वह लौंग मेरे साथ हमको छोड़ पर घर जाय छाती फाटि वहीं मर जाय इसमें चूके उमाह सूखे लोना चमारी वाहरी योगी के कुण्ड में पड़ जाय वाचा छोड़ कुवारा जाय तो नरक खार में गिर जाये।

शनिवार की सायं को चंपा पेड़ को न्योता दे शाखा में लाल

कच्चा सूत बांध के चला आवे फिर रविवार को वहीं शाखा फूल सहित ले आवें और धूप दीप गुगुल नैवेद्य रख ११ दिन तक नित्य ११ बार मंत्र पढ़कर पूजन करे मदिरा, उड़द, तेल, गुड़, दही का भोग लगावे फिर जिसे चम्पा का फूल मंत्र पढ़ कर देवें वह सुंघते ही वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण मन्त्र

खंजन पक्षी की बीट, मुख इन दोनों को पीसकर भस्म बनायें जिसके सिर पर डाले वशीभूत होगा।

गागल पूंछ काछिंब नख शंख और सिंगरफ चारों चूर्ण कर जिसके सिर पर डालें तुरन्त वशीभुत होता है।

भोजपत्र पर लाल चन्दन द्वारा जिसका नाम रविवार के दिन लिखे और शुद्ध शहद में डुवो दे तो वह वश में होता है।

आकर्षण तन्त्र

अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष की मूल लाकर वकरे के मूत्र में पीसकर जिस किसी के सिर पर डाला जायेगा वह आकर्षित होगा।

दिवाली से पहिले एक हंडिया में रुपया रख पूजन कर फिर मूली न्योता देकर लावे और वीर्य तथा स्त्री रज रक्त में मिलाकर दिवाली के दिन श्मशान में ले जाय चिता भस्म मिलाकर जिस किसी के मस्तक पर डालें वह आकर्षित होता है।

स्त्री के वायें पैर की धूल लायें गिरगिट के रक्त में सान पुतला वनाकर हृदय में उसका नाम लिख मूत्र स्थान में गाढ़ कर उस पर मत्र करे तो भी वशीकरण होता है।

ओ३म् एं एं एं लं लं लं क्रं क्राँ ठं ठं स्वाहा।

जिसे बुलाना हो उसका मन में स्मरण करके विधि अनुसार मंत्र पढ़ कुलीरा पक्षी के मांस का १०८ बार होम करे तो वह वशीभूत होता है।

ओ३म् नमः ह्रीं ठां ठः स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र का मंगलवार से दस हजार जप सिद्ध करे फिर चूहे की बांबी की मिट्टी सरसों और बिनौला २१ बार मंत्र पढ़कर जिसे आकर्षण करना हो उसके वस्त्र पर मारे तो अवश्य आकर्षित होती है।

ओ३म् नमः भगवते रुद्राय सदृष्टि लीप नाहर स्वाहा कंसासुर की दुहाई।

मंगलवार से प्रारम्भ कर बीस मंगल तक १२२ मंत्र जप दशांश हवन लिखे अनुसार प्रयोग करे तो भी आकर्षण होता है।

सफेद कलिहारी की जड़ लेकर जिस किसी का उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ देने से शीघ्र उच्चाटन हो जाता है।

शिवलिंग बनाकर उसके ऊपर ब्रह्मदण्डी और चिता की भस्म का लेप करे, फिर सफेद सरसों के साथ शनिवार के दिन उस शिवलिंग को जिसके घर में फेंक दिया जाए तो उसका उच्चाटन हो जाता है।

गूलर की लकड़ी की चार अंगुल की कील लेकर जिस मनुष्य का उच्चाटन करना हो उसके शयन गृह में गाड़ दे तो उच्चाटन होता है।

सफेद सरसों और शिव निर्माल्य जिसके घर में डाल दिया जाय उसका उच्चाटन हो जाता है।

ओ३म् नमो भीमा स्याय अमुक गृहेउच्चाटन कुरु कुरु स्वाहा। आयुत् जपात् सिद्धि।

उपरोक्त मन्त्र को ३१ हजार बार जपकर सिद्ध कर लेवे जहाँ अमुक शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिए। इसके माध्यम से भी उच्चाटन हो जाता है।

ओ३म् नमो नारायण अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र से धूल को अभिमंत्रित कर जिसके घर में भी डाल देवें उसी का उच्चाटन हो जायेगा।

घोड़े के नख को लाकर उनकी कीलें बनावें। अश्विनी नक्षत्र में शुक्रवार के दिन वट वृक्ष के नीचे श्मशान भूमि में बैठ उपरोक्त मन्त्र का ११००० बार जप करे। मन्त्र सिद्ध होने के पश्चात उस कील को जिसके घर में गाड़ दे उसी का उच्चाटन हो जायेगा।

—: ० :—

इस यन्त्र को श्मशान के कोयले से शत्रु के वस्त्र पर लिखे तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

यन्त्र

नाम	टं	टं	टं	टं
	टं	टं	टं	टं
	टं	टं	टं	टं
	टं	टं	टं	टं

उच्चाटन यन्त्र

इस यन्त्र को लोहे की कलम से ताम्बे के पत्र पर किसी स्याही से लिखे तो उच्चाटन हो जाता है।

यन्त्र

शं	शं	शं	शं	नाम
शं	शं	शं	शं	
शं	शं	शं	शं	
शं	शं	शं	शं	

कौए के पंख से और उसी के रक्त से भोजपत्र पर जिसका भी नाम लिख दोगे उच्चाटन हो जायेगा।

यन्त्र

ओं ह्लीं फट् स्वाहा	नाम

गये को बुलाने का यन्त्र

काले कुत्ते का रक्त लेकर इस यन्त्र को भोजपत्र पर मंगलवार के दिन लिखकर पूजन करें। फिर उसे कपड़े में लपेट कर किसी कुत्ते के गले में बांध देवें तो जैसे-जैसे वह कुत्ता भागेगा वैसे यह व्यक्ति दौड़ता हुआ आवेगा।

ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं

ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं	नाम श्रीं (माँ का नाम)	ह्लीं ह्ल ह्लीं ह्लीं

स्तम्भन प्रयोग

ओं वं वं हं ह्रीं घ्रां ठः ठः। ग्यारह हजार वार जपें। मंगलवार को निगोही का बीज लेकर इकत्तीस वार मन्त्र पढ़ें जिस पर फेंके वही स्तम्भित हो जाए।

ओं ह्रीं महिष मर्दिनी लह लह लह कठ कठ स्तम्भनं कुरू अग्नि देवाय स्वाहा।

इस मन्त्र को १०८ बार खैर काष्ठ को अभिमन्त्रित कर अग्नि में डालें तो अग्नि स्तम्भित हो जाती है।

ओं नमः अग्नि रूपाय मे देहि स्तम्भन कुरू कुरू स्वाहा।

मेढक की चर्वी और घी गुवार को १०८ बार उपरोक्त मंत्र पढ़कर लेप करें तो शरीर अग्नि से सुरक्षित होता है।

ओं नमो कोरा कारावायल सो भरिया, ले गौरी के शिर धरिया ईश्वर ढाले गौरा नहाय जलती अगिया शीतल हो जाय।

नये करवों में सात बार जल भर सात वार मन्त्र पढ़कर जल का छींटा दें तो जहां तक छींटा जाता है वहाँ तक आग नहीं लगती है।

अग्नि में घोड़ों का खुर और बेंत की जड़ डालो तो अग्नि से कपड़ा न जलता है।

मूलहट्टी व भांगर का रस हाथ में लगाकर आग हाथ में उठा लें तो हाथ नहीं जलता है।

नौसादर व कपूर हाथ में लगा के आग उठावें तो हाथ नहीं जलता है।

स्तम्भन मन्त्र

ओं नमः भगवते रुद्राय जलं स्तम्भय-स्तम्भय ठः ठः स्वाहा। कमल को महीन पीसकर ११ वार मन्त्र पढ़कर जल में छोड़ने से जल स्तम्भित हो जाता है।

लिसौड़े का चूर्ण बनाकर अभिमन्त्रित कर जल में छोड़ें तो जल स्तम्भित हो जाता है।

ओं मेधा स्तम्भन कुरू कुरू स्वाहा।

नई ईंट पर चिता की राख से चारों तरफ चार रेखा खींच एक ईंट उस राख पर रख के १०८ वार मन्त्र पढ़कर श्मशान में गाड़े तो मेघ बरसना बन्द हो जाता है।

ओं नमो भगवते मम शत्रु बुद्धिस्तम्भय कुरू कुरू स्वाहा।

उल्लू की विष्ठा को सुखाकर १०८ वार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर खिलावें तो बुद्धि नष्ट हो जाती हैं।

ओं नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसन स्तम्भनं कुरू कुरू स्वाहा।

श्मशान में जाकर एक हजार आठ बार मंत्र पढ़ें तो आसन स्तम्भित हो जाता है।

जहाँ पर नदी और समुद्र का मिलन हुआ हो वहाँ जाकर अपने हाथों से किनारे की मिट्टी लावें और कुत्ते की दुम के बाल

लाकर दोनों को मिलाकर गोली बनाकर तेल डाल दें और जिसे दिखावें तो बैठा मनुष्य उठ नहीं सकता है।

रजस्वला स्त्री का रक्त वेष्टित वस्त्र लाकर गोरोचन और मजीठ से जिसका नाम लिखकर घर में डाल दें तो वह स्तम्भित होता है।

ओं ह्रीं रक्ष रक्ष चामुण्डे अमुक मुँख स्तम्भनं कुरू कुरू स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र सवा लाख बार जप कर सिद्ध करे फिर पुष्य नक्षत्र रविवार में मुलहठी की जड़ लेकर तीन बार मन्त्र पढ़कर भीड़ में फेंके तो सब व्यक्तियों का मुख स्तम्भित हो जाता है।

ओं नमो ह्रीं वगला मुखी सर्व दुष्टानां मुखं स्तम्भन जिह्वाँ आलय बुद्धि विनाशने ओं स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र सवा लाख विधिपूर्वक जपें फिर एक थाल में शुद्ध घी भर हल्दी से षट्कोण यन्त्र बनाकर छहों कोणों में ओं लिखकर सामने धरें फिर दशांश होम करें यह मन्त्र शत्रु की जुबान वन्द करने का है।

जिह्वा बन्धन मन्त्र

अफल अफल अफल दुश्मन के मुंह कुफल मेरे हाथ कुंजी रूपया तोरे दुश्मन को जर कर।

शनिवार से सात रात धूप दीप जलाकर फूल बताशा लेकर हजार बार होम करें फिर १०८ बार मन्त्र पढ़कर जिसके भी सामने जाय तो वह बोल न् सकेगा।

ओं ह्लीं रक्षक चामुण्डे कुरु कुरु, अमुक मुख स्तम्भनं कुरु।

पलाश की जड़ ताड़ के पत्ते में लपेट २१ वार मन्त्र पढ़कर शत्रु के सम्मुख जाये तो स्तम्भित हो जाये।

महुआ और ककड़ी की जड़ पीसकर सूंघने से नींद स्तम्भित हो जाती है।

सोमवार को अपामार्ग की जड़ को कमर में बाँधें तो वीर्य स्तम्भित हो।

घुग्घू की जीभ एक रत्ती गोरोचन के साथ पीस ताँबे की तावीज में रखें फिर बाँह में बाँध कर सम्भोग करें तो वीर्य स्तम्भित हो।

धार धार खण्ड धार बाँधू सात बार फिर बाँध त्रिवार चले धार न लागे घाव सीर राखे श्री हनुमान श्री गोरखनाथ लोहे का कड़ा मूंकाबाण लागे न पैनी फार कुंठित होय तलवार।

चौराहे की धूल २१ बार मन्त्र पढ़कर धार पर मारे तो धार स्तम्भित हो जाती है।

सुदर्शन की जड़ बाहु में बाँधने से चोट नहीं लगती है।

ओं अहो कुम्भकर्ण महा राक्षस निकशा गर्भ अज्ञापय स्वाहा।

श्वेत गुंजा की जड़ दाहिनी भुजा में बाँध कर जाने से स्तम्भन होता है।

दूध निकलने वाले वृक्ष की पाँच अंगुल की एक कील भरणी नक्षत्र में वनाय नौका के छेद में डाले तो नाव नहीं चलती है।

ओं ह्रीं गर्भ धारिणे स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।

कृष्ण चतुर्दशी को धतूरे की जड़ लाये रति समय कमर में बाँधे तो गर्भपात नहीं होता है ।

ओं नमो आदेश गुरु को ओं नमः आदेश अंग में बाँधि राख, नरसिंह यती मोसतें बाँधि राख श्री गोरखनाथ काँखते बाँधि राख, हपूलिका राजा सुण्डी से बाँधि राख दृढ़ासन देवी यही मन पवन काया को राख थमे गर्भ आ बाँधे घाव माँ माता पार्वती वह गंडौ बाँचू ईश्वर यती जब लग डाडों कर पट रहे तब लग गर्भ काया में रहे फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ।

कुमारी कन्या का काता हुआ सूत गर्भवती स्त्री के एड़ी से चोटी तक नाप सात सूत का सात मन्त्र पढ़कर सात बालकों से गाँठ लगवा गंडा बनायें स्त्री की कमर में बाँधे तो गर्भपात नहीं होता है ।

हिवत्तरे कुल की दशी नाम राक्षसी एतेषां स्मरण मात्रेण गर्भो भवति अक्षयः ।

सात बार पढ़कर डोरा बाँधे तो गर्भपात नहीं होता है । यह प्रयोग मेरा है ।

पुष्टि कर्म

ओं परब्रह्म परमात्मने नमः उत्पत्ति स्थित प्रलय कराय ब्रह्मा हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वं कौतुकं कुरु कुरु स्वाहा ।

ग्रहण में सवा लाख मंत्र २१ दिन में जपे फिर किसी भी कार्य में १०८ बार मंत्र जप करे तो तुरन्त कार्य बनता है ।

ओं नमो परमात्मने परब्रह्म नाम शरीर एहि वाहि कुरु कुरु स्वाहा । यह मन्त्र सब कार्यों में शरीर की रक्षा करता है ।

याही सार सार सार जिन्नदेवपरी नमस्करफार फार एक खाये दूसरे को फार चहुं ओर अमिया पसार मलायक अस चार दुहाई दस्तखें जिब्राइल बाइ वे खंभि काइल दांई दस्न दस्न हुसैन पीठ खंदे खेई आमिल कलेजे इज्राइल दुहाई मुहम्मद अलोलाह इलाह को कंगूर लिल्लाह की खाई हसरत पैगम्बर अली की चौकी नक्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

मन्त्र जपते समय भय लगे तो २१ वार मन्त्र पढ़कर चारों ओर ताली वजाय लकीर खींच दे तो भय दूर हो जाता है।

ओं नमो कामरू कामाख्या देवी कहाँ जाने को हुआ मेरा मन आत्मरक्षा वंदि होऊं सावधान सिर हाथ दंहत औ बंधन गर्दन पेट पीठ बंधन और वंधन चरण अष्टांग बाँधू मनसा के वरदान करा सके उमा के वान। कामाख्या वह होऊ। अमर, आदेश हाडि दासी चण्डी की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र सात वार पढ़कर जहाँ कहीं जाये तो कोई भय नहीं रहता।

घर से अढ़ाई पग निकल सात वार मंत्र पढ़ गमन करे तो भय नहीं होता।

रक्षा मन्त्र

ओं नमः वज्र का कोठा जिसमें पिंठ हमार पठा ईश्वर की कुंजी ब्रह्मा का ताला मेरे आठोंयाम का यती हनुमन्त रख वाला।

इसे सात वार पढ़ने से शरीर की रक्षा होती है।

हुक्मशेखं फरीद कमरीया निशी अन्धियरिया आग पानी पथ तीनों से तोही बचइथा।

यह मंत्र तीन वार पढ़कर ताली वजावें भय नहीं लगेगा।

हाट चलते बाट बाँधू वाट चलते घाट बाँधू स्वर्ग में राजा इन्द्र बाँधू पाताल में वासुकी बाँधू शिकाली वाध तोड़ के मछली मारू टेंगरामाछ मारी गाछ फुटे डाल कारू फूले उठे तार खाईवन किते उजार आये आगे आगे बाँधू पाछू आये।

पाछू बाँधू बाँये दाँये बाँधू यह बंधन को बाँधत ईश्वर ईश्वर महादेव बाँधू देवे हिम घर में सहदेव हम सोय रहेऊँ अकेला लोहे के दो कला माँस कर पत्थर हावेवा काटे कूट वड़े पिता धर्म की दुहाई।

एक मुट्ठी में सरसों रखकर २१ वार मंत्र पढ़कर घर के चारों ओर छींटे देवे। घर बंध जायेगा, फिर कोई भय नहीं रहेगा।

शुक्लपक्ष में पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुंजा की जड़ अपने सिरहाने बाँधे तो चोरों का भय नहीं होता है।

ओं धूं भाँजन हुंकार स्फटिका दह दह ओं।

मंगलवार कोकर्पटिका वृक्ष के नीचे मृग चर्म पर वैठ गोधूली की लकड़ी जलाकर सरसों और गूगुल को उपरोक्त मन्त्र पढ़कर हवन करे तो चोर धन सहित वापस आ जाता है।

ओं नमो इन्द्राग्नि बंध बाँधाय स्वाहा।

जिन व्यक्तियों पर सन्देह हो उन सबों का नाम शनिवार को भोजपत्र पर लिख १०८ वार मन्त्र पढ़कर अग्नि में एक आहुति डाले चोर का नाम वाला भोजपत्र नहीं जलेगा।

विजय मन्त्र

ओं नमः विश्वमभराय (अमुकेन) विजयं कुरु कुरु स्वाहा ॥

एक हजार वार जपकर सिद्ध करे फिर ओंगा, धतूरे की जड़ और कुंकुम हरिताल पीसकर १०८ वार मन्त्र पढ़कर तिलक करे तो विजय हो।

ओं नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी अग पहुरू भुडंगा पहुरू लोहे शरीर आवत हाथ तोड़ू पाँव तोड़ूं सहाय हनुमन्त वीर उठ अब नरसिंह वीर तेरो सोलर सौ शृंगार मेरी पाठ लगे नाहीं तो वीर हनुमन्त लजाने तू लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिंदूर आपनी देहु सबल मोही पर देह भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

मंगलवार से आरम्भ कर ४१ दिन तक १०८ बार जपे पहले गेरू का चौका लगायें लाल लंगोटा पहन लड्डू का भोग धरे फिर ११ वार मन्त्र पढ़कर लड्डू खाये तो जीत हो।

ओं क्रां क्रां धूम सरी बदाक्ष विजयति जयति ओं स्वाहा।

त्रयोदशी में जब पुनर्वसु नक्षत्र पड़े तब हाथी के चर्म पर नदी किनारे मूंगे के माला से मन्त्र जपे फिर २१ बार मन्त्र पढ़कर जाये तो जीत हो।

ओं नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं वानरी विजयपति स्वाहा।

दीपावली की रात को पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर मन्त्र पढ़कर कदम्बरी पुष्प का हवन करे। फिर एक फूल २१ वार मन्त्र पढ़कर दाँये हाथ में बाँधकर जुआ खेले तो जीत हो, जुए में अत्यधिक उत्साह ना दिखावें।

लक्ष्मी का मन्त्र

ओ३म् नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मी दायिनी बांछा भूत-प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्वं शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी सिद्ध ऋद्धि वद्ध कुरु कुरु स्वाहा। ओ३म् नमः क्लीं क्लीं श्रीं पद्मा-वत्यै नमः।

गुग्गुल गोरोचन छारछबीला कपूर कचरी की मटर की गोली बनायें रवि के दिन से आरम्भ करें और १०८ बार मंत्र आधी रात में जपे और दशांश का हवन करे। हवन में सब वस्तु लाल होनी चाहिए।

लक्ष्मी को लाल वस्तु प्रदान करनी चाहिए और लाल वस्त्र पहिनकर ४२ दिन तक पूजा करें तो लक्ष्मी की कृपा होगी।

ओं ह्रीं श्रीं श्रीं ध्वः श्वः।

मृगशिरा नक्षत्र में मारे हुए मृग के चर्म या कनकागुदी पेड़ के नीचे बैठ सवा लाख मंत्र २१ दिन में जपे तो धन मिले।

भादों मास कृष्णपक्ष में जब भरणी नक्षत्र आवे तब चार कलशे में जल भरकर एकांत में धरवावें फिर दूसरे दिन प्रातः समय जो खाली हो उसे ले आवें। और तीनों का जल यहीं गिराकर कलशे को छोड़कर चला आवे। फिर खाली हुए कलशे को अन्न से भर नित्य पूजन करे तो अन्न हर समय भरा ही रहे।

ओं नमः श्रीं ह्रीं क्लीं सर्व्व निधि प्रख्य नमो बिच्चे स्वाहा।

कौआ की जीभ, काली गौ के दूध में औटाकर काढ़ा बनायें

घी निकालकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर काजल वनायें। आँखों में अञ्जन करे तो गढ़ा धन दिखाई देवे।

ओं कनक स्फुटि विश्व के सेना चीग्ड आंजनी परमां दृष्टि कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्णिमा को मारे हुए कस्तूरी युक्त हिरण उसके चर्म पर आसन वनाकर वैठकर मूंगा की माला से ११०८ वार मन्त्र जपे तथा आहुति करे और अष्ट धातु पर मन्त्र लिखकर संमुख रखें तो जहां धन गाढ़ा हो हाथ वहीं जाकर ठहर जाता है।

ओं नमः एवति सुमेरू रुपया सहाकालाय कक्डाल रूपाय फट् स्वाहा।

गेहूँ व तिल का चूर्ण वना करके शुद्ध घी में गूंधकर जिस स्थान पर हवन करे तो कोई भय न रहे।

जहाँ गढ़ा धन हो वहाँ एक हांडी में गेहूँ भरके गाढ़ें। आठ दिन के वाद उखाड़े गेहूँ भरा देखें तो निश्चय धन जानिये और खोदते समय अगर कमल की गन्ध आवे तो धन निश्चित जानना चाहिये।

ओं नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे घृत पूरे गणेश जी पाती पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

मन्त्र जपकर अन्नपूर्णा को भोग लगावे फिर एक भाग कुएँ में डालकर एक लोटा जल भर लावे। फिर दीप जलायें भंडार में अन्नपूर्णा का पूजन करे, १०८ वार जप क़रें तो भण्डार भरा रहे।

ओं नमो आदेश श्री गुरु को गजानन वीर बसे मसान अवदो

ऋद्धि को वरदान जो जो मांगू सो सो आनपांच लड्डू सिर सिंदूर हाट बाटका मटी मसान को सब ऋद्धि-सिद्धि हमारे पास पठे व शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

भण्डार से पहले पाँच लड्डू निकाल सिंदूर लगाये गणपति का पूजन कर एवं कलश में एक लड्डू धर कुएँ पर आकर जल भरें और मन्त्र पढ़कर चारों लड्डू कुएँ में छोड़ दें। फिर भण्डार घर में कलश स्थापना करें तो भण्डार भरा रहे।

शिर पीड़ा

सहस्र घर वाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, मन्त्र कांचा ना फुरो वाचा।

२१००० बार जपकर ग्रहण पर सिद्ध कर लेवें। जब कोई रोगी आवे तो उपरोक्त मन्त्र पढ़कर उसके मस्तक को हाथ से पकड़कर फूंक मारें तो मस्तक की पीड़ा शान्त हो जाती है।

नकसीर

ओं मारतो लारतो दशो दिशा धावत पर्वत कूटे खंड खंड करता मन्त्र सांचा फुरो वाचा।

एक कटोरे में पानी भरकर ऊपर के मन्त्र को पढ़कर फूंक मारकर अभिमन्त्रित करें। उस पानी को नकसीर के रोगी को देखकर पिलायें। इसको कई बार करे। नकसीर का बहना बन्द हो जायेगा।

नेत्र कष्ट

ओं नमो झलझल जहर भरो तलाई। अस्ताचल पर्वत ले आई।

तहाँ बैठे हनुमान जाईं। फूटे न पाके करे न पीड़ा यती हनुमन्त राखे पीड़ा दूर। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

नींबू के पेड़ की डाली से उपरोक्त मन्त्र पढ़कर नेत्रों को २१ बार झाड़ें। इस प्रकार सात दिन तक झाड़ना चाहिये। इस प्रकार झाड़ा लगाने से आँखों के सभी प्रकार के कष्ट शांत हो जाते हैं।

पीलिया

ओं नमो वीर वैताल विकराल नरसिंह देव खादौ पीलिया कूं मिदातो कारे मारे पीलिया रहे न नेक निशान। जो कहीं रह जाय तो जती हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

एक कटोरे में कड़वा तेल लेकर रोगी के मस्तक के ऊपर रखें और फिर इस उपरोक्त मंत्र को पढ़ता हुआ कुशा से तेल को चलाता जावे। जब वह तेल पीला हो जावे तब उसे उतार कर चौराहे पर फिकवा दें। इस प्रकार पाँच दिन करें।

झाड़ फूंक

ओं कनक प्रहार धन्वर छार प्रवेश कर डार-डार पात-पात झार-झार मार-मार हुंकार-हुंकार शब्द सांचा पिंड कांचा ओं क्रीं क्रीं।

सांप की बांबी की मिट्टी लाकर इक्कीस बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके कान से स्पर्श करा दें। कान दर्द शान्त हो जाता है।

कण्ठमाला

ओं ह्रीं नमो नरसिंह गुरु आदेश को धाई कराई काचक्र चलन्ता दहन करेता छन्दन भवन ओं ठः ठः।

उत्तर की तरफ मुंह करके बैठकर पुरुष के एक ही हाथ के खोदे हुए कुशों से सोमवार के दिन उपरोक्त मंत्र से झाड़े तो कंठमाला शांत हो जाता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ओं नमो सुरही गाय पर्वत पर जाय हरी दूब खाती फिरे ताल तलैया पानी पिये, सुरही गाय ने गोबर किया, जामें उपजे बिच्छू सात, काले, पीले धौले लाल रंग बिरंग और हरा उत्तर रे उतर विच्छू के जाए, नहीं काक जो उड के आय, सत्य नाम आदेश गुरु का शब्द सांचा हांड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को ग्रहण की रात को ११०८ वार जपकर सिद्ध कर लेवे। जब झाड़ना हो तब एक कटोरे में पानी भरकर उपरोक्त मंत्र से २१ वार अभिमंत्रित करके रोगी को पिलावें तो बिच्छू का जहर उतर जावेगा।

नजर

ओं नमो सत्य नाम आदेश गुरु का ओं नमो नजर जहाँ पर पानी जानी। बोले छल सों अमृत बानी। कहो नजर कहाँ से आई। यहाँ की ठौर तोय कौन बताई। कौन जाति तेरी कहाँ ठाम। किसकी बेटी क्या है तेरा नाम। कहाँ से उड़ी कहाँ को जाय। अब ही वास कर ले तेरी माय। मेरी बात सुनो

चितलाय। जैसे होय सुनाऊँ आय। तेली, तमोलिन, चुडिहारिन, चमारिन, कायस्थिन, खतरानी, कुम्हारिन, मेहतरानी, राज्य की रानी जाको दोष वाहे के सिर पड़े जाहर पीर नजर के रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

उपरोक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ मोर के पंख से रोगी के सिर से पैर तक झाड़े। नजर लगी हो तो ठीक हो जायेगी।

पशु रोग

ओं नमो बली देहली बांधि दहलावे रोग सारी सांट की यह पशु नीको हो जाय।

पशु को पूरब-पश्चिम खड़ाकर बांस की खपच्ची से सिर से पूंछ तक झाड़े।

पशुओं के कीड़े

ओं नमो कीड़ा रे तू कुण्ड कुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुंह काला, मैं तोये बूझा, कहाँ ते आया, तो ही तूने सबका खाया, अब तू जाय भस्म होई जाय, गुरु गोरखनाथ करे सहाय।

उपरोक्त मन्त्र द्वारा नीम की टहनी से २१ बार झाड़े तो कीड़े मर जायेंगे।

गर्भपात

गौरी गण्डा दे गई ईश्वर दे गया वाचा, महादेव थापा घर गयो शब्द भया सांचा। दश त्रिया की चिंता मेटी दश मांशा बांधूं बीस पाख बांधूं इसका पैर घिसे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्यनाम आदेश गुरु का।

३१ बार जपकर गण्डा बनाकर गर्भवती की कमर में बाँध देवें।

दर्द को दूर करने का मंत्र

सकोरे में तांबे में शीशे में पानी में सीपी में कीड़ा मरे पीड़ा टरे। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सात कीलों को मन्त्र पढ़ते हुए दाढ़ से स्पर्श कराये और फिर कुएं में डाल देवें तो दाँत सम्बन्धी कष्ट शान्त हो जायेगा।

बच्चे का रोना

ओं नमः बिछा इव दहनाय पूतनाय स्के क्रां ह्रीं ओं।

सूर्योदय के पहले नई २१ सींक ले आवे और मंगलवार को मन्त्र पढ़कर उन्हीं सींकों से २१ बार झाड़े तो रोता हुआ बालक चुप हो जायेगा।

टोना

ओं काया कल्प कपाट बज्र लंका अलट पलंका पलट दूर-दूर हट टोना नजर आदेश गुरु का मन्त्र फुरो वाचा शब्द सांचा ईश्वरोवाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ ओं।

मुसलमानी पलीता बनाकर अलसी के तेल में भिगोकर जलायें तेल कांसे की थाली में टपकेगा। उसी समय ३१ बार

मन्त्र पढ़कर बालक पर फूंक मारे और थाली का थोड़ा सा तेल लेकर बालक पर फूंक मारे थाली का तेल लेकर बालक के शरीर में लगावें। बालक पर किया हुआ टोना दूर हो जायेगा।

प्रेत

ओं ह्रीं क्लीं कंकाल कपालिनी कूटम्बरी आडम्वरी भंकार घः घः।

भूत प्रेत ग्रस्त को रविवार के दिन नीम की पत्तियों की धूनी देवे तथा उपरोक्त मन्त्र से ३१ बार झाड़ा लगावे तो भूत प्रेत भाग जायेंगे।

आधा शीशी

ओं नमो वन में ब्यायी वानरी उछल वृक्ष पै जाय। कूदि कूद शाखानं पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधा देय गिराय। हुंकारत हनुमान को आधा शीशी जाय। मन्त्र सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

रोगी को सामने बिठाकर चाकू से पृथ्वी पर सात रेखा उपरोक्त मन्त्र पढ़कर खींचे। फिर सात रेखा आड़ी अर्थात पहले वाली रेखा को काटती हुई खींचे। इस प्रकार सात बार करे तो आधा शीशी का रोग दूर हो।

हवा झारने का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु का काली चिड़ी चिग-चिग़ करे। धोला आवे बाने हरी यती हनुमान हांक मारे अथवाई और बाई जाय भगाई हवा हरे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर चाकू से पृथ्वी पर रेखा अपनी ओर खींचे। रोगी का हाथ जमीन पर धरवाये। इस प्रकार झारने से ११ वार में रोग दूर हो जायेगा।

भूत का झारा—ओं नमो आदेश गुरु का मन्त्र सांचा कण्ठ कांचा दुहाई हनुमान वीर की जो जावे लंका मझारी आन लक्ष्मण वीर की आन माने जाके तीर की दुहाई मेमना पीर की बादशाह ज्यादा काम में रहे आमदा दुहाई कालिका माई की धौलागिरिक वारी चढ़े सिंह की सवारी जाके लंघूर है अगारी प्याला पिये रक्त की चंडिका भवानी, वेदवानी में बखानी, भूत नाचे बेताल नाचे, राखे अपने भक्त की लाली मेहर वाली काली कलकत्ते वाली हाथ कंचन की थाली लिए ठड़ी भक्त बालिका दुष्टन प्रहारी सदा संतन हितकारी उतर भूतराज जल्दी कर नहीं तो खाय तो को कालका माई उन्हीं की दुहाई भक्त की सहाई। सारे संसारन में माई तेरी ज्योति रही जाग के पकड़ के पछाड़ के मात कर मत अवार कर तेरे हाथ में कृपाल भक्षण कर ले जल्दी आई के जाय नाहीं भूत पकड़ मार, जाय भूत उतर—उतर-उतर तो राम की दोहाई। गुरु गोरखनाथ का फंदा करेगा तोय अन्धा फुरो मन्त्र हुं फट् स्वाहा।

जब भूत मनुष्य के ऊपर आवे तो उपरोक्त मंत्र से झाड़ना बहुत लाभदायक है। वह तुरन्त भाग जावेगा।

अब हम अपने अगले अध्याय 'कौआ तंत्र-मंत्र' की ओर बढ़ते हैं। साधकों! इसमें वर्णित प्रयोगों को करने से पहले विशेष सावधानी रखें, श्रद्धा और विश्वास बनाए रखें। तब ही आप प्रयोगों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।



चमत्कारी कौआ तन्त्र-मन्त्र

कौए द्वारा तांत्रिक साधना

जिस प्रकार अन्य अनेक पक्षियों के माध्यम से ताँत्रिक साधना की जाती है उसी प्रकार कौए के माध्यम से भी तांत्रिक साधना का चलन है। मैं साधकों से केवल यही कहना चाहता हूँ कि वे इन साधनों का प्रयोग करके अनुभव प्राप्त करें। इसमें 'विश्वासी फलदायक' की उक्ति फलदायक होगी।

व्यापार में उन्नति हेतु

वृहस्पतिवार के दिन दोपहर के समय एक कौए को पकड़ कर ले आयें और उसे पिंजड़े में वन्द करके दाना पानी देते रहें रविवार के दिन प्रातःकाल उसे दही में चीनी मिलाकर खाने को दें। फिर सोमवार प्रातः दुकान में अपना कार्य सिद्ध करने के लिए पहुंचे दुकान के भीतर प्रवेश करें उस समय पहले दायाँ पाँव ही रखें इस साधना को करने से व्यापार में उन्नति होती चली आयेगी। सायं काल कौए को उड़ा दें।

नौकरी हेतु

वृहस्पतिवार के दिन मध्याह्न एक कौए को पकड़कर ले आयें और उसे पिंजड़े में रख छोड़े तथा दाना पानी करते रहें। रविवार को प्रातः काल उसे दही में चीनी मिलाकर खिलावें।

सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व उसके उदर में से

रक्त की बूंद निकालकर, किसी बर्तन में रख लें। तत्पश्चात नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र लिखकर जिस स्थान पर हस्ताक्षर करें, वहाँ कौए के रक्त की बूंद को स्याही में मिलाकर कौए के पंख की कलम बनाकर, उस रक्त-मिश्रित स्याही में डुबा कर हस्ताक्षर कर दें। इस प्रकार नौकरी का बुलावा अवश्य आयेगा।

नौकरी में उन्नति हेतु

प्रातः मीठे चावल कौओं को खाने के लिए डालें। कौओं के छोटे-छोटे पंख भूमि पर गिरते रहेंगे। कौओं के पंख इकट्ठे हो जायेंगे। आठवें दिन उन सभी पंखों को पहले मधु में भिगोयें। फिर थोड़े से मोम को गरम करके पिघलायें और उन शहद में डूबे हुए पंखों द्वारा एक धागा बट लें।

अधिकारी से भेंट करते समय उस धागे को अपनी दांई कलाई पर बाँध लें। इस प्रकार अधिकारी प्रसन्न होकर तरक्की दे देगा।

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु

चौदहवीं को जब सूर्यास्त हो रहा हो उस समय एक कौए को पकड़कर उसकी गर्दन में सात गाँठों वाला एक लाल रंग का धागा बाँध दें। गाँठें हल्की लगी होनी चाहिए ताकि उन्हें पुनः खोला जा सके। तीन दिन बाद उसी समय कौए को छोड़ आवें, कौए को छोड़ते समय उसके गले में बंधे हुए धागे को खोल लें जब भी परीक्षा देने के लिए जाना हो तो उस दिन भगवान का स्मरण करते हुए उस धागे को अपनी दांई भुजा पर बाँध लें सफलता प्राप्त होगी।

मुकद्दमे में विजय प्राप्त करने हेतु

यदि कोई व्यक्ति मुकद्दमे में फंस गया हो तो उसे प्रत्येक मंगलवार को गेहूं की रोटी के चूरे में गाय का शुद्ध घी तथा चीनी मिलाकर कौवों को खिलाया करे। जिस दिन मुकद्दमे की तारीख हो, उस दिन किसी कौए की पीठ से एक पंख लेकर, उसे अपनी दाँई ओर की जेब में डालकर अदालत में उपस्थित हो तो मुकद्दमे में विजय होगी।

वृहस्पतिवार को कौए को पकड़ लायें, अगर कोई अण्डा हो तो उसे भी लायें। कौए को घर लाकर पिंजड़े में बन्द कर दें। अगर अण्डा हो तो उस अण्डे को तोड़कर खरल में डाल लें। फिर उसमें तीन रत्ती केशर और आधा माशा कपूर डालकर सबको खरल करें। उसकी एक गोली बनाकर रख लें। केशर और शहद युक्त दही का सेवन करके सट्टा करने के लिए जायें। अण्डे की गोली को अपनी दांई ओर की जेब में डालकर ले जायें। लाभ होने की उम्मीद है।

लाटरी में लाभ प्राप्त करने हेतु

कौए के स्वयं गिरे पंख की कलम बनाकर, उसके ऊपर केशर के छींटे दें, फिर उस कलम के द्वारा लाटरी का टिकट खरीदें लाटरी में लाभ प्राप्त होगा।

जेब खाली न रहे

पुष्य नक्षत्र में कौए के दाँये पाँव का नाखून लेकर, जेब में रखने से जेब खाली नहीं रहती है।

सम्मान प्राप्ति हेतु

कौए को पकड़कर लाल रंग के वस्त्र में लपेट लावें। घर लाकर उस कौए को लकड़ी के पिंजड़े में बन्द कर दें, उस कौए को शुद्ध गाय के घी में तली हुई पूड़ियाँ दही के साथ खिलावें, जिसमें गुलाव और केवड़े का अर्क पड़ा हुआ हो। रात्रि में पिंजड़े के सम्मुख अगर, कपूर, गुग्गुल तथा सफेद चन्दन के बुरादे की धूनी देनी चाहिए। पाँचवें दिन कौए का पंख निकाल कर उसे अपने मस्तक के चारों ओर दांई से बांई ओर को तीन चक्कर लगाकर छोड़ दे। इस प्रकार से सम्मान की प्राप्ति होगी।

सफलता हेतु

किसी कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय घर से निकलने से पूर्व ही अपने हाथ में रोटी ले लें। मार्ग में जहाँ भी कौए दिखलाई दें। वहाँ उस रोटी के टुकड़े करके डाल दें और आगे बढ़ जायें। इससे सफलता प्राप्त होती है।

बिना ताली के ताला खोलें

रविवार के दिन दोपहर के समय निःवस्त्र होकर कौए के घोंसले के पास जाकर, उसे लायें। फिर गुग्गल की धूनी देकर श्मशान में ले जायें और वहाँ चिता की अग्नि में घोंसले को जलाकर राख कर लें। उस राख को रख लें चुटकी भर राख को वन्द ताले के ऊपर डालने से वह बिना ताली लगाये खुल जाता है।

थकावट न आने का तन्त्र

वहस्पति (गुरु) की रात्रि किसी भी श्मशान में जाकर वहाँ से एक कौए को पकड़कर ले आयें। दूसरे दिन प्रातः पान के पत्तों का रस निकालकर कौए के पीने के पानी में मिला दें चौथे दिन कौए को पाँच तोले पान के पत्तों के रस में एक तोला पारा मिलाकर खरल करें। रस सूख जाने पर एक छटांक गेहूँ के आटे में थोड़ी सी खांड में उक्त पारे को मिलाकर उसमें गाय का शुद्ध घी और पानी डालकर आटे को गूंथ लें फिर गाय के शुद्ध घी में उस आटे की एक पूरी का चूरमा वनाकर कौए को खिला दें।

दसवें दिन रात्रि के समय उस कौए को साथ लेकर श्मशान जा पहुंचें। वहाँ वीचों-वीच पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाये। फिर कौए के पेट को चाकू से चीरकर उसके आमाशय के भीतर से एक चमकदार गोली प्राप्त करें। इस गोली को साफ करके अपने पास रख लें तथा कौए के मत शरीर को एक गड्ढा खोदकर गाढ़ दें।

घर आकर पारे की गोली को गोमूत्र में डुबाकर रख दें। चौथे दिन गोली को गोमूत्र से बाहर निकालकर अच्छी प्रकार से साफ करके सुरक्षित रख लें। यात्रा के समय इस गोली को लाल रंग के किसी वस्त्र में लपेटकर कमर से वाँध लें जब तक गोली कमर से बंधी रहेगी, तब तक थकान पास नहीं आयेगी।

प्यास न लगने का तन्त्र

कौए के हृदय को तावीज में मढ़कर पास रखने से मार्ग में प्यास नहीं लगती है।

नींद आने का तन्त्र

कौए को पकड़कर ले आयें और उसे एक माशे कपूर को गेहूं के आटे में गूंथकर उसकी रोटी बनाकर खिलाते रहें, जो बीट करे, उसे उठाकर छाया में सुखा लें। तीन दिन तक इसी प्रकार कौए की बीट इकट्ठा करें।

जब किसी मनुष्य को सुलाना हो तो उस मनुष्य के समीप कोयलों की अग्नि पर बीट को इस प्रकार जलावें कि उसका धुंआ उस मनुष्य को लगता रहे। उस धुंए के प्रभाव से मनुष्य सोता रहेगा।

कुयें बन्द करने का तन्त्र

मृत गधे के शरीर को जिस स्थान पर कौए खा रहे हों, वहाँ पहुँचकर किसी ऐसे कौए को पकड़े जो गधे के शरीर में चोंच मार रहा हो। फिर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि को फिर किसी बांझ स्त्री के बाँये पाँव के नीचे की एक चुटकी भर धूल उठा लावें। उस धूल में भेड़ के रक्त की कुछ बूंद मिलावें। फिर उस रक्त मिश्रित मिट्टी को थोड़े से दही में मिलाकर दही को ढांक कर रात भर के लिए किसी स्थान पर रख दें। दूसरे दिन सुबह थोड़ी-सी पीसी हुई हल्दी मिलाकर कौए को खिलायें। फिर कौए को मारकर उसकी आँतें निकाल लें। मृत शरीर का शेष भाग गाड़ दें। कौए की आँतों को सुखाकर रख लें।

जब किसी चलते हुए कुंए को बन्द करना हो, उस समय उसके बैलों के चलने वाली जगह पर आँत के एक छोटे से टुकड़े को चलने वाली जगह पर फेंक दे तो उसके प्रभाव से

चलते हुए वैल तुरन्त रुक जायेंगे। इस प्रकार कुंआ रुक जायेगा।

अदृश्य होने का तन्त्र

गुरुवार (वृहस्पतिवार) की अर्द्ध रात्रि के समय एक कौए को पकड़ लें। कौए को पकड़कर घर लौटने से पहले सात कदम उल्टे चलें। फिर सीधा मुंह करके चले आयें। घर आकर कौए की आँखों को लाल रंग के कपड़े से वाँध देना चाहिए। वह आँख पर वंधी पट्टी को हटाने का प्रयत्न करेगा पट्टी को पहले से ही इस प्रकार वांधना चाहिए कि कौआ उसे खोल ही न सके।

जव आप यह देखें कि कौए की आँखों पर रात भर पट्टी बंधी रही है तव आप यह समझ लीजिए कि अव आपकी साधना सफल हो जायेगी।

प्रातः कौए की आँखों पर पट्टी को स्वयं खोल लें। और उसकी आँखों में दो बूंद गुलाब जल डालें। उसी दिन शाम को जब सूर्य अस्त हो रहा हो, तव कौए के खाने के बर्तन में आधा तोला गाय के दूध की मलाई एवं आधा तोला नारियल का तेल मिलाकर उससे अलग हट जाए आधा घंटे के वाद जाकर देखें कि कौए ने तेल युक्त मलाई को खा लिया है या नहीं। जब वह मलाई को खा चुके तब उसकी आँखों पर दुबारा पूर्व रात्रि की भांति लाल रंग के वस्त्र की पट्टी को बाँध दें। इस प्रकार छः दिनों तक पट्टी बाँध दिया करें।

जब छः दिन ठीक प्रकार से व्यतीत हो जायें, तब अगले सात दिन तक एक रत्ती तम्बाकू के पत्तों को गेहूं के आटे में गूंथ कर उसकी रोटी बनाकर कौए को खिला दिया करें।

तेरह दिन इस प्रकार बीत जाने पर चौदहवें दिन कौए को मार, उसकी आँख निकालकर एक सीप में रख लें। तत्पश्चात जस्त का फूला आधा माशा, सुहागा आधी रत्ती, सफेद सुरमा एक तोला भीमसेनी कपूर आधा माशा तथा नीम के पत्तों का रस पाँच तोला इन सवको खरल कर उसके साथ ही पूर्वोक्त कौए की आँख भी मिला दें तथा घोंटना आरम्भ करें। जव सव चीजें घुट जायें, तव उन्हें निकालकर एक शीशी में वन्द कर कृष्ण पक्ष के सोमवार की रात्रि को ठीक दो वजे श्मशान भूमि में जाकर उक्त शीशी को किसी ऐसे स्थान में दो फुट गहरा गड्ढा खोदकर दवा दें, जिसके ऊपर दूसरे दिन प्रातः काल कोई मुर्दा जलने को हो। जव तक उस स्थान पर १५ मनुष्य शव न जल जायें, तव तक शीशी को वहीं गढ़ा रहने देना चाहिए।

जब उस स्थान पर मुर्दे जल चुकें, तव शीशी को खोदकर निकाल लायें।-

शीशी में भरे हुए चूर्ण को सुरमे की भाँति अपनी दोनों आँखों में लगाने वाला व्यक्ति सवकी दृष्टि से ओझल हो जाता है।

खोए बच्चे का पता लगाना

सन्ध्या के समय किसी कौए को पकड़कर ले आवें, घर लाकर उसे पिंजड़े में वन्द कर दे तथा उसके सामने कपूर और सफेद चन्दन के चूरे की धूनी इस प्रकार दें कि वह धुंआ कौए के शरीर को भी स्पर्श करे। फिर गाय के दूध में थोड़ा सा शहद और खांड मिलाकर उसे पीने के लिए किसी वर्तन में

भरकर पिंजड़े में रख दें। इसके बाद उड़ायें। जैसे ही वह कौआ अपने घोंसले में पहुंचेगा, वैसे ही खोये हुए बच्चे के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त हो जायेगी। सम्भव हो तो निम्न मन्त्र का जाप भी करें। मन्त्र इस प्रकार है—

'फैलके चन्द्रमुखे सती का पैर पड़े धन कड़े सलाम कर वीमजारी फैल के वीम ताड़े फल लाग तार सवा स्तूर बडिया लाग मेरी अडिया लाग सुन्दर कास्का बड़े फल के दिया जाम कड़े असत नाम आदेश की।'

भूत-प्रेत दूर करने का यन्त्र

एकादशी के दिन किसी श्मशान में जाकर मृत मनुष्य के मस्तक, बाँह, टांग और छाती की हड्डियों के चार टुकड़े ले आयें। फिर संध्या के समय कमरे में बैठकर हड्डियों के चारों टुकड़ों को कुशा के आसन पर, जिस पर लाल रंग का कपड़ा बिछा हो, रखकर उन्हें अगर, धूप और कपूर की धूनी दें फिर बाहर निकल आयें। कुछ समय बाद पुनः उस कमरे में जाकर हड्डियों को बाँध कर तीन गांठें लगायें और सुरक्षित जगह पर रख दें।

इसके पश्चात् जिस श्मशान से हड्डियाँ लाई गई थीं, उसके समीप जहां किसी वृक्ष पर कौए का घौंसला हो पहुँचें तथा ले आवें। कौए को लाल रंग के थैले में बन्द करके, लौट आयें। घर आकर कौए को पिंजड़े में बन्द कर दें। फिर पिंजड़े को लाल रंग के वस्त्र से ढक दें।

गुरुवार (वृहस्पतिवार) की रात्रि में एक सेर पानी, हड्डियों तथा कौए के हृदय को डालकर एक पाव केवड़े का

अर्क भर दें तथा सब वस्तुओं को खरल करना आरम्भ करें फिर उस मिश्रण के तीन भाग करके एक टिकिया सी बनाकर, छाया में सुखा लें। सूख जाने पर टिकिया के साथ एक माशे कपूर, एक माशे कश्मीरी केशर, एक माशे असली कस्तूरी तथा लोबान मिलाकर उसे एक लाल रंग के वस्त्र में लपेटकर, लाल रंग के धागे से सीं दें।

अब जिस व्यक्ति के ऊपर भूत प्रेत हो उसके गले में पहिना दें भूत-प्रेत का दोष दूर हो जायेगा।

जादू टोने को दूर करना

अमावस्या के दिन रात्रि तीन बजे किसी श्मशान में जाकर वहाँ से एक कौआ पकड़ लावें। घर आकर उसके मस्तक पर केशर का तिलक लगाये तथा गर्दन के चारों ओर केशर से घेरा खींचकर पिंजड़े में बन्द कर दें।

सूर्योदय होने पर उसे गाय के घी चीनी तथा माश के आटे से बना हुआ हलुआ, जिसमें थोड़ा सा लोबान भी पड़ा हो खिलावें।

जब शनिवार का दिन आये तब उसे गुड़ तिल के और माश के आटे का हलुआ खिलाना चाहिये। नौ दिन पूरे हो जायें तब उसे इनके बाद पिंजरे के तारों से एक मूर्ति तैयार कराएँ जिसकी आकृति मनुष्य के समान हो मूर्ति के एक ओर कौए का चित्र बना हो तथा दूसरी ओर तराजू का चित्र बनवाना चाहिये। उस मूर्ति को धूप देकर रख लें। जब किसी के ऊपर जादू-टोना का प्रभाव दिखलाई दे, उस समय उक्त मूर्ति को धागे से बाँधकर उस जादू-टोने से ग्रस्त व्यक्ति के गले में पहना दें तो जादू-टोने का प्रभाव दूर हो जाता है।

पूर्णिमा की रात्रि को एक कौए को पकड़ लें कौए को पकड़ कर वृक्ष से नीचे उतरने के बाद, कौए को हाथ में लिये हुए ही आँखें बन्द करके नंगे पांव दांई से वांई ओर को वृक्ष की सात परिक्रमा लगायें। फिर उसे पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े को लाल रंग के वस्त्र द्वारा ढक दें। दूसरे दिन गाय के शुद्ध घी का हलुआ बनाकर उसके ऊपर पानी में घुले हुए लाल रंग के कुछ छींटे डालें तत्पश्चात वह हलुआ किसी वर्तन में भरकर कौए के खाने के लिये पिंजड़े के भीतर रख दें। यही भोजन एक सप्ताह तक देते रहें तथा प्रत्येक रात्रि में पिंजड़े को लाल रंग के वस्त्र से ढक भी दिया करें।

आठवें दिन रात्रि में कौए को मार डालें और उसके शरीर से जो रक्त निकले उसे एक पात्र में सुरक्षित रख लें। फिर मृत कौए के पेट को चीरकर, उसका हृदय निकालकर रख लें। मृत शरीर को गाढ़ दें।

कौए के हृदय को सुखा लें। फिर उसे एक खरल में डाल कर घोंट दें। फिर जिस पात्र में कौए का रक्त सुरक्षित हो, उसमें एक तोला केवड़े का अर्क तथा उपर्युक्त चूर्ण डालकर सबको मिला दें इसे पास रखें।

गढ़े हुए धन की प्राप्ति

एक कौए को पकड़ लें। तीन दिन तक उसे शुद्ध शहद के साथ गेहूँ की रोटी दें।

चौथे दिन कौए को मारकर चोंच सहित उसके सिर को अलग कर रख लें तथा शेष भाग को गाढ़ दें। सिर को छाया में सुखा लें।

फिर शुक्रवार के दिन उस सूखे हुए सिर को धूप में रख दें। तदुपरान्त उसमें शराब डालकर डिबिया बंद कर दें। जब अमावस्या आये तब आधी रात के समय उक्त डिबिया को अपनी चारपाई के सिरहाने रखें सिर पूर्व की ओर होना चाहिये। इस प्रकार गढ़े धन का पता मिल जायेगा।

गढ़ा हुआ धन दिखलाई दे

कौए की जीभ को तिली के तेल में जलाकर उसे काजल की भाँति पीस लें। इस काजल को जो उल्टा पैदा हुआ हो उसकी आँखों में लगायें गढ़ा धन दिखाई देगा।

इस विषय में अधिक जानकारी के लिये आप 'पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें। लेखक—तांत्रिक बहल यह पुस्तक मंगाकर पढ़ें।

वाक्-सिद्धि हेतु

पूर्णिमा की रात्रि एक कौए को पकड़ लें और उससे अपने दांये हाथ में लेकर छाती से लगाये घर लौट आयें प्रातः उस पिंजड़े को अपने सामने रखकर बैठ जायें तथा एक घंटे तक टकटकी लगाकर कौए की गतिविधियों को देखते रहें।

जब पौ फटने को हो और कौआ पहली बार काँव करे उसी समय छुरी से उसकी जीभ को बाहर निकाल लें।

कौए की जीभ को छाया में सुखाने के बाद गोली बना लें। तावीज के भीतर गोली को भरकर तावीज का मुंह बन्द कर दें। इस तावीज को धारण करने के बाद तावीज के प्रभाव से आपके मुंह से जो भी शब्द निकलेंगे, वे सब सत्य सिद्ध होंगे। सम्भव हो तो निम्न मन्त्र का जाप करे।

'कौड़े शाह मस्त बड़ा, कौड़े शाह अस्त बड़ा'

हृदय परिवर्तित करने का तन्त्र

कौयें के दिल को निकालकर उस मार्ग में गाढ़ दें जहाँ से शत्रु का आना जाना बना रहता है।

रविवार के दिन काले घोड़े और बकरे के बाल एवं काले मुर्गे तथा कौये के पंख लेकर सबको जलाकर राख को खरल करके शीशी में रखें। इसका तिलक मस्तक पर लगाकर जाने से शत्रु मुकाबला करने की हिम्मत नहीं करेगा।

कौये की हड्डी की सात अंगुल की कील बनाकर उसे निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित करें।

'ओं जाँ जाँ जबीं जिये जूंठः ठः स्वाहा।'

अभिमंत्रित कील को शत्रु के घर में गाढ़ दें तो वह कष्ट पाता है।

कौये के दांई ओर के पंख तथा गीदड़ की पूंछ के बाल इन दोनों वस्तुओं को रविवार के दिन लाकर गूगल की धूप दें। फिर इन वस्तुओं को शत्रु के बिस्तर के नीचे दबाकर रख दें तो वह पागल हो जायेगा।

मंगलवार के दिन कौये का घौंसला उतार लायें। उसे जलाकर राख कर लें। उस राख को जिस शत्रु के मस्तक पर डाल दिया जायेगा, वह भयभीत होकर भाग जायेगा।

अगर मानसिक मुकाबला हो तो अपने मस्तक पर अंगूठे द्वारा कौये की चर्बी का छोटा तिलक लगा लें।

मंगलवार की रात्रि में उल्लू तथा कौये के पंखों को एक साथ जलाकर राख कर लें। यह राख जिसके मस्तक पर डाल दी जायेगी, उनमें शत्रुता हो जायेगी।

रविवार के दिन उल्लू और कौआ इन दोनों का रक्त निकालकर प्रेमियों के वस्त्र का एक-एक टुकड़ा एक कौवी को पकड़कर उसकी पूंछ के पंख नोंच लें। फिर उन्हें सफेद चन्दन का चूरा तथा गूगल की धूनी देकर राख बना लें। तदुपरांत उस राख को खरल में डालकर मोतियाँ के फूलों के पानी के साथ घुटाई करके चूर्ण बनाकर शीशी में भर लें। जो स्त्री प्रत्येक वृहस्पतिवार के दिन उस शीशी में से थोड़ा सा चूर्ण निकालकर अपने मस्तक पर विन्दी लगायेगी उसका पति उससे अत्यधिक प्रेम करने लगेगा।

मंगलवार के दिन कौये की जीभ, रविवार को श्मशान की राख लाकर नाखूनों की राख स्त्री के वांये पांव की मिट्टी इन सबको मिलाकर पीसकर चूर्ण कर लें। उस चूर्ण को आवश्यकता के समय अपनी प्रेंमिका के मस्तक पर डाल दें तो वह वशीभूत हो जायेगी।

वशीकरण

पहली तारीख को कौये को पकड़ लायें। कौये को पकड़ने के वाद से जब शनिवार आये तब रात्रि के समय मिट्टी के दीपक में तिल का तेल भरे। फिर एक कागज के ऊपर निम्नलिखित मंत्र को काली स्याही से लिखकर उस कागज की बत्ती बना लें और उस बत्ती को साफ रूई में लपेटकर दीपक में डाल दें।

मन्त्र इस प्रकार है—

'काला कलवा काली रात, काला भेजूं आधी रात,
जब वह आवे आधी रात, तन मन मुझ लागे सारी रात,

कलवा वीर अमुक को बैठी का उठा लाओ।
सोती को जगा लाओ, खड़ी को दौड़ा लाओ।
हाल लाओ, फिलहाल लाओ, जो न लावो।
तो सगी वहिन भांजी के सिर पग धरो।

इस मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

जब दीपक तैयार हो जाये, तब कौये के पिंजड़े को बीच में रखकर उसके ऊपर दीपक को रखकर जलायें तथा स्वयं पिंजड़े के सामने बैठकर पूर्वोक्त मन्त्र को १०८ बार इतने ऊँचे स्वर से पढ़ें कि उसकी ध्वनि कौये को सुनाई देवे। जब मन्त्र संख्या पूरी हो जाये, तो दीपक की वत्ती को धीरे-धीरे बढ़ाकर सारे तेल को समाप्त कर डालें। खाली दीपक को रहने दें।

दूसरे दिन जंगल में जाकर दीपक को जमीन में दबा दें।

पुनः दूसरे दिन फिर नया दीपक तैयार करके सभी क्रियाओं को पुनः दुहरायें। इसी प्रकार इक्कीस दिन तक करें। जब इक्कीसवां साधन पूरा हो जाये तब एक कागज के ऊपर मन्त्र को लिखकर उस कौये के पंख में बाँध दें तथा उसी दिन रात्रि को छोड़ आयें।

इस साधना के पूरा होने के एक सप्ताह के भीतर ही स्त्री वशीभूत होती है।

रविवार के दिन अपनी उंगलियों के वीसों नाखून और कौये की जीभ को श्मशान के अंगारों में जला लें। फिर उसमें अपना थूक वीर्य और बांये हाथ की अनामिका उंगली का रक्त मिलाकर गोलियाँ बना लें। उनमें से एक गोली को पान में रखकर खिला दें तो वह वशीभूत हो जायेगी।

सम्भव हो तो रात्रि के १२ बजे के समय निम्न मन्त्र का जप भी करें।

फाल पखाल सुस्सका क्लोन कजरा मंजरा खाऊं।

आठ पहर में घड़ी जगमोहन मेरा नाऊं।

कौये के पंख, मोर के पंख तथा हुदहुद पक्षी के सिर को जलाकर राख कर लें। फिर रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व चौराहे की मिट्टी लाकर, राख में मिलाकर रख लें आवश्यकता के समय उक्त मिश्रण को अपने थूक से तर करके, जिस शरीर से लगा दिया जायेगा, वही वशीभूत होकर प्रेम करने लगेगा।

किसी भी महीने के पहले रविवार को सूर्योदय से पूर्व किसी कौये के थोड़े से पंख ले आवें। फिर उन्हें अंजीर की लकड़ी में बाँधकर, लकड़ी को किसी काली कुतिया के शरीर पर सात वार मारकर घर ले आयें। घर लाकर उस लकड़ी को पंखों सहित जलाकर भस्म कर लें। जिस किसी के भी शरीर पर मारा जायेगा वह वश में हो जायेगी।

पीलिया पर

कौए के अण्डे को लेकर उसे तोड़ डालें भीतर की वस्तुयें निकालकर उसके खोल को नमक मिले हुए गर्म पानी में डाल दें। पानी के सहयोग से खोल के भीतर की झिल्ली को अलग कर दें। इसके बाद खोल को खरल कर पीस लें। फिर उसमें थोड़ी सी फिटकरी मिलाकर पुनः खरल करें। जब महीन हो जाये तब उसे मिट्टी के कोरे सकोरे में भरकर अंगारों पर रख दें। जब वह श्वेत रंग का हो जाये, तब उसे ठण्डा करें। भरकर रख लें।

फिर दो माशा गिलोय, दो माशा कस्तूरी तथा तीन माशा मकोई के पत्तों को पानी में भिगोये फिर अर्क निकाल लें उस अर्क में चार रत्ती कलमी शोरा डालकर घोट लें। फिर इस अर्क में एक रत्ती शीशी की औषधि मिलाकर प्रातः सायं भोजन से एक घंटा पूर्व रोगी को खाने के लिए दें।

खांसी पर

कौये के गुदा वाले भाग को लाल रंग के कपड़े में बाँधकर, खांसी के रोगी के गले में बाँध देने से खाँसी का रोग दूर हो जाता है।

काली खांसी

किसी वर्तन में गंगाजल भर कर लावें। चौवीस घंटे के लिए उसे किसी स्थान पर विना हिलाये रक्खा रहने दें। ताकि मिट्टी नीचे बैठ जाये। दूसरे दिन उस सब को निथार कर, घड़े में भर लें। पांचवें दिन कौये को पकड़कर ले आये। फिर एक अन्य बर्तन में घड़े का थोड़ा सा जल भरकर उसमें कौये के पंजों को आधा घण्टे तक डाले रक्खें। कौये के पंजे भीगते रहें। इसके बाद कौये को रोगी के ऊपर से उतार कर छोड़ दें। उक्त जल में से एक चम्मच प्रतिदिन प्रातः के समय रोगी को पिलाते रहने से काली खाँसी शीघ्र दूर हो जाती है।

बच्चों की खांसी

कौये की बीट को कपड़े की पोटली में बाँधकर रोगी बच्चे के गले में लटका देने से उसका खांसी का रोग दूर हो जाता है।

संग्रहणी

शनिवार की रात्रि में कौये को पकड़कर ले आयें और उसे पिंजड़े में वन्द कर दें। पन्द्रह दिन तक केवल दही में मिले हुए चावल खाने के लिए दें। कौये की बीट को रखना आरम्भ कर दें। पन्द्रह दिन बाद उस कौये को मार कर, उसके शरीर में से आमाशय को निकाल लें।

नमक मिले गरम पानी से साफ करके, उसके भीतर की झिल्ली को अलग कर लें।

झिल्ली में आधा माशा वंश लोचन छः छोटी इलायची, एक तोला असगंध तथा दो रत्ती अफीम मिलाकर, सव वस्तुओं को पीस लें। उसमें एक तोला कीकर का गोंद और एक पाव बेदमुश्क का गोंद और एक पाव बेदमुश्क का अर्क डालकर पुनः घोटें फिर दों-दो रत्ती की गोलियाँ वनाकर रख लें। प्रातः सायं और मध्याह्न दिन में तीन वार एक-एक गोली को पाँच तोले बेदमुश्क का अर्क तथा दो तोंले चन्दन के शर्वत के साथ रोगी को सेवन करायें। इस औषधि का सेवन करने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

कौये को पकड़ लें, फिर पंखों को नोंच लें। फिर उसे मार कर उसके सीने में से पसली निकाल लें।

घर आकर बारहसिंघे हिरन की सींग की हड्डी का टुकड़ा लें। फिर कीकर से कोयलों की आग जलायें। जव अंगारे खूब दहक जायें तब कौये की पसली की हड्डी पंख तथा बारहसिंघे के सींग के टुकड़े को अंगारों पर रखकर जलायें। जब ये तीनों वस्तुएँ जलकर फूल जायें तब उन्हें कोयलों से उठाकर पीस कर सूक्ष्म कर लें।

निमोनिया के रोगी को एक रत्ती औषधि शहद में मिलाकर सुबह और शाम चटायें और छाती पर अलसी की पुल्टिस बाँधें लाभ होगा।

हिचकी

एक कौये को मार डालें। फिर उसके आमाशय को निकाल कर साफ कर लें और उसे दो टुकड़ों में काटें। उस समय आमाशय के भीतर एक हल्के सफेद रंग की झिल्ली दिखलायी देगी। फिर नमक मिले हुए गरम पानी से आमाशय को साफ करके, उस झिल्ली को आमाशय से अलग करके साफ कर लें तथा छाया में रखकर सुखा लें। जब वह सूख जाय तब उसका चूर्ण बना लें। २ रत्ती तवासीर का चूर्ण, २ रत्ती छोटी इलायची का चूर्ण तथा ५ रत्ती मीठा सोडा इन सबमें एक तिनके भर पूर्वोक्त झिल्ली का चूर्ण मिलाकर हिचकी के रोगी को शर्बते दीनार के साथ खिलायें। हिचकी बन्द हो जाती है।

नकसीर

बादाम की मिंगी को सेब के मुरब्बे के शीरे में घोंट कर उसमें आवश्यकता अनुसार माश का आटा मिलाकर गूंथ लें तथा बेर के बराबर की गोलियाँ कौये को खिला दें।

इसको १० दिन तक करें ११वें दिन कौये को मार कर उसका मस्तिष्क निकाल लें तथा जीभ को काटकर रख लें। कौये के मस्तिष्क तथा जीभ एक तोला बालछड़ एक तोला सूखा धनियां, एक तोला गुलबर्ग, एक तोला चमेली का तेल, इन सबको मिलाकर घोंटना आरम्भ करें। जब सब वस्तुएँ एकत्रित

हो जाएँ तब उन्हें किसी कांसे के पात्र में रख लें और उन्हें अग्नि पर चढ़ाकर पकावें। इसमें से तेल छान लें। इस तेल को एक तोले की मात्रा में प्रतिदिन रोगी के सिर पर मले तथा उसे खाने के लिए पौष्टिक पदार्थ दें। यह प्रयोग करने से तुतलाहट दूर हो जाएगी।

आधा सीसी

कौए का पंख लें, तीन माशे भर उसके बाल काट कर, उसे एक मिट्टी के शकोरे में रखकर ऊपर से एक दूसरा शकोरा औंधा करके अंगारों की आँच पर रखें। जब शकोरे में रक्खे हुए पंख के वाल जलकर राख हो जाएँ तब शकोरे को नीचे उतार कर ठण्डा कर लें। आवश्यकता के समय इस भस्म को एक रत्ती की मात्रा में उसमें ५ रत्ती नौसादर पीसकर मिला दें तथा गुनगुने पानी के साथ आधा सीसी के रोगी को पिला दें।

फूल बहरी

पहाड़ी कौए का एक पंख लें और उसी प्रकार के कौए के रक्त के साथ इक्कीस दिन तक उसे छानते पीसते रहें। जब वह सूख कर चूर्ण सा हो जाये, तब एक रत्ती की पुड़िया बनाकर रख दें।

फूलबहरी के रोगी को प्रतिदिन सोते समय एक पुड़िया, एक तोले वैंगन के अर्क के साथ खाने के लिये दें।

बिवाई

शलजम के अर्क में कौए की बीट मिलाकर लेई वना लें। तीन दिन तक बिवाई पर इसका लेप करने से रोग दूर हो जाता है।

मसान

चूल्हे की आग पर तवा रखकर उस पर थोड़ा सा सोया डाल दें। सोये कों कौए के पंख की डण्डी से हिलाते रहें। जब वह हल्के लाल रंग का हो जाय, तब उतार कर पीस लें। प्रतिदिन तीन माशा भर सोये का चूर्ण, एक तोला वेदमुश्क के अर्क के साथ प्रातः पिलाने से सूखा-मसान रोग ठीक हो जाता है।

पागलपन

विच्छू के डंक, कौए का नाखून और कुत्ते का नाखून इन तीनों कों ऊँट के चमड़े में मढ़वाकर तावीज बनाकर गले में बाँध देने से यह रोग दूर हो जाता है।

मासिक धर्म

गुरु पुष्य नक्षत्र में कौए की चोंच लाकर उसे गुग्गुल की धूनी दें। फिर जिस स्त्री का मासिक धर्म जारी करना हों, उसके मार्ग में उस चोंच से एक लकीर खींच दें। जैसे ही वह स्त्री उस लकीर कों पार करके आगे बढ़ेगी, वैसे ही उसको मासिक धर्म जारी हों जाएगा।

पुत्र प्राप्ति

कौए के अण्डे की जर्दी को अपनी नाभि पर लेप करके तीन घंटे बाद पति के साथ सम्भोग करने वाली स्त्री केवल पुत्र कों जन्म देती है।

—:०:—

चमत्कारी मन्त्र साधना में उलूक तन्त्र-मन्त्र

अदृश्य होने के लिए

रविवार के दिन उल्लू के कुछ पंख जलाकर भस्म वना लें। फिर उसमें कुंकुम और कस्तूरी मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से ५१ बार अभिमन्त्रित कर गुटिका बना लें। उस गुटिका को आँखों में आंजने से अदृश्यीकरण होता है। इस प्रयोग में अति साव-धानी बरतें, विना गुरु के करना वर्जित है।

वशीकरण अंजन

उल्लू का हृदय तथा गोरोचन—इन्हें पीसकर गुटिका वनायें। फिर उस गुटिका को पूर्वोक्त मंत्र से २१०८ बार अभिमन्त्रित करके आँखों में आंजकर, जिस व्यक्ति को देखें, वह वशीभूत हो जाएगा।

सर्व वशीकरण

उल्लू का मांस, तगर, चन्दन, कुंकुम और गोरोचन—इन सबको पीसकर चूर्ण जिस व्यक्ति को खिलाया जायेगा, वह वशीभूत हो जाता है।

मोहन एवं वशीकरण

उल्लू का अंग, कबूतर की वीट, कुंकुम और गोरोचन इन सबको मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से ५१ वार अभिमन्त्रित कर,

अपनें मस्तक पर तिलक करके जिसके सामनें जाएं, वह देखते ही वशीभूत हो जाएगा।

भूमिगत कौतुक

उल्लू के कलेजे को सुखा कर चूर्ण कर लें, फिर उसे ११०८ वार अभिमन्त्रित कर, अपने पैर पर उक्त मंत्र को लिखें। तत्पश्चात पृथ्वी में थोड़ा सा गड्ढा खोदकर, उसमें अपने पाँव को रक्खें तथा तीन हाथ की दूरी तक चलें तो भूमिगत वस्तुएँ दिखलाई देती हैं।

रात्रि-पठन

उल्लू का सिर, हरताल और मैनसिल—इन्हें पीस कर गुटिका तैयार करें। फिर उस गुटिका को मंत्र से ११०८ बार अभिमन्त्रित कर, अपनी आँखों में आंजें तो रात में भी देखने की सामर्थ्य प्राप्त होगी।

समुद्र-गमन

उल्लू की चर्बी, तिल तथा सरसों का तेल—इन सबको अग्नि में पकाकर गाढ़ा करें। फिर उस मिश्रण को ताबीज में भर लें तथा तावीज को अपनी कमर से बाँधकर समुद्र में भी चल सकते हैं। चलने से पहले परीक्षण कर लें। इस प्रयोग में सफलता प्रायः संदिग्ध रहती है।

मृत्यु-वशीकरण

उल्लू के हृदय को गोरोचन के साथ पीसकर अभिमन्त्रित कर, आँखों में आंजने से अगर मृत्यु भी देखे तो वह भी वशीभूत हो जाती है। अर्थात आयु बढ़ जाती है।

वायु वेग गति

उल्लू तथा गिरगिट की हड्डी और शिखा तथा बीर-वधूटी—इन सबको मिलाकर तथा पीस कर गुटिका बना, पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। इस गुटिका को मुंह में रखकर यात्रा करने से गति तेज हो जाती है।

उल्लू के कोख की हड्डी मैनसिल ओर हरताल इन तीनों को ले जल में घिसकर शरीर पर लेप करने से स्तम्भन होता है। रमण सफल होता है।

पक्षी-वशीकरण

उल्लू की हड्डी और गाय का दूध—दोनों को लेकर तथा गाय के घी में मिलाकर, मस्तक पर तिलक करने से सभी वशीभूत हो जाते हैं।

उल्लू की हड्डी और रक्त, नीम की पत्ती तथा कड़वा तेल इन सबसे हवन करने तथा पूर्वोक्त मत्र का ११०८ बार जप करने से शत्रु परास्त होता है।

दो सौ कोस

उल्लू के दो पंखों को हवन की आग में जलाकर और उसमें शिव-निर्माल्य मिलाकर उसे पूर्वोक्त मंत्र द्वारा ७१०८ बार अभिमन्त्रित कर, पाँवों पर लेप करके चलने से चलने की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

उच्चाटन

उल्लू की हड्डी की कील को निम्नलिखित मंत्र द्वारा ५१ वार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाढ़ दिया जाय, उसका

उच्चाटन होता है। अभिमन्त्रित करने से पूर्व मन्त्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है। मन्त्र—

"ओं दह दह हन हन स्वाहा।"

शत्रु-विनाशक

उल्लू के पाँव की नलिका को शत्रु के घर में गाढ़ देने से उसके पुत्र-पुत्री नष्ट हो जाते हैं।

अदृश्यीकरण तथा भूमिगत

उल्लू का सिर, सौवीरांजन, अन्तर्धूम तथा उल्लू की नलिका इन सबका चूर्ण बनाकर उसमें गोरोचन मिला दें। फिर पुष्य नक्षत्र की चतुर्थी को निम्नलिखित मन्त्र द्वारा उस अंजन को अभिमन्त्रित करें। अभिमन्त्रित करने से पूर्व इस मन्त्र को ११११०८ बार जप कर सिद्ध कर लेना भी आवश्यक है। मंत्र इस प्रकार है—

"ओं नमो महा यक्षिण अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।"

उक्त अभिमन्त्रित अंजन को आँखों में आंजने से पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन भी दिखलाई देता है। इस साधना में गुरु का मार्ग दर्शन अवश्य प्राप्त कर लें।

ज्वर नाशक

'उलूक-कल्प' में निम्नलिखित तीन प्रयोग ज्वर-नाशक बतलाये गए हैं—

उल्लू की चोंच, जेठी मधु, हरताल और एक वर्ष भर काचमाची इन सबका चूर्ण बना आँख में आंजने से ज्वर दूर हो जाता है।

उल्लू की पूंछ को ताबीज में भर कर रोगी की भुजा में बाँधने से ज्वर उतर जाता है।

उल्लू के पाँव को काले डोरे में लपेटकर रोगी के बायें कान में बाँध देने से ज्वर उतर जाता है।

उल्लू के नेत्रों को किसी के रक्त में घिसकर तथा उसे भोजपत्र पर रखकर जिस रोगी के हाथ में बाँधा जाय, तो उसका ज्वर दूर हो जाता है।

यह ध्यान रखें—'उलूक कल्प' में वर्णित किसी भी प्रयोग को करने से पूर्व उसके मंत्र का जाप करना आवश्यक है। मंत्र सवा लाख बार जप करने से ही सिद्ध हो जाता है। फिर प्रयोग के समय जिस संख्या में मंत्र-जप का निर्देश किया गया है। उतनी संख्या में और जप करना चाहिए।

गति स्तम्भन

किसी भी सवारी की चाल को रोकनें के लिए निम्नलिखित प्रयोग प्रभावकारी बतलाया गया है। प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित सामग्री एकत्र करके रख लेनी चाहिए—

१. कुश थोड़े से
२. मृगछाला अथवा बाघम्बर
३. मिट्टी की हांडी
४. हांडी के ऊपर ढकने का ढक्कन
५. मृत की खोपड़ी तथा रोढ़ की हड्डी
६. रीढ़ की हड्डी
७. गाय का शुद्ध घी (काली गाय का)
८. धूप गुग्गुल और लोबान
९. गधे का मूत्र
१०. देशी कपूर
११. आम, बबूल, ढाक, गूलर तथा बेल की सूखी समिधा
१२. दियासलाई

१३. दीपक
१४. उल्लू के अण्डों के छिलके
१५. उल्लू की बीट
१६. बैठने के लिए ऊनी कम्बल
१७. हवन कुण्ड, जलपात्र और सगुवा।

इन सब वस्तुओं को लाकर इकट्ठा कर लें। फिर पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि से अमावस्या के बीच की अवधि में एक उल्लू ले आयें। जीवित उल्लू को न मारें।

जब उल्लू सहित सब वस्तुएँ एकत्रित हो जायें, तब अमावस्या की आधी रात के समय सब वस्तुओं को लेकर श्मशान में जा पहुँचे और वहाँ किसी जलती हुई चिता के सामने बैठ जायें। बैठने से पूर्व ऊनी कम्बल के आसन को बिछा लेना चाहिए तथा मृगछाला को सामने बिछाकर, उसके ऊपर उल्लू के शरीर को रख देना चाहिये।

इसके बाद आसन तथा मृगछाला के मध्य खाली जगह में हवन कुण्ड रखकर, उसमें समिधा को रखना चाहिए। अगर चिता धधक रही हो तो उसमें से थोड़ी सी अग्नि निकालकर अपने हवन कुण्ड के बीच में रख देनी चाहिये।

अब अग्नि प्रज्जवलित हो जाये, तब उसमें निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक-एक स्रुवा घी की आहुति डालना आरम्भ करना चाहिये।

मन्त्र—ओं नमः काली कंकाली श्मशान वासिनी महाकाली ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।

उक्त मन्त्र द्वारा २१०८ आहुतियाँ देने के बाद हांडी को उस हवन कुण्ड में प्रज्जवलित अग्नि के ऊपर रख दें। जब यह देखें कि हांडी में भरी हुई वस्तुएँ गल गई होंगी, तब उसमें रीढ़ की हड्डी भी डाल दें। तथा उसके भीतर उल्ल की बीट, अण्डे

के छिलके, गधे का मूत्र, तथा उल्लू के शरीर को भरकर, ऊपर से ढक्कन रख दें। यह ध्यान रहे हवन कुण्ड की अग्नि मन्द न पड़े इसलिये उसमें धूप देशी गूगल तथा घी की आहुतियाँ देते रहें तथा प्रत्येक आहुति के साथ पूर्वोक्त मन्त्र का उच्चारण करते रहें। दीपक भी जलाकर रख दें। दीपक बुझने न दें।

मनुष्य की खोपड़ी में शराब भरकर, उसमें से थोड़ी-थोड़ी शराब हवन कुण्ड में डालना शुरू करें। मन्त्र का उच्चारण करना आवश्यक है। सम्पूर्ण शराब की २१०८ आहुतियाँ दें। शराब समाप्त हो जाये, तब मनुष्य की खोपड़ी को भी अन्तिम आहुति के रूप में उसी हवन कुण्ड में डाल दें। इसके बाद मिट्टी की हांडी से ढक्कन हटाकर यह देखें कि उसमें भरी हुई सभी वस्तुएँ जलकर राख हो गई हैं अथवा नहीं ?

भस्म हो गई हों तो हांडी को हवन कुण्ड से बाहर निकाल कर रख लें और अगर अभी राख न हुई हों तो हवन कुण्ड में और अधिक समिधा रखकर तथा घी डालकर उन्हें भस्म करें।

जब भस्म तैयार हो जाये उस दिन हांडी में से राख निकालकर, किसी पात्र में भरकर रख लें तथा घर लौट आयें और ३१ दिन तक नित्य प्रातः २१०८ बार पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा भस्म पात्र को अभिमंत्रित करते रहें।

इसके बाद उस पात्र में से थोड़ी सी भस्म जिस वाहन के ऊपर डाल दी जायेगी, उसकी गति स्तम्भित हो जायेगी। उक्त विधि से स्तम्भित हो गई सवारी की गति को जब प्रारम्भ करना हो तो उस सवारी से उल्लू की बाईं टांग की हड्डी का स्पर्श करा देना चाहियें। ऐसा करने पर वह पुनः चलना प्रारंभ कर देगी।

शत्रु पर विजय

'ओं नमो पक्षिराजाय लक्ष्मी वाहनाय मे शत्रुं वशं कुरु-कुरु स्वाहा।'

उल्लू की पीठ के १५ परों को उपरोक्त मन्त्र से २१०८ बार अभिमन्त्रित कर तावीज में भरकर भुजा में धारण करने से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। मन्त्र उपरोक्त है।

उल्लू और कौआ

उल्लू और कौआ—ये दोनों एक दूसरे के परम शत्रु हैं। उल्लू का एक नाम 'काकारि' भी है। कहते हैं कि उल्लू कौए को देखते ही मार डालता है तथा जिस जगह वह रहता है, वहाँ कौआ नहीं जाता।

तंत्र ग्रन्थों में उल्लू और कौए के मिश्रित तांत्रिक प्रयोग भी पाये जाते हैं। उनमें से कुछ प्रयोगों को यहाँ दिया जा रहा है।

उल्लू की बीट तथा कौए की बीट दोनों को लेकर तथा एक साथ मिलाकर, गुलाव जल में घोंटे तथा उस लेप का चंदन की भाँति मस्तक पर तिलक लगाकर जिस स्त्री के सामने जा खड़े हों, वह देखते ही वशीभूत हो जाती है।

सम्मोहन

उल्लू का पंख तथा कौए का पंख—दोनों एक साथ चन्दन की समिधा की अग्नि में जलाकर भस्म वना लें। इस भस्म को जिसके मस्तक पर छिड़क दिया जायेगा वह वशीभूत हो जायेगा।

उद्विग्नता कारक

उल्लू की चोंच तथा कौए की चोंच दोनों को बबूल की समिधा की अग्नि में जलाकर भस्म कर लें। इस भस्म को जिस स्त्री पर छिड़का जायेगा वह पागल हो उठेगी।

शत्रु उच्चाटन

उल्लू की बांई टांग तथा कौए की दांई टांग दोनों को लाल रंग के कपड़े में एक साथ लपेटकर उसके ऊपर काला धागा बाँध दें। फिर उस पोटली को शत्रु के घर में फेंक दें तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

शत्रु परास्त

उल्लू के पिंजर की हड्डी तथा कौए के पिंजर की हड्डी दोनों को लाल कपड़े में बांधकर, ऊपर से काला धागा बाँध दें। फिर उसे किसी प्रकार सोते समय शत्रु के तकिये के नीचे रख दें तो शत्रु स्वयं हार मान जाता है।

विद्वेषण

उल्लू की जीभ तथा कौए की जीभ—इन दोनों को मिलाकर चन्दन की समिधा की अग्नि में जलाकर भस्म कर लें। इस भस्म को जिन दो में परस्पर विद्वेषण कराना हो उनके शरीर पर छिड़क दें। तो उन दोनों के मध्य विद्वेषण हो जाता है।

सम्मान प्राप्ति

उल्लू की छाती के तथा कौए की छाती के पर दोनों को एक साथ मिलाकर किसी ताबीज में भर लें। फिर उस ताबीज

को अपनी भुजा में धारण कर जहाँ भी जायेंगे वहाँ बेहतर सम्मान होगा। उल्लू के पिंजड़े को नदी किनारे रखकर, स्वयं भी स्नान करे। इसके बाद उल्लू के डैने से दो पंख नोंच लें तथा उल्लू को उड़ा दें। यह क्रिया भीगे हुए वस्त्र पहने ही करनी चाहिये। डैने से खींचे हुए पंखों को सामने रखकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके सुखासन लगाकर वैठ जायें तथा निम्नलिखित मंत्र का सवा लाख जप करें। प्रत्येक मंत्रोच्चारण के वाद उल्लू के पंखों को नदी की धारा में डुवाकर उसके द्वारा अपने सिर पर पानी छिड़क लिया करें। मन्त्र निम्न है—

'ओं नमो उलूक वाहिनी विष्णुप्रिया भगवती लक्ष्मी देव्यै 'मम' दुर्भाग्य नाशं एवं सौभाग्य वृद्धि कुरु कुरु कुरु श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं फट् स्वाहा।'

जब जप पूरा हो जाये तव वहाँ से पंख को दांये हाथ में लेकर लौट जायें। घर आकर धूप, दीप, गंध, चावल, पुष्प आदि से पंख का पूजन करें इसके व्राद उसे किसी तावीज में उसमें पीले रंग का डोरा पिरोकर तावीज को अपनी भुजा में धारण कर लें।

प्रतिदिन तावीज को धूप आदि से पूजन कर, पूर्वोक्त मन्त्र का नित्य ११०८ की संख्या में जप किया करें। तीन मास तक इस क्रिया को करते रहने पर दुर्भाग्य नष्ट हो जाता है तथा धन की वृद्धि होती है। यह प्रयोग योग्य गुरु के मार्ग दर्शन में ही करें।

विपत्ति नाशक

जिस अमावस्या तिथि को शनिवार हो, उसकी आधी रात के समय उल्लू को पकड़कर उसकी गर्दन के पाँच पंख नोंच कर

अपने पास रख लें तथा उल्लू को उड़ा दें। फिर अगली सोमवती अमावस्या आए तब उल्लू के पंखों को लेकर श्मशान में जायें और वहाँ किसी धधकती हुई चिता में से अंगारे निकाल कर, उन अंगारों पर पंखों को रखकर जला लें। जो भस्म बने, उसे उठाकर किसी शीशी में भरकर रख लें और लौट आयें।

इसके बाद जब भी चन्द्र ग्रहण पड़े तब उस भस्म पात्र को लेकर नदी के तट पर पहुँचे और वहाँ स्नान करने के उपरान्त उसी के तट पर सिद्धासन लगाकर, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायें तथा भस्म को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का सवा लाख जप करें। प्रत्येक बार मंत्र का जप करने के बाद भस्म पात्र पर एक-एक फूंक मारते जाना चाहिये, ताकि वह अभिमन्त्रित हो जाये। मंत्र निम्न है—

'ओं नमः पक्षिराज लक्ष्मीवाहन उलूक राजाय विघ्न विनाशनाय 'मम' सर्व विपत्ति विनाशय विनाशय दपां कुरु-कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित भस्म को लेकर घर लौट आयें तथा पात्र को किसी सुरक्षित स्थान में रख दें। फिर अगले सूर्य ग्रहण के मध्यकाल में उक्त भस्म को किसी ताबीज में भरकर अपनी भुजा में धारण कर लें। इस ताबीज के प्रभाव से कुछ महीनों के भीतर ही सब प्रकार की विपत्तियों से छुटकारा मिल जाता है। प्रयोग शुरू करने से पूर्व संकल्प अवश्य कर लें।

मैत्री नाशक

अगर किन्हीं दो व्यक्तियों में मैत्री हो और उनकी मैत्री के कारण आपको हानि पहुँचने की संभावना हो तो निम्नलिखित

प्रयोग को साधना मनोभिलाषा पूरक बतलाया गया है। माघ मास की अमावस्या को आधी रात के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आयें तथा उसे पानी से स्नान कराने तथा पूजन करने के उपरान्त उसकी पूंछ के सात पंख नोंचकर, उड़ा दें।

फिर दूसरे दिन आधी रात के समय उन पंखों को लेकर किसी नहर के किनारे पहुँचकर, पंखों को हाथ में लिए हुए ही स्नान करें। तत्पश्चात किसी श्मशान में जाकर वहां धधकती हुई चिता में से अंगारे निकाल कर, उन पर उल्लू के पंखों को रखकर भस्म कर लें। उस भस्म को शीशी में भरकर लौट आएँ।

फिर, अगले शनिवार को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान में जल छिड़क कर मृगछाला का आसन बिछाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएँ तथा भस्म को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का एक लाख जप करें। प्रत्येक वार मंत्र जप के पश्चात भस्म के ऊपर एक-एक फूंक मारते चले जाएँ। इस विधि से वह भस्म अभिमन्त्रित हो जाएगी।

"ओं नमः उलूक राजाय, लक्ष्मी वाहनाय, "अमुकेन सह अमुकस्य" विद्वेषणं कुरु फ्रां फ्रीं फ्रू फ्रें फ्रौं फ्रं स्वाहा।"

उक्त मंत्र में जहाँ 'अमुकेन सह अमुकस्य' शब्द आया है वहाँ जिन मित्रों में शत्रुता करानी हो उन दोनों के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र जप पूरा हो जाने पर उक्त अभिमन्त्रित राख के दो भाग करके, एक भाग एक मित्र के दरवाजे पर तथा दूसरा भाग दूसरे मित्र के दरवाजे पर फेंक आएँ। इस प्रयोग के फलस्वरूप दो माह के भीतर ही उन दोनों

में झगड़ा हो जायेगा और वे एक दूसरे के परम शत्रु बन जाएँगे।

उच्चाटन

अगर अपने किसी प्रतिद्वन्द्वी का उच्चाटन करना हो तो उसके लिए निम्नलिखित प्रयोग फलदायक वतलाया गया है। जिस शनिवार को भरणी नक्षत्र हो, उस दिन रात के समय कहीं से उल्लू पकड़ लाएँ।

फिर आधी रात के समय उसे धूप, दीप, पुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर, उसके डैने के कुछ पंख नोंच कर अपने पास रख लें तथा उसको उड़ा दें। दूसरे दिन प्रातः उन पंखों को लेकर किसी नदी पर पहुँचे और वहाँ स्नान करने के बाद पूर्व दिशा की ओर मुंह करके वैठ जाएँ तथा पंखों को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का जप करना शुरू करें। प्रत्येक बार मन्त्रोच्चारण के बाद उन पंखों पर जल छिड़कते जाना चाहिए। इस प्रकार ११००८ वार मंत्र जप करने से पंख अभिमन्त्रित हो जाते हैं। मंत्र निम्न है—

"ओं नमो उलूक राजे, नमो लक्ष्मी वाहने, 'मम' अभिलाषा पूर्ण कुरु 'अमुकस्य' उच्चाटनं कुरु कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं फट् स्वाहा।"

उक्त मंत्र में जहाँ "अमुकस्य" शब्द आया है, वहाँ जिस व्यक्ति का उच्चाटन करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए। मंत्र जप पूर्ण हो जाने पर उन पंखों को वहीं पर जलाकर भस्म कर लें तथा उस भस्म को किसी पात्र में भरकर घर ले आएँ।

फिर अगले शनिवार के दिन उक्त भस्म को गुप्त रूप से

किसी समय उस व्यक्ति के सिर पर छिड़क दें, जिसका उच्चाटन करना हो। उक्त विधि से जिस व्यक्ति पर भस्म छिड़की जाएगी, उसका उच्चाटन हो जाएगा और वह एक माह के भीतर ही अपने स्थान को छोड़कर चला जायेगा।

कृषि सम्बन्धी

खेती अच्छी होगी अथवा खराब इसका ज्ञान निम्नलिखित विधि से प्राप्त किया जा सकता है।

माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की मध्य रात्रि को एक उल्ल पकड़कर ले आएँ। दूसरे दिन उसे देशी शराब में डुबोये हुए मांस के टुकड़े खिलाएँ तथा तीसरे दिन प्रातः उसे अपने खेत में ले जाकर उड़ा दें। अगर उल्लू उड़कर पूर्व दिशा में चला जाय तो खेत में फसल बहुत अच्छी होगी। अगर पश्चिम अथवा उत्तर दिशा कीं ओर जाय तो मध्यम होगी तथा दक्षिण दिशा की ओर जाय तो फसल खराब होगी—यह समझना चाहिए।

बाल दोष निवारक

शिशुओं को भूत-प्रेत, दृष्टि-दोष अथवा जादू-टोना लग गया हो तो उसे दूर करने के लिए निम्न तांत्रिक प्रयोगों को करना चाहिए।

अगर उल्लू के नाखून को ताबीज में भरकर बालक के गले में धारण करा दिया जाय तो उसे भूत प्रेत नहीं लगते।

अगर उल्लू के पंख को तकिये के नीचे रख दिया जाय तो बालक को भयावने स्वप्न दिखलाई नहीं देते और उसका सोते हुए चौंक पड़ना बन्द हो जाता है।

उल्लू की चोंच कौ ताँबे के ताबीज में भरकर के वह ताबीज बालक के गले में पहना दिया जाय तो उस पर किसी जादू टोने का प्रभाव नहीं होता।

अगर उल्लू के नाखून को ताबीज में भर करके बालक के गले में पहना दिया जाय तो डायन, भूत-प्रेत, मसान आदि का भय दूर हो जाता है।

अगर उल्लू की रीढ़ की हड्डी को ताबीज में भरकर उसे बालक के गले में पहना दिया जाय, तो उसका दाँत पीसना, ज्वर एवं अन्य प्रकार के रोग शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

विद्वेषण हेतु

सफल विद्वेषण हेतु अमावस्या अथवा मंगलवार के दिन निम्न वस्तुएँ एकत्रित कर लें—

१. उल्लू के बड़े पंख
२. कौए के बड़े पंख
३. चावल की भूसी (चावल वासमती होने चाहिए)
४. देशी बबूल के काँटे

इन सबको एक जगह मिला लें और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए २००१ आहूतियाँ दें। मन्त्र निम्न है—

"ओं नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।"

इस होम के करने के बाद विद्वेषण हो जाता है।

जेब खाली न रहे

उल्लू के गर्दन की हड्डी तथा कौए के गर्दन की हड्डी—दोनों को ताबीज में बन्द कर, उसको सदैव अपनी जेब में रक्खें तो जेब कभी भी खाली न रहेगी।

परीक्षा में सफलता

उल्लू के अण्डे तथा कौए के अण्डे दोनों को लें, बकरी के दूध में घिसकर गाढ़ा लेप तैयार करें। उस लेप का अपने ललाट पर तिलक लगाकर साक्षातकार देने पहुंचे तो सफलता प्राप्त होगी।

विवाद विजय

उल्लू के सिर के पंख तथा कौए के सिर के पंख दोनों को लें इनको भस्म कर लें। फिर उस भस्म का अपने ललाट पर लगाकर मुकदमे के लिए जाएँ तो विजय प्राप्त होती है।

नौकरी

उल्लू की पूंछ के पंख तथा कौए की पूंछ के पंख दोनों को एक साथ आम की समिधा में जलाकर भस्म करें। इस भस्म को मस्तक पर लगाकर जाएँ, तो नौकरी मिल जाती है।

अधिकारी की कृपा

उल्लू की आँख तथा कौए की बीट दोनों को गंगाजल में पीसकर उप लेप का २१ दिन तक अपने ललाट पर तिलक लगाते रहने से अधिकारी की कृपा प्राप्त होती है।

पदोन्नति

उल्लू के पंजे तथा कौए के पंजे दोनों को एकत्र कर ताबीज में वन्द कर दें। फिर उस ताबीज में लाल रंग का डोरा पिरोकर, उसे अपनी भुजा में धारण कर लें तो नौकरी में पदोन्नति होती है।

चुनाव में विजय

उल्लू के सिर की हड्डी तथा कौए के सिर की हड्डी दोनों को एक साथ धधकती चिता की अग्नि में जलाकर भस्म कर लें। इस भस्म को अपने ललाट पर तिलक लगाते रहने से चुनाव में जीत होती है।

गुप्त विद्या प्राप्ति हेतु

केवल वृहस्पतिवार के दिन मरे हुए उल्लू की आँखें निकाल कर कहीं सुरक्षित रख लें तथा उसके शेष भाग को आधी रात के समय किसी चौराहे पर गाढ़ दें। इसके बाद जब भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन गुरुवार पड़े, उस दिन उल्लू की आँख को शुद्ध सुरमे में घिसकर अंजन तैयार करें।

अंजन तैयार हो जाने पर, दूसरे दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो, कुशा के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा अंजन के पात्र को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का सवा लाख बार जप करें।

"ओं नमो उलुकराजाय, लक्ष्मी वाहनाय कं खं गं घं ङं चं छं जं ञं में गुप्त विद्या प्रदातु ह्रीं फट् स्वाहा।"

उपरोक्त मन्त्र का हर बार उच्चारण करने के बाद अंजन पात्र के ऊपर एक-एक फूंक मारते चले जाएँ फिर अगली पूर्णिमा की प्रातः उक्त अंजन को अपनी आंखों में आंज कर गुप्त विद्या का अध्ययन आरम्भ करें। इस प्रयोग से गुप्त विद्या का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। साधना किसी योग्य गुरु के मार्गदर्शन में ही करें।

द्यूत विजय हेतु

कौए के पंख तथा उल्लू के पंख इन दोनों को लाल कपड़े में लपेटकर अपनी भुजा में बाँधकर जुआ खेलने से जुए में जीत होती है।

दुष्ट ग्रहों की शान्ति

शनैश्चरी अमावस्या को एक उल्लू पकड़कर ले आयें। उल्लू को पकड़ते समय निम्नलिखित मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए।

"ओं नमो पक्षिराजाय नमो लक्ष्मी वाहनाय मम अभिलाषा पूर्ति कुरु कुरु।"

फिर उस उल्लू का एक पंख तथा पूंछ का एक पंख नोंच कर अपने पास रख लें और उल्लू को छोड़ दें। फिर अगले दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो कुशा के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, दोनों पंखों को अपने सामने रखकर धूप, दीप, गंध, चावल पुष्प आदि से उनका पूजन करें तथा निम्नलिखित मन्त्र का १००८ बार जप करें।

"ओं नमः शिवाय, नम कमलासनाय, नमः लक्ष्मी वाहनाय, मनोभिलाषा, पूर्ति करणाय, मम दुष्ट ग्रहं शान्त कुरु कुरु स्वाहा।"

इस विधि से ३१ दिन तक नित्य प्रातः पंखों का पूजन तथा मन्त्र का जप करें। फिर उन दोनों पंखों को किसी लाल रंग के कपड़े में लपेटकर अपनी भुजा में बाँध लें। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में दुष्ट ग्रहों का प्रभाव दूर हो जाता है।

सर्व कार्य सिद्धि हेतु

उल्लू की जीभ, चोंच, नख, पेट, गुदा, आँखें तथा छोटे पंख इन सब वस्तुओं को चन्दन की समिधा में जलाकर भस्म तैयार कर लें। फिर उस भस्म को किसी पात्र में भरकर रख दें।

फिर सोमवती अमावस्या को आधी रात के समय उस भस्म को लेकर किसी तालाव के किनारे पर जाएं और भस्म को अपने दांये हाथ में लेकर उस तालाव के जल में स्नान करें।

स्नानोपरान्त भस्म को तालाव पर रखकर स्वयं उसके सामने सुखासन लगाकर बैठ जाएँ। आपका मुंह उत्तर दिशा की ओर ही रहे। इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का ७००८ बार जप करें तथा प्रत्येक वार मन्त्र पाठ पूरा होने पर भस्म-पात्र पर एक-एक फूंक मारते जावें। इस विधि से पात्र में रक्खी हुई भस्म अभिमन्त्रित बन जायेगी।

'ओं नमो भूतनाथाय, उड्डायेश्वराय, पक्षिराजाय, काकारि कमलासनाय, लक्ष्मी वाहनाय, मम सर्व कार्य सिद्धि कुरू कुरू डां डीं डूं डं डौं डं स्वाहा।'

मन्त्र जप पूरा हो जाने पर भस्म को लेकर घर लौट जाएँ। दूसरे दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो, अपने मस्तक पर भस्म लगाएँ। इस प्रकार ३१ दिन तक नित्य नियम पूर्वक तिलक लगाते रहें। तत्पश्चात जब किसी कार्य को सिद्ध करना हो, उस दिन ललाट पर भस्म का तिलक लगाकर बाहर निकलें तो कार्य स्वयं सिद्ध होते जाएँगे।

शस्त्र स्तम्भन हेतु

किसी उल्लू को ढूंढ़कर ले आयें। फिर उसकी कोख की हड्डी लेकर उसे मैनसिल तथा हरताल के साथ गुलाब जल में

पीसकर लेप तैयार करें। इस लेप को शरीर में लगाकर युद्ध क्षेत्र में जाने पर शस्त्र स्तम्भन होता है।

गर्भ स्थिरता हेतु

किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को आधी रात के समय उल्लू के घोंसले के पास जाकर उसमें बैठे हुए किसी उल्लू के बच्चे की छाती पर से थोड़े से पंख नोंच कर ले आएँ।

अगले दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर, कुशासन पर पूर्वाभिमुख बैठ, पंखों को सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का ७१००८ वार जप करें। हर वार एक मन्त्र का जप पूरा हो जाने पर, उन पर एक फूंक मारते रहें। फिर उन पंखों को तावीज में रखकर मुंह बन्द कर दें तथा उसमें काले रंग का डोरा पिरो दें। जब तावीज तैयार हो जाये तब उसका धूप, दीप, चावल, पुष्प, चन्दन से पूजन करें। तत्पश्चात वह तावीज गर्भवती की भुजा में बाँध दें। इसके प्रभाव से प्रसवकाल से पूर्व उसके गिरने की सम्भावना नहीं रहेगी।

भूत-प्रेत निवारक

उल्लू को पकड़कर एक पंख निकाल लें। फिर उस पंख को पानी में धोकर तथा स्वयं पवित्र होकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके, सिद्धासन की मुद्रा में बैठें और पंख को सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का ११००८ वार जप करें—

"ओं नमः रुद्राय, नमः कालिकाय, नमः चंचलाय नमः कामाक्ष्यै, नमः पक्षिराजाय, नमः लक्ष्मी वाहनाय, भूत प्रेतादीनां निवारणं कुरू कुरू ठं ठं ठं स्वाहा।"

हर बार मन्त्र का जप पूरा होने पर पंख के ऊपर एक फंक

मारते जाना चाहिए। जब जप पूरा हो जाय, तब पंख को किसी लकड़ी की पेटी के भीतर रेशमी वस्त्र में लपेटकर रख दें। जिसको भूत-प्रेत लगा हो, उसे पंख द्वारा ५४ बार झारा देने तथा झारा देते समय मंत्र का उच्चारण करते रहने से भूत-प्रेत आदि दूर भाग जाते हैं।

कलह निवारक

अगर किसी घर में कलह ने अपना घर वना लिया हो और वह किसी भी प्रकार शान्त न हो रहा हो, तो निम्नलिखित प्रयोग करें।

शुक्ल पक्ष की सप्तमी को उल्लू को पकड़कर उसे पिंजड़े में बन्द कर दें। दो दिन तक उसे दाना-पानी दें। भोजन में माँस का होना आवश्यक है।

एकादशी तिथि को आधी रात के समय उल्लू के पिंजड़े को लेकर किसी नदी के किनारे जाएँ। अगर श्मशान हो तो अच्छा रहेगा। नदी के जल में स्वयं तो स्नान करें ही, उल्लू के पिंजड़े को भी नदी के जल में डुवकी लगवा दें इसके बाद पिंजड़े के सामने उत्तर दिशा की ओर मुंह करके सिद्धासन की मुद्रा में बैठ जाये तथा निम्नलिखित मन्त्र का ११००८ बार जप करें। प्रत्येक वार मन्त्रोच्चारण के बाद उल्लू के पिंजड़े पर एक-एक फूंक मारते जाये। मन्त्र इस प्रकार है—

"ओं नमः शिवाय, नमः शंभवाय, नमः कालकूटाय, नमः जगत्पते, नमः उमापतये नमः वीर-भद्राय, नमः रुद्राय, नमः कलह नाशनाय, नमः उलूक-राजाय मम गृहे कलहं शान्तं कुरू कुरू ठः ठः स्वाहा।"

जप पूरा हो जाने पर, उल्लू की पूंछ से उतने पंख नोंच लें,

जितनी संख्या में घर में स्त्री-पुरुष और बच्चे रहते हों। पंख नोंचने के बाद उल्लू को उड़ा देना आवश्यक है। इसके बाद उन पंखों को घर के प्रत्येक सदस्य की भुजा पर एक-एक पंख लाल रंग के वस्त्र में लपेटकर बाँध देना चाहिये। इन पंखों के बांधे जाने पर परिवार के सभी सदस्य आपस में लड़ना झगड़ना स्वयं बन्द कर देंगे।

गृह निर्माण हेतु

द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी अथवा पूर्णिमा तिथि में से किसी एक दिन एक उल्लू को पकड़ लायें तथा पूजन करें। पूजन करते समय स्वयं पूर्व दिशा की ओर मुंह करके, कुशा के आसन पर बैठना चाहिये तथा उल्लू को अपने सामने बैठाये रखना चाहिये। इसके बाद मन्त्र का ७००८ बार जप करना चाहिये। मन्त्र इस प्रकार है—

'ओं नमः मनोभिलाषा पूरणाय पक्षिराजाय काकारि लक्ष्मी वाहनाय डं डं डं डं डं, ठं ठं ठं ठं ठं ठक् स्वाहा।

हर बार मन्त्र पढ़ने के बाद उल्लू के शरीर पर एक-एक फूंक मारते जाना चाहिये।

अगर आहार को तुरन्त ग्रहण कर ले तो यह समझना चाहिये कि मकान एक वर्ष के भीतर बन जायेगा। अगर कुछ देर से ग्रहण करे तो समझना चाहिये कि मकान बनने में पाँच वर्ष तक का विलम्ब हो सकता है। अगर आहार को एकदम अस्वीकार कर दे तो समझना चाहिये कि मकान बनने की कोई सम्भावना नहीं है।

इसके पश्चात् उल्लू को आहार के लिए मांस देना चाहिये तथा उसमें देशी शराब भी मिला देनी चाहिये। आहार को

उल्लू के सामने रखकर स्वयं उसके सामने से हटकर किसी ओट में खड़े होकर देखना चाहिये कि यह उस आहार को किस प्रकार ग्रहण करता है। अगर आहार को तुरन्त ग्रहण कर ले तो उसे छोड़ देना चाहिए।

खोए हुए मनुष्य हेतु

अगर कोई खो गया हो अथवा घर से रूठकर चला गया हो तो उसे ढूंढने के लिए जाते समय निम्नलिखित प्रयोग करने से उसका पता अवश्य चल जाता है। शुक्ल पक्ष के वृहस्पतिवार के दिन उल्लू को पकड़ कर उसे किसी बहती नदी में स्नान करायें, इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का ११११ बार उच्चारण करते हुए उसका धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन करें—

'ओं नमो पक्षिराज उलूकाय, नमो लक्ष्मी वाहनाय 'अमुकस्य' अन्वेषण कार्ये 'मम' साहाटयं भव क्रां क्रीं क्रूं स्वाहा।'

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आता है, वहाँ जिस व्यक्ति का पता लगाना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये। जप पूरा हो जाने पर उल्लू के दोनों डैनों से एक-एक पंख नोंचकर अपने पास रख लें तथा उल्लू को छोड़ आयें। फिर दोनों पंखों को लाल रंग के कपड़े के टुकड़ों में अलग-अलग लपेटकर उन्हें अपनी भुजाओं में बाँध लें, तत्पश्चात खोये हुए अथवा घर से रूठकर चले गये व्यक्ति की खोज में निकलें तो अधिक से अधिक ३१ दिन के भीतर उसका पता चल जाता है।

प्रेमिका वशीकरण हेतु

शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को उल्लू पकड़कर उसके ललाट के ऊपर वाले भाग से नौ पंख उखाड़ लें। फिर उसे

छोड़ दें, जहाँ से कि पकड़ा था। इसके बाद पूर्णिमा को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान में जाकर, ऊनी आसन बिछाकर उस पर सिद्धासन लगाकर, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायें। पंखों को अपने सामने रख लें तथा निम्न-लिखित मन्त्र का एक लाख जाप करें।

ओं नमो लक्ष्मी वाहन काकारि उलूक पक्ष्यै मम मनोभि-लाषा पूर्ण कुरु कुरु श्रीं श्रीं श्रीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं क्लीं क्लीं फट् स्वाहा।

प्रत्येक बार मन्त्र का जप करने के बाद पंखों पर फूंक मारते जायें। जप पूरा हो जाने पर उन पंखों को साथ लेकर लौट आयें। प्रयोग के समय जिसको वशीभूत करना हो उसके सिर-हाने एक पंख रख दें तो वह वशीभुत हो जायेगा।

—:०:—

चमत्कारी दुर्गा सप्तशती मन्त्र साधना

मन्त्र चाहे कोई भी हो प्रत्येक मन्त्र की तीन भावनाएँ होंती हैं, और उन तीनों भावनाओं को सिद्ध करने के बाद ही मन्त्र का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव होने लगता है। केवल साधक के मुंह से ही मंत्र निकालने से मंत्र प्रभावी नहीं हो जाता, मंत्र तो उसके रोम-रोम से निःसत होना चाहिए, इसलिए तन्त्र ग्रन्थों ने बतलाया है कि साधक को अनुष्ठान करने से पूर्व मानसिक दृष्टि से शुद्ध होना अति आवश्यक है, बाहरी रूप में

तो स्नान आदि करके शुद्ध और पवित्र वस्त्र धारण करना है, भीतरी शुद्धि के लिए पंचगव्य गऊ मूत्र, गोबर, गंगाजल, दही, शुद्ध घी लेना आवश्यक है। मंत्र जप करने से पूर्व तीन बार पंचगव्य लेना चाहिये, इससे शरीर का भीतरी पक्ष निर्मल हो जाता है और शरीर मन्त्र-सिद्धं करने के योग्य बन जाता है। मन्त्र सिद्ध करने की दूसरी विधि अंगन्यास, करन्यास है। प्रत्येक मन्त्र का अंगन्यास और करन्यास अलग-अलग होता है, इसके माध्यम से साधक मन्त्र के प्रत्येक रूप को अपने शरीर के सभी अंगों में स्थापित करता है और ऐसा करने पर साधक मन्त्रमय हो जाता है। इसी के प्रभाव से साधक को वांछित सिद्धि शीघ्र प्राप्त हो जाती है।

मंत्र केवल उच्चारण मात्र नहीं है, अपितु मंत्र ध्वनि प्रधान है, जब तक मंत्र की ध्वनि, उसके आरोह-अवरोह और मंत्र के उतार-चढ़ाव को हम नहीं समझेंगे, तब तक मन्त्र का उच्चारण ठीक प्रकार से संभव ही नहीं है। क्योंकि पूरा का पूरा मन्त्र एक ही ध्वनि में उच्चारित नहीं होता। मन्त्र के प्रत्येक शब्द का अलग अस्तित्व है। इस प्रकार मंत्र को ठीक प्रकार से उच्चारण करने के लिए यह आवश्यक है कि मंत्र की ध्वनि को भली प्रकार से सीखें। तब ही मंत्र की साधना शुरू करनी चाहिये।

एक तांत्रिक होने के नाते मैंने अपने जीवन के लगभग आठ वर्ष साधना में व्यतीत कर दिए थे फिर भी सफलता नहीं मिली थी। एक प्रकार से मैं टूट गया था।

आज मैं पहली बार पाठकों को मन्त्र विद्या उनके मूल रूप में भेंट कर रहा हूँ।

माँ जगदम्बा संसार की अधिष्ठात्री देवी है, जिसके पूजन

से जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। नवरात्रि का पर्व तो विशेष रूप से जगदम्बा का ही पर्व है। इन दिनों में जो साधक अथवा गृहस्थी निष्काम भाव से साधना करता है, उसे अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

दुर्गा सप्तशती भगवती दुर्गा का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है इसका एक-एक श्लोक एक-एक मंत्र के समान है।

सबसे पहले प्रस्तुत हैं—दुर्गा सप्तशती से सम्बन्धित साधकों के लिए कुछ विशेष बातें—

दुर्गा सप्तशती का पाठ साधक पंडित और सामान्य वर्ग करता आया है, परन्तु उन्हें कुछ विशेष तथ्यों का भली प्रकार से ज्ञान न होने के कारण वह समुचित लाभ के स्थान पर हानि उठा लेते हैं।

नीचे उन तथ्यों को स्पष्ट किया जा रहा है।

दुर्गा सप्तशती के पाठ में अर्गला, कीलक और कवच का पाठ अवश्य करना चाहिये, क्योंकि बिना इनका पाठ किये मंत्र जप या दुर्गा सप्तशती से कोई लाभ नहीं मिलता है।

एक दिन में दुर्गा सप्तशती के अनेक पाठ कर लें तो कवच अर्गला और कीलक का एक ही बार पाठ करना चाहिये।

दुर्गा सप्तशती के पाठ के अन्त में रहस्यमय का पाठ अवश्य करना चाहिये।

पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व और पाठ के अन्त में नवार्ण मंत्र का जप १०८ बार करना अनिवार्य है। अगर दिन में एक से अधिक बार पाठ करना हो तब भी प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ और अन्त में १०८ बार नवार्ण मंत्र का जप अनिवार्य है।

दुर्गा पाठ के प्रारम्भ में रात्रि सूक्त और अन्त में देवी सूक्त का पाठ आवश्यक है।

दुर्गा पाठ करते समय किसी भी अध्याय के मध्य में विराम नहीं करना चाहिये; और न आसन से उठना चाहिए। अगर ऐसा आवश्यक हो गया हो तो पुनः उस अध्याय का प्रारम्भ से पाठ करना चाहिये।

पाठ में पहले अध्याय, चौथे अध्याय, दसवें अध्याय और तेरहवें अध्याय के अन्त में ही पाठ करने वाला चाहे तो कुछ समय के लिये आसन छोड़कर इधर-उधर जा सकता है। अगर लघु शंका से निवृत हुआ हो तो हाथ-पैर धोकर बैठें और अगर महा शंका से निवृत हुआ हो तो साधक को पुनः स्नान कर बैठना चाहिये।

पाठ प्रारम्भ करते समय दुर्गा का पूजन कर ग्रन्थ को प्रणाम कर पाठ प्रारम्भ करना चाहिये। इसी प्रकार पाठ की समाप्ति में भी ग्रन्थ को प्रणाम करना चाहिये।

मानसिक पाठ करना वर्जित है।

शतचंडी में नवरात्रि के दिनों में ही १०१ पाठ पूरे कर लेने चाहिये।

शतचंडी अथवा सहस्र चंडी पाठ होने पर अन्तिम दिन ७०० श्लोकों को पढ़कर श्लोक के साथ आहुति देनी चाहिये अथवा दशांश हवन करना चाहिये।

नवार्ण मन्त्र का केवल शुद्ध घी से हवन करना चाहिये। इस हवन में केवल तिल, यव, शुद्ध घी, शक्कर और अन्य हवन सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है। सामग्री की शुद्धता अनिवार्य शर्त है।

दरिद्रता विनाशक साधना

यह साधना दीपावली के दिन ही सम्पन्न करने का विधान है, इस साधना में निम्न सामग्री चाहिए—गंगाजल, अगरबत्ती, घी का दीपक, धूप, केसर, पुष्प। मन्त्र निम्न है—

ओं श्री तालिके दरिद्र विनाशिन्ये हुं फट्।

सर्वप्रथम साधक पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए, सामने किसी ताम्र पात्र में श्रीफल रख दे और उस पर केसर से अपना नाम लिख दे फिर उपर्युक्त मन्त्र की सात मालाएँ फेरें। इसके लिए रक्त वर्ण मूंगे की माला का प्रयोग किया जाना चाहिए।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाये तब साधक स्वयं उस श्रीफल को दक्षिणा के साथ किसी गरीब भिखारी को दान में दे दें। इस प्रकार दरिद्रता दान में चली जाती है, और साधक के घर में किसी प्रकार की दरिद्रता या अभाव का वास नहीं रहता है।

गृहस्थ सुख साधना

गृहस्थी में अगर किसी प्रकार की कोई बाधा अथवा परेशानी हो तो इस साधना से निश्चय ही दूर की जा सकती है।

इसमें मंगल यन्त्र, दीपक, अगरबत्ती, धूप, केसर, रक्त पुष्प, इत्र। मन्त्र इस प्रकार है—ओं श्रीं मम गृहे तुष्टिं भव कंकावत्ये शिरो भव फट् स्वाहा।

साधक आसन पर बैठ जाय और यह चिन्तन करे कि मैं यह साधना गृहस्थ की बाधाओं को दूर करने के लिए कर रहा हूँ, इसके बाद रक्त वर्ण मूंगे की माला से उपर्युक्त मंत्र की पाँच मालाएँ फेरें। जब जप पूरा हो जाय तब मंगल यन्त्र को अपने

घर में रख दें, जब तक वह यन्त्र घर में रहेगा, तब तक उस घर में किसी प्रकार की परेशानियाँ अथवा बाधाएँ नहीं आयेंगी।

चमत्कारी सर्वोन्नति साधना

यह साधना कर्जा उतारने, अचानक धन प्राप्त करने, व्यापार-वृद्धि, नौकरी, पदोन्नति, आर्थिक उन्नति, रोग-मुक्ति आदि सभी कार्यों में लाभदायक हैं। सामग्री इस प्रकार है।

गंगाजल का पात्र, अगरबत्ती, शुद्ध घी का दीपक, धूप, कुंकुम फूल, केसर।

मन्त्र—ओं महायक्षाय मम सर्वोन्नति सिद्धि देहि दापय स्वाहा।

साधक को चाहिए कि वह उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठ जाय और सामने दीपक, अगरबत्ती जला ले, फिर रुद्राक्ष की माला से उपर्युक्त मन्त्र की सात मालाएँ फेरे।

ऐसा करने पर साधक के जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति होती है।

पीर सिद्धि

गुरुवार की रात्रि में जमीन को धोकर सवा सेर तन्दुल रखो उन तन्दुलों पर एक दीपक आटे का बनाकर जलाओ इसके बाद उस दीपक को सुगन्धित पुष्पों की माला पहनाओ, दीपक के आगे पाँच लौंग इलायची, मजमूआ इत्र की फुरेरी, देशी पान, शुद्ध देशी घी का हलुवा, मिठाई, पाँच मेवा रखकर लोहबान की धूनी दो फिर किसी स्त्री को पश्चिम की ओर मुख करा के दीपक के समक्ष बाल खुलवाकर बैठा लें फिर उसके सिर पर

पाँच लोंग रख दो तो मुहम्मदा पीर की सवारी आ जाएगी। सवारी के आते ही सुगन्धित माला वह मजमूआ इत्र, इलायची, पाँच लवंग, पान वगैरा सवारी को दे देवें। मंत्र इस प्रकार है। ओं नमो विस्मयोहिरंहमान रहीम गजनी से चला मुहम्दा पीर, चला चला सवा सेर का तोसा खाय कौसाका घाव जाम सफेद घोड़ा सफेद लगाम उस पर चढ़े मुहम्मदा पीर नौसे पलटन आगे चले नौसे पलटन पीछे चले चल चल रे मुहम्मदा पीर, तेरे समान नहीं कोई वीर हमारे शत्रु को पकड़ता लाया। हाड़ हाड़ चाम नख सिख राम राम से लाव लाल रे ताइयाँ सिलार जिंद पीर मारता पीटता उचाड़ता हथकड़ी पाँव में बेड़ी गले में तौक उल्टी मुहम्मद चढ़ाय बुख बुलाय शीश आव मुहम्मदा पीर, जल्द आव सवारी गेरी खाली पड़ी है। जल्द आव सवारी पर सवारी कर खेल खुश हो।

अण्डवृद्धि के लिए

ओं नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द्र कवूत ओसाई करहू राघ विनि कबूत पवन पूत हनुमंत धाउ हर हर राव कूट मिरावन श्रावइ अण्ड खेतहि श्रावइ अण्ड अण्ड विहण्ड श्रावइ वाजं गर्भहि श्रावइ स्त्री कीलहि श्रवइ शाप हर हर जवरि हर हर हर।

अण्डकोष को धीरे धीरे हाथ से मलते रहिये और मन्त्र उच्चारण करते रहना चाहिये अथवा रोगी को अभिमंत्रित करके गंगाजल पिलाना चाहिए।

नजर टोना टोटका दूर करने का मंत्र

ओं नमो वज्र का कोठा वज्र का ताला वज्र में बन्ध्या दस्ते द्वारा तहाँ वज्र का लग्या किवाड़। वज्र में चौखट वज्र में कील

जहां से आया तहाँ ही जाय जिसने भेजा वाको खाय हमको फेर न सूरत दिखाये हाथ को नाक को सिर को पीठ को कमर को छाती को जो जोखी पहुँचावे तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा फुरे शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को ३१ दिन तक प्रतिदिन २०८ मन्त्र जप धूप दीप नैवेद्यादि सहित एकाग्रचित्त से करें इसके पश्चात प्रयोग में लावें।

सात कुंए का जल लाकर इस मन्त्र से इक्कीस बार अभि-मंत्रित करें फिर रोगी को स्नान करावे तो जादू टोने का प्रभाव दूर हो जाता है।

कुत्ते के काटे का मन्त्र

'ओं कामरू देश कामाख्या देवी, जहाँ बसैं इस्माईल योगी। इस्माइल जोगी का झावरा कुत्ता सोना डाढ़ रूप का कुंडा। बन्दर नीचे रीछ बजावे सीता वैठी औषध बाँटे कूकुर का विष दूरहिं भागे। शब्द साँचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए कुत्ते ने जहाँ पर काटा हो वहाँ पर झाड़े तो विष उतर जाता है।

सर्प भगाने का मन्त्र

सर्पापसर्पं भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष।

जनमेजस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर॥ हुं फट्॥

इस मन्त्र से २११ बार तिल घी की आहुति खैर की लकड़ी से करना चाहिये, इसके प्रभाव से सर्प भय नहीं रहता।

स्तम्भन मन्त्र

ओं वं वं हं हं हं घ्री ठः ठः।

इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद ही इसका प्रयोग करें। निगोही के वीज को ३१ वार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति पर फेंका जावे वह निश्चय ही स्तम्भित हो जाता है। इसका प्रयोग रविवार या मंगलवार को ही किया जाए तो इसका प्रभाव अधिक दिखलाई देता है।

वशीकरण मन्त्र

ओं नमो सर्व जीव वशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा।

पहले से पहले सिद्धि के लिए मन्त्र का सवा लाख जप करना पड़ता है। तत्पश्चात् पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ लाकर उसे ३१ वार अभिमन्त्रित करें और अपनी दायीं भुजा में वाँध लें। इस प्रकार वशीकरण होता है।

पुष्प वशीकरण

फूल फूले फूलों की डाल वो फूल वीने लोना चमारिन एक फूल हँसे एक फूल बैहया नारसिंह के बसे जो कोइ ले फूल की बास वो आवे हमारे पास डगर कुआँ पनघट बैठी हो उठा ला सोवत हो जगा ला ठाढ़ हो चला ला, मोह के मेरे पास न लाये तो सच्ची मोहनी न कहाये दुहाई लोना चमारिन की आन वीर मसान की।

उपरोक्त मन्त्र से पुष्प को अभिमन्त्रित कर जिस किसी स्त्री को सुंघा दिया जाये वह पीड़ित हो जाएगी। परन्तु यह सव करने के वाद लोना चमारिन को एक नारियल और पाँच छुहारे भेंट दें।

□□

दो शब्द.........

यूं तो यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विज्ञान में अनेक रहस्य दिये हैं, पर मन्त्रों का संसार तो एकदम अनूठा है। मंत्र विज्ञान में मैली साधना का विधान प्रचुरता से मिलता है, इसके अतिरिक्त शत्रुमारण, अपहरण, रोगादि उत्पन्न कर्म, वशीकरण, उच्चाटन सम्मोहन, गर्भपात आदि की मैली क्रियाएँ भी सम्भव हैं, पर यह सब तामसिक कार्य और साधनाएँ हैं। अहितकारी ऐसे तमाम मंत्र-तंत्र-यंत्र दृष्टिगोचर हुए पर उनमें से अधिकांश को नहीं दिया गया। विद्वेष को मानव का सबसे बड़ा अपराध मानता हूँ। मैंने जब तंत्र के क्षेत्र में पहला कदम रखा था तब की गयी प्रतिज्ञा का स्मरण आज भी है मैली साधना नहीं, मैला काम नहीं। इससे मुझे बड़ी शान्ति अनुभव होती है। तन्त्र सबके कल्याण और सुख के लिए है, मारण, तारण, चारण, हारण के लिए बिल्कुल नहीं है। इन सबसे दूर ही रहता हूँ। अतएव आपने इस पुस्तक में देखा होगा केवल कल्याणकारी तन्त्रों-मन्त्रों का ही चयन किया है।

यह बात सर्वथा स्पष्ट रूप से समझ लें कि बिना श्रद्धा, विश्वास और आस्था के कोई कार्य नहीं होता है। इन मंत्रों की साधना करने से पहले यह गुण होना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। बिना इसके सफलता सम्भव नहीं है।

आस्था, विश्वास, लगन, निष्ठा, पवित्रता और एकाग्रता के साथ किया गया मंत्र जाप अवश्य फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त योग्य मार्ग दर्शक की खोज तो आपको करनी ही होगी। इस क्षेत्र में आप न केवल आगे बढ़ें वरन् सफल भी हों, मेरी यही कामना है।

तांत्रिक बहल
तंत्र सबके लिए मिशन
डी-४, राधापुरी, कृष्णनगर,
(जमुनापार) देहली-५१

दूरभाष : २२२६३९३

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
हरिद्वार